शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बडी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवत उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक-कम्पनियों मे काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्राय समकालीन यह कवि यही आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य मे अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्तप्राय हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे है, कविताएं अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक है—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु.खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड़ (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय: उसके सभी नाटक प्रसिद्ध है।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भॉति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नही है वह उन्नत भाषाओं मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

'निष्फल प्रेम' नामक रचना को शेक्सपियर ने कामेडी–सुखांत नाटक के रूप मे लिखा था। इसका कारण था कि इसमें व्यंग्य और हास्य की प्रधानता है, किंतु वैसे यह सुखांत नाटक नही है। यह तो गीतात्मक फन्तासिया माना गया है। इस नाटक का रचनाकाल संदेह से पूर्ण है। १५८८ से १५९६ के बीच यह किसी समय लिखा गया किंतु अपनी शैली के दृष्टिकोण के आधार पर यह शेक्सपियर की एक प्रारंभिक रचना है। इसमे रीतिकाव्य की भाँति शब्द-चमत्कार इतना अधिक है कि भावपक्ष के दृष्टि-कोण से यह एक बहुत ही साधारण नाटक है। इसमे मजाक से अधिक व्यंग्य है और अंत मे हमें एक प्रकार का नीतिपरक परि-णाम प्राप्त होता है, किंतु पात्र कोई भी हाथ नही आता। जिस उदात्त भावगरिमा का नाम शेक्सपियर है, वह तो यहाँ नही है, किंतु एक बात अवश्य यहाँ भी है कि स्त्री और पुरुष के पारस्परिक संबंधो की समानता पर यहाँ लेखक ने जोर दिया है। इसलिए यह नाटक अपना महत्त्व रखता है। शेक्सपियर ने कल्पना-लोक को व्यापक प्रसार देने की चेष्टा की है, किंतु वह उसमे सफल नही हो सका है, क्योंकि उसने जिस शैली को पकडा है, वह बहुत पैनी नही है, न गहरी। एक स्वप्न मे उसने जो सौंदर्य दिया है, वह यहाँ नही है, न है यहाँ वह सफल प्रकृति-चित्रण ही, जो हमें 'जैसा तुम चाहो' मे मिल जाता है।

यहाँ कुछ ऐसी बाते है जिनका अर्थ हमारे समाज मे अपना कोई महत्त्व नही रखता, जैसे हमारे यहाँ तो भारतीय परंपरा मे 'सींग' का महत्त्व नही, परंतु यूरोप मे व्यभिचारिणी स्त्री के सिर पर सींग होना एक प्रचलित मजाक माना जाता था। और इस

नाटक मे इस बात का आवश्यकता से अधिक उल्लेख है। पाश्चात्य सगीत के क्षेत्र से भी भारतीय पाठक का परिचय नही है। इसलिए ही जहाँ तक वर्णन का विषय है, वह बहुत उत्कृष्ट कोटि का नही हुआ है। फिर भी मध्यकाल को देखते हुए कवि ने समाज के उन लोगो पर गहरी चोट की है, जो विलास मे डूबे रहकर भी विद्वत्ता का ढोग करते हुए दार्शनिक बनते थे। पाडित्य पर तो शेक्सपियर ने बहुत ही कडा हमला किया है, और उनकी शास्त्रीयता का खोखलापन दिखाया है। नारी के प्रति शेक्सपियर की दृष्टि यहाँ काफी संतुलित है, और उसने स्त्री के आत्मसम्मान की रक्षा की है। हम कह सकते है कि शेक्सपियर ने अपनी रचनाओ मे अपने को अपने पात्रो के माध्यम से ही व्यक्त किया है।

किंतु जब शेक्सपियर ने यह नाटक लिखा था तब चातुर्य का प्राबल्य था। इस दृष्टि से देखा जाय कि शेक्सपियर 'यूनि-वर्सिटी विट' नही था, तब तो भाषा पर उसके अगाध पाडित्य को देखकर आश्चर्य होता है, परतु वह जितना महान् कलाकार था, उसको देखते हुए खेद होता है कि परपरा मे बँधकर उसने भले ही समसामयिक प्रतिद्वन्द्वियो या पुरानी रुचि के दर्शको को अपने से प्रभावित कर लिया हो, परंतु विश्व-साहित्य की दृष्टि से वह यहा आ नही सका है।

गीतो मे भी कोमल भावना और सवेदना के स्थान पर बाह्य चित्रण अधिक है और हिंदी मे उनका हमारी भाषा के भीतर नियोजन ठीक नही बैठता। फिर भी हमने उसकी आत्मा को प्रतिबिंबित करने की चेष्टा की है।

इस नाटक मे दरबारीपन बहुत है। तत्कालीन घटनाओ के

प्रति इसमे व्यग्य भी है, क्योकि जिन चार व्यक्तियो का इसमे चित्रण है, वैसे ही व्यक्ति तब उल्लेखनीय भी थे। नेवैरे, वैरोने, ड्यूमेन, लौंगेविले के रूप मे नेवैरे का हैनरी, मार्शल डिविरौन, डकडि लौंग्यूविले और डक ड्यू मेने ही सभवत वर्णित है, क्योकि वे लोग उस समय यश प्राप्त थे। इसी प्रकार अन्य पात्र भी है।

सभवतः यह शेक्सपियर की एक मौलिक रचना है, क्योंकि इसका कोई स्रोत नही मिला है।

इस नाटक का अनुवाद करना किसी हिंदी के रीतिकालीन कवि की रचना का अनुवाद करने से भी अधिक कठिन कार्य प्रमाणित हुआ। इसमे मानवीय सार्वभौम भावपक्ष तो कम है, उल्टे लैटिन और अगरेजी का शब्द-चातुर्य ही नही, स्थानीय रीतिरिवाज और सदर्भ भी इतने सश्लिष्ट है कि अनुवाद मे हिंदी के पाठक को रस आना कठिन है। हमने फिर भी बड़े ही श्रम से उसका निर्वाह करने की चेष्टा की है, और जहाँ असंभव-सा लगा है, भावार्थ करके नीचे मूल को समझाया है। कभी-कभी मुझे लगा है कि मैने अनुवाद तो कर दिया है, किंतु यदि यह नाटक खेला जायगा तो उस समय फुटनोट् के अभाव मे भारतीय दर्शक इसे कैसे समझ सकेगा ? किंतु ऐसे स्थल बहुत थोडे है और यदि अभिनय के समय हटा दिये जायँ तो हानि नही होगी क्योकि उन उक्ति-चातुर्य-प्रदर्शन के भागो मे कथात्मकता नही है। उक्ति-चातुर्य मे कवि ने अश्लीलता को भी नही छोडा है। जहा तक बन सका है मैने उसे बुझा देने की ही चेष्टा की है। शेक्सपियर का वास्तविक परिचय पाने के लिए अन्य नाटको के साथ इस रचना का भी अध्ययन करना साहित्य के विद्यार्थी के लिए अत्यत ही आवश्यक है।

—रांगेय राघव

पात्र-परिचय

फर्डिनेंड	नेवैरे का सम्राट्
बैरोने लौंगेविले ड्यूमेन	सम्राट् की सेवा मे रहने वाले लॉर्ड
बौयेट मार्केडे	फ्रास की राजकुमारी की सेवा मे रहने वाले लॉर्ड
अन्य लॉर्ड	
आर्मेडो	एक झूठा दम्भी
नैथेनियल	एक क्यूरेट (एक किस्म का पादरी)
होलोफर्नीज	एक ढोंगी ज्ञानी
सिपाही	डल नामक एक सिपाही
विदूषक	: कौस्टर्ड नामक विदूषक
लड़का	आर्मेडो का मौथ नामक परिचारक
एक वनप्रान्त में रहने वाला व्यक्ति	
फ्रांस की राजकुमारी	
रोज़ालिन मेरिया कैथराइन	राजकुमारी की परिचारिकाएँ
जैक्वेनिटा	एक ग्रामीण लडकी।

पहला अंक

दृश्य १

स्थान : नेवैरे । सम्राट् का उद्यान ।

[नेवैरे के सम्राट् फर्डिनेंड, बैरोने, लौगेविले तथा ड्यूमेन का प्रवेश]

सम्राट् : वह कीर्ति, जिसको प्राप्त करने के लिए मनुष्य अपने-नेपअ जीवन में प्रयत्न करते है, हमारी पीतल की कब्रो के ऊपर सदा के लिए अकित हो जाएगी और जब यह सर्वभक्षी समय अपने ईर्ष्यापूर्ण आवेश मे आकर हमारे वर्तमान जीवन के कृत्यों को निगल जाएगा तब मृत्यु के इस उपेक्षापूर्ण अन्त के पश्चात् भी हमारा गौरव जीवित रहेगा, वह अपूर्व सम्मान हमें प्राप्त होगा जो समय रूपी इस पैने हँसिये की तेज धार को भी भोटा कर देगा और फिर हम इस ससार मे अमर बनकर रहेगे ।

इसीलिए, वीर विजेताओ ! तुम सचमुच इसी गौरव के अधिकारी हो । अब अपनी समस्त वासनाओ और इच्छाओ के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रस्तुत हो जाओ । हमारा अभी किया हुआ निश्चय पूरी दृढता के साथ कार्य-रूप मे परिणत होगा और इस तरह नेवैरे सारे ससार का आश्चर्य बनकर रहेगा । हमारा राजदरबार एक प्रकार की शिक्षण-संस्था बनकर रहेगा जहाँ जीवन की विविध समस्याओ के ऊपर गहन चिन्तन होगा ।

बैरोने, लौगेविले और ड्यूमेन ! तुम तीनों ने तो तीन वर्ष तक मेरे साथ रहने की शपथ खा ली है और मेरे साथी बनकर उन सभी निर्देशो के पालन करने का दृढ निश्चय कर लिया है जो

इस आज्ञा-पत्र में लिखे हुए है। तुम्हारी शपथ तो हो चुकी, अब अपने हस्ताक्षर इस पर कर दो जिससे जो लेशमात्र भी इनमे से किसी निर्देश का उल्लंघन करे, वह अपने ही हाथ से अपने सम्मान को आघात पहुँचाये। जैसी दृढता तुमने शपथ ग्रहण करते समय दिखाई थी, यदि उसको कार्य-रूप में परिणत करने की वैसी ही दृढता तुम्हारे अन्दर है तो फिर अपने हस्ताक्षर कर दो और पूरे निश्चय के साथ अपने वचन का पालन भी करो।

लौंगेविले : मैने दृढ़ निश्चय कर लिया है। यह तो केवल तीन वर्ष का ही सयम है। यद्यपि शरीर को कष्ट मिलेगा लेकिन चित्त को तो आनन्द प्राप्त होगा। मोटे पेट वालों के मस्तिष्क पतले होते है और स्वादिष्ट और सुखदायी सामग्रियाँ शरीर को तो पुष्ट कर देती है लेकिन बुद्धि को क्षीण करती है।

ड्यूमेन . मेरे प्रिय स्वामी ! मैने इस सयमपूर्ण जीवन को स्वीकार कर लिया है। जीवन की समस्त वासनाएँ और इस संसार के निम्न कोटि के सभी सुख मै उन पतित प्राणियों को देता हूँ जो पूरी तरह इनके दास बन चुके है। प्रेम, धन की लालसा, बाह्य दिखावा, वासना की तडपन—इन सभी का परित्याग करके मै अपने चित्त को दर्शन मे केन्द्रित कर लूँगा।

बैरोने : इनकी प्रतिज्ञा के पश्चात् मै केवल इतना ही कह सकता हूँ स्वामी ! कि यहाँ रहकर तीन वर्ष तक आपके साथ अध्ययन करने की शपथ तो मै पहले ही ले चुका हूँ लेकिन इसके अलावा कुछ और कठोर निर्देश है जैसे उस समय के बीच किसी स्त्री को न देखना, जो मुझे आशा है, उस आज्ञा-पत्र में नही लिखा है; फिर एक हफ्ते मे एक दिन पूरी तरह उपवास करना और बाकी के छह दिन भी प्रतिदिन एक समय भोजन करना, जिसके

बारे मे भी मुझे आशा है, यह सब कुछ उसमे नही लिखा है। इसके बाद रात मे सिर्फ तीन घटे सोना और दिन मे कभी भी झपकी तक न लेना, जबकि मै रात-भर सोने का तो आदी हूँ ही, इसके साथ आधे दिन को भी रात के रूप मे परिणत कर लेता हूँ। मेरे विचार से यह सब कुछ उस आज्ञा-पत्र मे नही लिखा है। ओ, ये सभी बेकार के से काम है और फिर स्त्रियों को न देखना, पढना, उपवास करना, न सोना—ये सभी इतने कठोर निर्देश है कि इनका पालन भी नही किया जा सकता।

सम्राट् अच्छा तो इनसे आगे तुम्हारी भी शपथ हो चुकी।

बैरोने लेकिन मेरे स्वामी ! मै इसको अस्वीकार करता हूँ। मैने तो आपके साथ तीन वर्ष तक आपके राज-दरबार मे ठहरकर अध्ययन करने की शपथ ग्रहण की थी।

लौगेविले उसकी अन्य बातो की शपथ तुम ले चुके थे बैरोने !

बैरोने : हाँ हाँ, ठीक है, वह तो मैने मजाक मे किया था। कृपया यह तो बताइए कि इस अध्ययन का उद्देश्य क्या है ?

सम्राट् उस ज्ञान को प्राप्त करना जिसे इसके बिना हम प्राप्त नही कर सकते।

बैरोने आपका तात्पर्य उस अज्ञात वस्तु के ज्ञान से है जो साधारण चेतना से नही जानी जा सकती।

सम्राट् . यही तो इस अध्ययन का श्रेष्ठ उद्देश्य है।

बैरोने अच्छा तो फिर मै इसके लिए शपथ ग्रहण करूँगा। मेरी शपथ उस वस्तु को जानने के लिए होगी जिसको जानने के लिए मुझ-पर प्रतिबन्ध लगाया गया है जैसे यह जानना कि कहाँ मै अच्छी तरह दावत खा सकता हूँ, जबकि दावत के लिए मुझपर कठोर प्रतिबन्ध है, या यह अध्ययन करना कि कहाँ किसी सुन्दरी से

मिलन होगा, जबकि सामान्य चेतना के क्षेत्र मे स्त्रियों का स्थान नही है; या शपथ पालन करने का दृढ निश्चय करने के पश्चात् उसको तोडना सीखना और अपने सत्य को न तोडना। यदि इस अध्ययन का यही लाभ है तो फिर यह अध्ययन उस वस्तु का ज्ञान रखता है जिसको अभी तक यह नहीं जानता, इसकी शपथ मेरे सामने लो, फिर मै कभी भी न कहूँगा।

सम्राट् : हमारे शान्तिपूर्ण अध्ययन के बीच ये ही तो बाधाएँ है जो हमारे चित्त को निरर्थक सुख की कामना के लिए प्रेरित करती है।

बेरोने : क्यो। सभी सुख निरर्थक है, और वह सबसे अधिक निरर्थक हैजो कष्ट सहकर तो अर्जित किया जाता है लेकिन फिर भी परिणाम सुख के स्थान पर दुःख ही रहता है जैसे कष्ट सहकर एक पुस्तक का अध्ययन करना, सत्य के प्रकाश की खोज करना जबकि उस खोज से प्रकाश के स्थान पर आँखो का प्रकाश और नष्ट हो जाता है। जब एक प्रकाश दूसरे प्रकाश की खोज करता है तो प्रकाश का प्रकाश खो जाता है, इसलिए इससे पहले कि आपको यह पता लगे कि अन्धकार मे प्रकाश कहाँ स्थित है, आपकी दृष्टि नष्ट हो जाने से आपका प्रकाश अन्धकार मे परिणत हो जाएगा। मेरी बात मानकर किसी सुन्दरी की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर अपनी आँखो को सुख पहुँचाना सीखिए। जब उसकी चमक आँखों मे भरेगी तो उनमे छाता हुआ अन्धकार फिर प्रकाश के रूप मे परिणत हो जाएगा अध्ययन तो आकाश मे चमकते हुए दिव्य सूर्य के समान है, जिसको कभी तीव्र दृष्टि गढाकर अधिक गहराई मे नही खोजना चाहिए। लगातार परिश्रम करके अध्ययन करने वालो ने क्या

अधिक लाभ उठाया है ? सिर्फ इतना ही कि दूसरो की पुस्तको की दुहाई देना जरूर उन्होने सीख लिया है। ये आकाश की गति-विधि के ज्ञानी ज्योतिषी जो प्रत्येक तारे का नाम निश्चित करते है, अपनी अच्छी रातो का उन व्यक्तियो से अधिक क्या लाभ उठाते है जो स्वय अपने विषय मे भी जानकारी न रखते हुए विचरण करते है। बहुज्ञता सिवाय अपनी प्रसिद्धि के और कुछ भी नही है। हरएक ज्ञानी नाम तो दे ही सकता है।

सम्राट् : अध्ययन के विरुद्ध तर्क करने के लिए कैसी अच्छी जानकारी है इनकी !

ड्यूमेन और सारी कार्रवाई को रोकने के लिए यहाँ इन्होने अपनी पूरी विद्वत्ता का प्रदर्शन किया है।

लौंगेविले . इन्होने अनाज को तो चुन लिया है और बेकार की घास और पौधो को छोड दिया है।

बैरोने : वसन्त निकट आ रहा है जबकि परिपक्व अवस्था पर पहुँचे हस प्रजनन प्रारम्भ करेगे।

ड्यूमेन : यह कैसे कह गए आप ?

बैरोने : स्थान और समय के उपयुक्त।

ड्यूमेन : तर्क मे कुछ नही।

बैरोने तो फिर तुक मे ही सही।

सम्राट् : बैरोने तो सभी को क्षीण करने वाले उस पाले की भाँति है जो वसन्त की नवजात कलियो को नष्ट कर देता है।

बैरोने : ठीक है, मै मानता हूँ, लेकिन पक्षियो को कलरव करने के लिए उचित कारण हो, इससे पहले ही स्वाभिमानी ग्रीष्म को क्यों बढ-बढकर बाते करनी चाहिए ? किसी असमय जन्म पर मुझे क्यो प्रसन्न होना चाहिए ? जैसे मै मई मे फूटती हुई नई कलियो

पर बर्फ पड़ते देखना नही चाहता, उससे अधिक 'क्रिसमस' के अवसर पर गुलाब की कामना नही करता। मै तो उसी वस्तु को चाहता हूँ जो अपने ठीक समय पर पैदा होती है। आपके अध्ययन करने की आयु तो बहुत पहले ही निकल गई। अब अध्ययन करना तो ऐसा रहेगा जैसे कोई ऊपर छोटे-से दरवाजे को खोलने के लिए मकान पर चढता है।

सम्राट् : अच्छा, तो तुम इसमे भाग न लो बैरोने ! जाओ अपने घर। विदा।

बैरोने : नही मेरे स्वामी। मैने आपके साथ रहने की शपथ ली है, और यद्यपि मै पुस्तकों मे सीमित इस अध्ययन के विरुद्ध बहुत कुछ कह गया हूँ लेकिन फिर भी जो कुछ शपथ मैने ली है उसका पालन करने के लिए मै दृढप्रतिज्ञ हूँ और मै तीन वर्ष के इस कठोर सयमपूर्ण जीवन से कभी अपने पैर पीछे नही हटाऊँगा। लाइए, दीजिए वह प्रतिज्ञा-पत्र मुझको। मै उसको पढता हूँ और फिर उसके कठोर प्रतिबन्धों के नीचे अपने हस्ताक्षर कर देता हूँ।

सम्राट् अहा, बैरोने ! तुम्हारी इस स्वीकृति ने तुम्हे लज्जा और पतन से कैसी अच्छी तरह बचा लिया है।

बैरोने : (पढता है) "आदेश : कोई भी स्त्री मेरे राज-दरबार से एक मील के घेरे के अन्दर नही आयेगी।"—क्या इसकी घोषणा हो चुकी है ?

लौगेविले चार दिन पहले।

बैरोने : अच्छा, इसके लिए दण्ड क्या है ? (पढ़ता है)

"यदि कोई आज्ञा का उल्लघन करेगी तो उसकी जीभ कटवा ली जायगी।"

किसने निश्चित किया है इस दण्ड को ?

लौगेविले मैने !
बैरोने लेकिन प्रिय लॉर्ड ! ऐसा क्यो ?
लौगेविले · इस कठोर दण्ड की घोपणा से उनको डराने के लिए।
बैरोने यह तो शराफत के खिलाफ बड़ा ही खतरनाक कानून है।
(पढता है) "आदेश अगर इन तीन सालो के बीच कोई भी व्यक्ति किसी स्त्री से बातें करता हुआ पाया गया तो उसको जो भी राजदरबार के अन्य व्यक्ति निश्चित करेंगे वही खुला दण्ड दिया जाएगा।"

मेरे स्वामी ! इस आदेश का तो आप अवश्य उल्लघन करेंगे क्योंकि आप यह अच्छी तरह जानते है कि फ्रास की राजकुमारी अपने बीमार और शिथिलकाय पिता के लिए आपसे ऐक्वीटेन माँगने के लिए आई है। पूर्ण सुन्दरी है वह, इसलिए यह आदेश तो इसमे व्यर्थ ही रखा गया है या यह समझा जाय कि वह सुन्दरी राजकुमारी व्यर्थ ही इधर आई है।
सम्राट् क्या विचार है मेरे सरदारो ! यह बात तो मै बिलकुल भूल ही गया था।
बैरोने इसलिए इस अध्ययन की और भी अधिक कोई निश्चित दिशा नही है क्योंकि यह किसी लक्ष्य को प्राप्त करना तो चाहता है लेकिन उन कार्यो को यह भुला देता है जो आवश्यक रूप से करने होगे, इसलिए जिसको प्राप्त करने के लिए यह सबसे अधिक प्रयत्न करता है, उसको पा भी लेता है तो इसकी यह सफलता ऐसी होती है जैसे आग लगाकर किसी नगर पर अपना अधिकार किया जाता है, जिसमे जीत के साथ हार भी सम्मिलित होती है।
सम्राट् हमे इस आदेश मे अवश्य कुछ सशोधन कर देना चाहिए।

वह राजकुमारी केवल अपनी आवश्यकतावश ही यहाँ ठहर सकती है।

बैरोने : यह आवश्यकता तो इस तीन साल के भीतर तीन हज़ार बार हमको अपनी शपथ तोड़ने के लिए बाध्य कर देगी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी कुछ स्वाभाविक वृत्तियाँ लेकर पैदा होता है जो उसके लिए एक विशेष दैवी देन होती है। किसी प्रकार के वलप्रयोग से वे वृत्तियाँ व्यक्ति के चरित्र मे पैदा नही हो सकती। अगर मैं अपनी शपथ का उल्लघन कर दूं तो केवल इतना कहना कि आवश्यकतावश मैंने ऐसा किया था, मेरे पक्ष का समर्थन करेगा ? अब मै इन सभी आदेशो के नीचे अपनी स्वीकृति के हस्ताक्षर किये देता हूँ और जो लेशमात्र भी किसी आदेश का उल्लघन करेगा उसको आजीवन कठोर दण्ड दिया जाएगा। प्रलोभन तो जैसे दूसरों के लिए है, वैसे ही मेरे लिए भी है लेकिन चाहे मै इन सबसे असहमत-सा दिखता हूँ लेकिन मै अन्तिम व्यक्ति हूँ जो अन्त तक अपनी शपथ का पालन करूँगा। लेकिन क्या फिलहाल किसी मनोरजन की आज्ञा नही है ?

सम्राट् : अवश्य ! हमारे राजदरबार में एक स्पेन का सुसस्कृत यात्री आया है, दुनिया के सभी नये फैशनो से परिचित है और जिसका मस्तिष्क तो मानो अनेक नये-नये शब्दो और वाक्याशों को टकसाल है। वह एक ऐसा आदमी है जो अपनी व्यर्थ की बढी-चढ़ी वातो को भी मधुर सगीत की तरह प्रकट करना जानता है। बड़े ही श्रेष्ठ व्यवहार वाला मनुष्य है जिसे आदर्श मान-कर उचित और अनुचित ने भी अपना निर्णायक स्वीकार कर लिया है। उस कल्पनाशील मनुष्य को आर्मेडो के नाम से

पुकारा जाता है, वह कुछ समय के लिए हमारे अध्ययन के अन्तर्गत कई-एक उन वीर योद्धाओ की कहानियाँ ओजस्वी भाषा में सुनाएगा जो ससार के सघर्ष मे स्पेन से सदा के लिए मिट चुके है। मेरे सरदारो ! तुम्हे इसमें कितना आनन्द आयेगा, यह तो मै नही कह सकता लेकिन मै तो उसकी अतिरजित बाते सुनना चाहता हूँ। मै तो उसको अपने गायक के रूप मे रखना चाहता हूँ।

बैरोने : आर्मेडो तो बड़ा ही ख्याति-प्राप्त आदमी है। ओजस्वी भाषा, नये-नये शब्दो और वाक्याशो का पूरा अधिकारी है वह।

लौंगेविले वह विदूषक कौस्टर्ड और ये महाशय हमारे मनोरजन की उपयुक्त सामग्री रहेगे इसलिए तीन साल तो अध्ययन करते हुए बहुत शीघ्र ही निकल जायँगे।

[एक पत्र लिये हुए एक सिपाही का कौस्टर्ड के साथ प्रवेश]

सिपाही . ड्यूक कौन से है ?

बैरोने ये व्यक्ति। क्यों ?

सिपाही मै स्वयं उनके दोष[1] को जानता हूं क्योकि मै उनका सिपाही हूँ, लेकिन मै अब स्वयं उनसे मिलना चाहता हूँ।

---

१. Reprehend : सिपाही कम पढ़ा-लिखा है लेकिन दम्भ बड़े-बड़े शब्दो के प्रयोग करने का रखता है जिनका वह पूरी तरह अर्थ भी नही जानता। इसी प्रकार Reprehend शब्द का प्रयोग उसने यह कहने के लिए किया है कि मै उनसे परिचित हूँ लेकिन शब्द का अर्थ है दोष लगाना। हमने सवाद में 'दोष' ही को रखकर सिपाही के दोष और वेश के भ्रम की ओर संकेत किया है। सिपाही सम्भवतया दोष का अर्थ 'वेश' ही जानता है नहीं तो वह कहता—मै उनके वेश को जानता हूँ।

वैरोने यही है वे।
सिपाही श्रीमान् आर्मे आपकी प्रशसा करते है। बाहर बड़ी बदमाशी हो रही है, इस पत्र के द्वारा आप सब कुछ जान जायँगे।
विदूषक . श्रीमान् ! इस पत्र मे मुझसे सम्बन्धित बात है।
सम्राट् : शानदार आर्मेडो का पत्र है।
वैरोने : विषय चाहे कितना भी छोटा हो लेकिन शब्द-जाल तो बड़ा ऊँचा होगा।
लौंगेविले . एक निम्न स्वर्ग के लिए बड़ी आशा, परमात्मा धैर्य प्रदान करे हमको।
वैरोने : सुनने के लिए या अपनी हँसी रोकने के लिए।
लौंगेविले : शान्तिपूर्वक सुनने के लिए और सम्यक् रूप से हँसने के लिए या दोनो को छोडने के लिए।
वैरोने : श्रीमान्। अच्छा तो यह रहे कि कोई ऐसी बात हो जिसके कहने के ढंग से एक बार ऐसी हँसी उठे कि थमने का नाम ही न ले।
विदूषक . श्रीमान् ! मेरे विचार से जैक्वेनिटा के सम्बन्ध मे कोई बात है। बात यह है—मैं उस काम मे पकड़ा गया।
वैरोने : किस काम में ?
विदूषक श्रीमान् ! इस मुकाम पर और इस तरह से पीछा करते हुए[1]। ये तीन बातें है। पहली बात है—मुझे उसके साथ भवन

---

१. In manner and form following : विदूषक के संवाद में दो शब्दो पर पन का प्रयोग हुआ है। manner के साथ Manor-house का जिसमें पहले का अर्थ ढंग या काम तथा दूसरे का अर्थ है किसी जागीरदार का भवन। इसके पश्चात् form के भी दो अर्थ है—(१) तरीका, तरह (२) बैंच (forme)। तीसरा following पन के रूप में प्रयुक्त नहीं है। हमने विदूषक के द्वारा 'काम' के स्थान पर 'मुकाम' संवाद को सगत बनाने के लिए प्रयुक्त

मे देखा गया था। दूसरी बात—उसके साथ बेंच पर बैठे हुए। तीसरी बात—पार्क मे उसका पीछा करते हुए मुझे पकडा गया था, जिनको यदि एकसाथ मिलाकर रख दिया जाय तो यह निकलता है—इस मुकाम यानी भवन मे, इस तरह बेंच पर, पीछा करते हुए।

अब श्रीमान् सुनिए, क्या कहा था आपने? काम। हां तो उसके लिए तो यह है—किसी स्त्री से वातचीत करना तो पुरुष का काम है। इस तरह बेंच पर का मतलब है किसी भी तरह मे।

वैरोने पीछा करने के लिए श्रीमान्?

विदूषक क्योकि यह मेरे सशोधन मे पीछे आयेगा। भगवान् उचित वात की रक्षा करे।

सम्राट् क्या तुम इस पत्र को ध्यान मे सुनोगे?

वैरोने जैसे हम किसी देववाणी को सुनते।

विदूषक : यही तो आदमी का सीधापन है कि वह बुराई को सुनता है।

सम्राट् "महान् सम्राट्! आकाश के स्वामी! नेवैरे के एकमात्र अधिपति! मेरी आत्मा के देवता! मेरे शरीर के पालनकर्त्ता और सरक्षक!"

विदूषक अभी तक कौस्टर्ड के सम्बन्ध मे एक शब्द भी नही।

सम्राट् (पढता है) "इस तरह से"—

विदूषक काश! ऐसा ही हो! लेकिन यदि वे कहे कि ऐसा ही है, तब तो वे सत्य कहते हैं लेकिन इस तरह—

कर दिया है अन्यथा हिन्दी में उस वाक्चातुर्य को लाना कठिन है, इसके पश्चात् आगे फिर 'काम' शब्द लाकर हमने तार जोड़ दिया है। तात्पर्य यह है कि विदूषक कुछ का कुछ अर्थ बताकर अपनी वाक्पटुता दिखा रहा है।

सम्राट् : शान्ति—

विदूषक : हो मेरे लिए और प्रत्येक आदमी के लिए जो लड़ने का साहस नही करता !

सम्राट् · बस, अब एक भी शब्द नही !

विदूषक : दूसरे मनुष्यो के भेदों के बारे मे, मै प्रार्थना करता हूँ।

सम्राट् : "इस तरह से गहन चिन्ता और विक्षोभ से घिरा हुआ मै आपके स्वास्थ्यप्रद प्रभाव की प्रशसा करके अपने हृदय के इस दूषित प्रभाव को दूर करने का प्रयत्न करने लगा और चूकि मै एक शरीफ आदमी हूँ इसलिए घूमने निकल गया; किस समय ?—करीब छह बजे, जब जगली जानवर अधिकतर चरते है, पक्षी अपना खाना चुगते है और मनुष्य अपना खाना खाने बैठते है। यह तो समय की बात रही यानी किस समय का उत्तर। अब प्रश्न है किस जगह ? जगह से मतलब जहाँ मै घूमने गया था। यह आपका पार्क कहलाता है। फिर प्रश्न आया कि वहाँ किस जगह ?—मतलब कि जहाँ वह भद्दी और बेवकूफी की घटना घटी थी जो मुझे अपनी इस बरफ की तरह सफेद कलम को काली स्याही मे डुबोकर लिखने के लिए बाध्य कर रही है, जिसे आप इसमे देख रहे है, निरख रहे है, निरीक्षण कर रहे है लेकिन किस स्थान पर ?—यह उत्तर की तरफ उत्तरपूर्वी हिस्से मे और पूर्व की तरफ आपके घास और पौधो से घने बाग के पश्चिमी कोने मे। वहाँ मैने उस डरपोक बेवकूफ को देखा था, उसी बदमाश धूर्त्त को जो आपका मनोरजन करता है।"

विदूषक : क्या मुझको ?

सम्राट् : "उस बेपढ़े-लिखे गँवार को"—

विदूषक मुझको ?

सम्राट् "उस अधजल घडे को"—

विदूषक अभी तक भी मेरे सम्बन्ध मे…?

सम्राट् . "जो, मेरे विचार से, कौस्टर्ड नाम का व्यक्ति है।"

विदूषक ओ, मै !

सम्राट् "वह आपके द्वारा घोषित आज्ञा का उल्लघन करता हुआ किसी के साथ जा रहा था। किसके साथ—ओ ! उसी के साथ —अच्छा तो मै फिर आगे कह ही देता हूँ जिसके लिए मुझे बडा दुःख है"—

विदूषक : युवती के साथ।

सम्राट् "हमारी आदिमाता ईव की किसी पुत्री अर्थात् किसी स्त्री के साथ या और भी अच्छी तरह आपको समझाने के लिए कहूँगा किसी कामिनी के साथ। जो मेरा कर्त्तव्य है उसी का पालन करते हुए मैने उसको आपके पास भेज दिया है जिससे आपके अधिकारी ऐंटोनी डल को, जो बड़ी अच्छी शान-शौकत के मशहूर आदमी है, अवश्य इसका दण्ड दे।"

सिपाही मै ! क्या आपकी यह आज्ञा है ? मै ही ऐंटोनी डल हूँ।

सम्राट् "उस स्त्री का नाम जैक्वेनिटा है जिसको मैने आपके उस मूर्ख विदूषक के साथ पकड़ा था। वह मेरे पास ही है। आज्ञा-उल्लघन के अपराध मे कम से कम मै इतना तो चाहूँगा कि उसके ऊपर न्यायालय मे अभियोग चलाया जाय।

आपका कर्त्तव्यपरायण और स्वामिभक्त सेवक—

डॉन ऐड्रियानो डि आर्मेडो।"

बैरोने . जिसकी मुझे आशा थी वैसी अच्छी बात नही है यह, लेकिन

फिर भी अब तक जो भी बातें सुनी है उनमें सबसे अच्छी है।

सम्राट् : सबसे अच्छी ? नही, सबसे खराब। लेकिन मूर्ख ! अब बताओ, तुम क्या कहते हो इस पर ?

विदूषक : श्रीमान् ! मै उस महिला के साथ की बात स्वीकार करता हूँ।

सम्राट् . क्या तुमने आज्ञा को घोषित होते हुए सुना था ?

विदूषक : सुना तो बहुत काफी था, इसको मै स्वीकार करता हूँ लेकिन ध्यान बहुत थोड़ा दिया था।

सम्राट् . यह घोषित किया गया था कि यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के साथ देखा जाएगा उसको एक साल का कारावास मिलेगा।

विदूषक . लेकिन श्रीमान् मुझे तो किसी स्त्री के साथ नहीं देखा गया, एक कामिनी के साथ अवश्य मुझे देखा गया था।

सम्राट् · तो ठीक है, कामिनी के बारे मे ही घोषणा की गई थी।

विदूषक . वह कामिनी भी नही थी श्रीमान् ! वह तो कुमारी थी।

सम्राट् : अच्छा ठीक है इस तरह भी सही। कुमारी के बारे मे ही घोषणा की गई थी।

विदूषक : यदि यह भी है तो फिर मै उसके कुँवारेपन को अस्वीकार करता हूँ। मुझे तो एक महिला के साथ देखा गया था।

सम्राट् : महिला कहने से भी तुम्हारा काम नही चलेगा।

विदूषक : महिला मेरा काम चला देगी श्रीमान् !

सम्राट् : मै तुम्हारे लिए दण्ड की घोषणा करता हूँ--तुम एक हफ्ते तक सिर्फ अनाज की भुसी और पानी से निर्वाह करोगे।

विदूषक : मै प्रार्थना करता हूँ, कृपया इसके बदले तो एक महीने गोश्त और 'पौरिज'[1] खाकर निर्वाह कर लूंगा।

---

१. रसेदार तरकारी-सा।

सम्राट् : और डॉन आर्मेडो तुम्हारी देखभाल रखेंगे।
वैरोने! इसको डॉन आर्मेडो के सुपुर्द कर दीजिए।
सरदारो! चलो हम सभी अपनी शपथ को कार्य-रूप में परिणत करने के लिए चले।

[सम्राट्, लौगेविले तथा ड्यूमेन का प्रस्थान]

वैरोने . मै तो किसी अच्छे आदमी की वात में अपना चित्त लगाऊँगा। ये सारी प्रतिज्ञाएँ और नियम कोरे उपहास के विषय वन जाएँगे। चलो मूर्ख!

विदूषक : मुझे सत्य के लिए यह आपत्ति झेलनी पड रही है श्रीमान्! सत्य वात है यह—मुझे जैक्वेनिटा के साथ पकड़ा गया और जैक्वेनिटा एक सच्ची लडकी है इसलिए ओ समृद्धि के कटु-पात्र! स्वागत है तेरा। एक दिन तो पीडा भी फिर मुस्करा उठेगी तब तक के लिए ओ हृदय की पीडा! शान्त हो जा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

स्थान—उद्यान

[आर्मेडो और उसके परिचारक मोथ का प्रवेश]

आर्मेडो : लडके! जबकि एक साहसी आदमी दुखी होता है, तो इससे क्या प्रकट होता है?

लड़का बहुत प्रकट होता है श्रीमान्! कि वह चिन्तित दिखाई देगा।

आर्मेडो : अरे वाचाल लडके! चिन्ता और दुःख एक ही तो वात है।

लड़का . नही, नही स्वामी! ऐसा नही है।

आर्मेडो . अच्छा तो मजाकिया कोमल लडके ! चिन्ता और दुःख को तू अलग कैसे कर सकता है ?

लड़का : मेरे कठोर श्रीमान् ! इनके कार्य और प्रभाव के प्रदर्शन से ।

आर्मेडो · कठोर श्रीमान् क्यों ? कठोर क्यों ?

लड़का . मजाकिया कोमल लड़का क्यों ? कोमल क्यो ?

आर्मेडो : मैने तो तेरी यौवनावस्था के दिनो को देखकर तेरे लिए कोमल विशेषण का प्रयोग किया था। इस आयु पर किसी को कोमल ही कहा जाता है।

लड़का : और आपकी वृद्धावस्था को देखकर मैने आपके लिए कठोर श्रीमान् का प्रयोग विशेषण के रूप में किया है। इस आयु पर किसी को कठोर ही कहा जाता है।

आर्मेडो वाह ! क्या खूब और कैसा तत्पर !

लड़का : क्या मतलब है आपका श्रीमान् ! कि मै खूबसूरत और मेरा उत्तर तत्पर ? या मै तत्पर और मेरा कहना खूबसूरत ?

आर्मेडो तू खूबसूरत क्योंकि अभी छोटा है।

लड़का · तो खूबसूरत नही, क्योंकि अभी छोटा हूँ। फिर तत्पर किस लिए ?

आर्मेडो : क्योंकि तीव्र है इसलिए तत्पर है।

लड़का : स्वामी! क्या आप यह सब कुछ मेरी प्रशंसा मे कह रहे है ?

आर्मेडो : हाँ, उस प्रशसा मे जिसका तू अधिकारी है।

लड़का : मै 'ईल' मछली की भी इन्ही शब्दों से प्रशसा करूँगा।

आर्मेडो : क्या ? कि एक 'ईल' मछली वाक्-चतुर होती है।

लड़का : कि एक ईल मछली तीव्र बुद्धि वाली होती है।

आर्मेडो : मै कहता तो हूँ कि तू उत्तर देने मे तीव्र और तत्पर है। तू

मेरा खून गरम कर रहा है।

लड़का : मुझे उत्तर मिल गया श्रीमान्।

आर्मेडो : मैं बीच की काट बिलकुल पसन्द नही करता।

लड़का : बिलकुल उलटी बाते कर रहे है। कटे हुए सिक्के[1] इनको पसन्द नही करते।

आर्मेडो . मैने तीन वर्ष तक सम्राट् के साथ अध्ययन करने की शपथ ग्रहण की है।

लड़का : लेकिन श्रीमान्! आप तो वह सब कुछ एक घटे में ही कर सकते है।

आर्मेडो : असम्भव।

लड़का : एक के तिगुने को क्या कहते है ?

आर्मेडो : इस गिनने से मुझे चिढ है। यह काम तो किसी दुकानदार के लिए ठीक है।

लड़का : आप एक शरीफ आदमी और जुआरी है श्रीमान्!

आर्मेडो : मै स्वीकार करता हूँ दोनो बातो को। दोनों ही बाह्य रूप से एक पूर्ण मनुष्य के लिए आवश्यक गुण है।

लड़का लेकिन मुझे विश्वास है आप यह तो जानते होंगे कि दो और एक का कुल जोड कितना होता है।

आर्मेडो . दो से एक अधिक।

लड़का ' जिसे बे-पढे-लिखे बेवकूफ तीन कहते है।

आर्मेडो ठीक है।

---

१. Crosses : इसका अर्थ है धन, क्योंकि एलिजाबेथ-काल में सिक्के के दूसरी तरफ वाला हिस्सा एक क्रौस [+] के निशान से कटा हुआ होता था, इसलिए काट शब्द पर मौथ ने धन का प्रयोग किया है।

लड़का : श्रीमान् ! क्या इसमें अध्ययन करने की कोई बात है; अच्छा तो तीन बार पलक झपकने से पहले आपने तीन को जान लिया, अब इस तीन के साथ साल लगा देना कितना आसान है श्रीमान् ! और इस तरह दो शब्दो मे तीन साल अध्ययन करना, इसे तो आपको एक सरकस का घोड़ा तक बता देगा !

आर्मेडो : बहुत ही अच्छा अक है ।

लड़का . (स्वगत) आपको शून्य साबित करने के लिए ।

आर्मेडो : अब मै यह स्वीकार करता हूँ कि मै प्रेम करता हूँ और चूँकि एक सैनिक के लिए प्रेम करना निम्न कोटि का है इसलिए मैं एक निम्न कोटि की स्त्री से ही प्रेम करता हूँ। यदि इस प्रेमोन्माद के विरुद्ध तलवार खीचना मुझे इसके नीच विचार से मुक्त कर दे तो सच कामना को बन्दिनी बनाकर मै किसी फ्रांस-निवासी राजदरबारी को दे दूं और उसके बदले नई दरबारी तहजीब सीख लूं। मै किसी के लिए आहे भरने से घृणा करता हूँ, इसलिए मेरे विचार से मुझे कामदेव से भी बढ़कर शपथ लेनी चाहिए। मुझे धैर्य बँधा लड़के ! यह बता कि किन-किन महान् पुरुषो ने प्रेम किया है ?

लड़का : स्वामी ! हरक्यूलीज ने।

आर्मेडो : अहा ! प्रिय हरक्यूलीज। प्यारे लड़के ! और महान् नाम बता। सभी उच्चसम्मानप्राप्त और गौरवशाली व्यक्ति होने चाहिएँ।

लड़का : स्वामी ! सैम्सन । वह तो बड़ा ही गौरवशाली व्यक्ति था। एक भारवाही की तरह नगरद्वारो को अपनी पीठ पर लाद कर ले आया था वह। और वह प्रेम करता था।

आर्मेडो : ओ शक्तिशाली सैम्सन ! दृढ़ शरीर वाले सैम्सन ! मै अपनी तलवार में तुझसे उतने ही आगे बढ़ा हुआ हूँ जितना तू नगरद्वार

उठाने में मुझसे आगे है। मैं भी प्रेम करता हूँ। प्यारे मौथ ! सैम्सन की प्रेयसी कौन थी ?

लड़का एक स्त्री, स्वामी !

आर्मेडो किस प्रवृत्ति की ?

लड़का चारो प्रवृत्तियों[1] की या तीन की या दो की या चारो मे से एक प्रवृत्ति की।

आर्मेडो मुझे ठीक-ठीक बता कि किस तरह की थी वह ?

लड़का समुद्र के हरे पानी जैसी श्रीमान् !

आर्मेडो क्या चार प्रवृत्तियो में से यह एक है ?

लड़का . जैसा मैंने पढा है श्रीमान् ! उनमे से सबसे श्रेष्ठ प्रवृत्ति।

आर्मेडो . निस्सदेह प्रेमियो का रंग हरा ही होता है लेकिन इस रग की स्त्री को अपनी प्रेयसी बनाने के लिए तो सैम्सन के पास कोई बडा कारण नही होगा। उसने उसके वाक्-चातुर्य पर रीझ कर उससे प्रेम किया होगा।

लड़का यही बात थी श्रीमान् ! उसकी बहुत तेज बुद्धि थी।

आर्मेडो मेरी प्रेयसी तो बिलकुल सफेद और लाल है। इसके अलावा उसके शरीर पर और कोई दाग नहीं है।

लड़का स्वामी ! सबसे अधिक शुद्ध विचार इन्ही रगो के नीचे छिपे रहते है।

आर्मेडो सुशिक्षित लडके ! इसको स्पष्ट करो।

---

१. Complexion पहले यूरोप में यह विश्वास प्रचलित था कि मनुष्य के शरीर में चार प्रवृत्तियाँ (Humours) हैं जैसे क्रोध, दु:ख, निराशा या विक्षोभ, उत्फुल्लता। इन चारो के अलग-अलग रंग भी हैं। इन्हीं के सम्यक् विधान में गड़बड़ी हो जाने से शरीर में बाधाएँ पैदा होती हैं। यह विश्वास बहुत पुराना है।

लड़का : मेरे पिता की बुद्धि और माता की वाणी-मेरी सहायता करे !

आर्मेडो : एक बच्चे के मुँह से बड़ी ही मधुर बात है ! बड़ी सुन्दर और करुण !

लड़का : यदि वह लाल और सफेद रग की होगी तो उसके दोषो को कभी कोई नहीं जान पायेगा क्योकि कोई अपराध करते समय तो गाल लज्जा के कारण लाल हो जाएँगे, इससे तो अपराध छिप जाएगा और डर के कारण चेहरा पीला और सफेद पड़ जाता है, इसलिए यदि वह डरे या कोई अपराध करे, कोई भी इन सफेद और लाल रगों के बीच उसको नही पहचान सकता क्योंकि उसके गाल तो सदा ही लाल रहते है इसलिए अपराध के समय उनमें कोई परिवर्तन आयेगा ही नही ।

स्वामी ! यह तो सफेद और लाल के विरुद्ध बड़ी खतरनाक बात रही ।

आर्मेडो 'सम्राट् और भिखारिन' के बारे में कोई 'वैलड' भी तो है, लडके ?

लड़का . तीन युगों तक तो ससार ऐसे यशोगीत का बड़ा अपराधी था लेकिन मेरे विचार से अब यह नही पाया जाता है और अगर यह हुआ भी तो न तो यह लिखने के लिएठीक रहेगा और न गाने के लिए ।

आर्मेडो : मै उस विषय को फिर नए तरीके से लिखवाऊँगा जिससे मै अपने इस प्रेम के पक्ष मे कोई बडा-सा उदाहरण तो रख सकूँ । लड़के ! जिस ग्रामीण लड़की को मैने उस अक्लमद विदूषक कौस्टर्ड के साथ बाग मे पकड़ा था, मै उससे प्रेम करता हूँ । वह बिल्कुल उपयुक्त है ।

लड़का · (स्वगत) कोड़े खिलाने के लिए। लेकिन फिर भी मेरे स्वामी से तो अच्छी ही है वह।

आर्मेडो . गाओ लडके ! प्रेम मे मेरा दिल भारी हो जाता है।

लड़का यह वड़ा आश्चर्य है कि आप एक गँवार स्त्री से प्रेम करते हैं।

आर्मेडो · मै कहता हूँ, गाओ।

लड़का : जव तक यह समुदाय यहाँ से न निकल जाए तव तक के लिए रुकिए।

[विदूषक, सिपाही तथा जैक्वेनिटा का प्रवेश]

सिपाही : श्रीमान् ! सम्राट् की आज्ञा है कि आप कोस्टर्ड के ऊपर पूरी निगरानी रखें। न तो आप उसको किसी प्रकार के मनोरजन मे सम्मिलित होने दे और न किसी प्रकार के पश्चात्ताप का अवसर दे वल्कि एक हफ्ते मे तीन दिन उसको उपवास करने के लिए वाध्य करें। इस स्त्री को तो मै वाग मे रखूंगा। इसके लिए तो पशु-पालन का कार्य सौपा गया है। अच्छा विदा।

[सिपाही का प्रस्थान]

आर्मेडो : (स्वगत) लज्जा से लाल हो जाने वाली उस स्त्री के साथ मै अपने आपको धोखा दे रहा हूँ।

जैक्वेनिटा : सुनिए।

आर्मेडो : मै घर पर तुमसे मिलूंगा।

जैक्वेनिटा : वह तो यही पास स्थित है।

आर्मेडो : मै जानता हूँ कहाँ है।

जैक्वेनिटा : लार्ड ! आप कितने वुद्धिमान है !

आर्मेडो : मै तुम्हे वड़ी-वड़ी आश्चर्यमयी वाते वताऊँगा।

जैक्वेनिटा : इसी मुँह से ?

आर्मेडो : मै तुमको प्यार करता हूँ ।

जैक्वेनिटा : यही मैंने आपको कहते सुना है ।

आर्मेडो : इसीलिए अब, विदा ।

जैक्वेनिटा : आप पूरी तरह प्रसन्न रहें ।

सिपाही : आओ जैक्वेनिटा ! चलो ।

[**सिपाही और जैक्वेनिटा का प्रस्थान**]

आर्मेडो : बदमाश ! क्षमा किये जाने के पहले तुझे अपने अपराधों के बदले उपवास करना होगा ।

विदूषक : अच्छा श्रीमान् ! तो जब मै उपवास करूँगा तो भरे पेट शुरू करूँगा ।

आर्मेडो : तुझे पूरा दण्ड दिया जाएगा ।

विदूषक : मै तो दूसरो की अपेक्षा आपके प्रति उत्तरदायी अधिक हूँ क्योकि उनको तो बहुत कम पुरस्कार मिलता है ।

आर्मेडो : ले जाओ इस बदमाश को । बन्द कर दो ।

लड़का : चल ओ शपथ तोड़ने वाले बदमाश धूर्त ! चल यहाँ से ।

विदूषक : मुझे बन्द मत करो । मै खुला रहकर ही उपवास कर लूँगा ।

लड़का : नहीं, यह तो धोखेबाजी का खेल है । तू अवश्य कारागार में जाएगा ।

विदूषक : अच्छा तो अगर मै इस तरह के एकान्तवास के दिन फिर कभी देखूँ जैसे मैंने देखे है तो फिर कुछ लोग देखेगे ।

लड़का : क्या देखेगे कुछ लोग ?

विदूषक : कुछ भी नही मास्टर मौथ । सिवाय उसके जो कुछ भी वे देखते है । कैदियो के लिए अपने शब्द थामकर चुप रह जाना

नही है, इसीलिए मै कुछ भी नही कहूँगा। मै परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि मुझमे किसी दूसरे आदमी की तरह धैर्य नही है इसलिए मै चुप हो सकता हूँ।

[लड़का और विदूषक का प्रस्थान]

आर्मेडो : मै उस भूमि से प्रेम करता हूँ (जो निम्न कोटि की है) जिसको उसके जूतो ने (जो निम्नतर कोटि के है) उसके उन पैरो से निर्देश पाकर (जो निम्नतम कोटि के है) रौंदा है। अगर मै प्यार करूँगा तो मेरी शपथ भग हो जाएगी (जो एक बहुत बड़ा झूठ है) और जो झूठे तरीके से किया जाता है, वह सच्चा प्रेम कैसे हो सकता है? प्रेम तो सरक्षण करने वाली देवात्मा है लेकिन साथ मे यह एक दैत्य भी है। प्रेम को छोडकर और कोई नीच पिशाच नही है फिर भी सैम्सन इसकी ओर आकर्षित हुआ—वह तो एक बडा शक्तिशाली व्यक्ति था। फिर भी सालोमन उसके प्रलोभन मे आ गया यद्यपि वह बड़ा ही बुद्धिमान व्यक्ति था। कामदेव के वाण हरक्यूलीज के मोटे दण्ड से भी कही अधिक तीव्रता से मार करने वाले होते है इसीलिए किसी स्पेनवासी की तलवार का भी उनसे कोई मुकाबिला नही है। पहले और दूसरे कारण तो मेरी सहायता नही करेंगे। हमले को तो वह पसन्द नही करता और द्वन्द्व-युद्ध के नियमो की विशेष परवाह नही करता। सुकुमार पुकारे जाने मे वह अपना अपमान समझता है लेकिन मनुष्यो का दमन करने में अपना गौरव समझता है।

वीरता! विदा। तलवार! जंग लगकर बेकार हो जा। नक्कारे! शान्त हो जा। क्योकि तुम्हारा स्वामी प्रेम करता है।

हाँ, वह प्रेम करता है।

धारा-प्रवाह आशु काव्य के कोई देवता ! मेरी सहायता करो क्योंकि मुझे विश्वास है कि मैं सॉनेट लिख सकता हूँ। बुद्धि ! कल्पना करो। लेखनी ! लिखो; क्योंकि मैं तो बड़े-बड़े ग्रंथ लिखने के लिए हूँ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

स्थान : पार्क

[फ्रांस की राजकुमारी का अपनी तीन परिचारिकाओ (रोज़ालिन, मेरिया और कैथराइन) तथा तीन लार्डों के साथ (जिनमे एक बौयेट है) प्रवेश]

बौयेट : श्रीमती ! अपनी प्यार की मधुर भावना को अपने हृदय मे जगा लीजिए और इस पर विचार करिए कि आपके पिता सम्राट् ने आपको किसके पास किस सम्बन्ध मे भेजा है। सारा ससार आपको एक अमूल्य निधि समझकर किसी ऐसे व्यक्ति के योग्य समझता है जिसमे सभी गुणो की पूर्णता हो और ऐसे अद्वितीय गौरव वाले नेवैरे के सम्राट् है, केवल उन्ही के लिए आना ऐक्विटेन के सम्बन्ध मे आने से कम महत्त्वपूर्ण नही है जो रानी के लिए दहेज हो सकता है। अब अपने इस अपूर्व सौन्दर्य का इसी तरह खुलकर व्यय करिए जैसे प्रकृति ने ससार के अन्य प्राणियो को वचित रखकर पूरी तरह खुलकर आपको ही इसे दिया था।

राजकुमारी : श्रेष्ठ लॉर्ड बोयेट ! मेरा सौन्दर्य यद्यपि निम्न कोटि का हो लेकिन इसके लिए आपकी इस बढी-चढी दिखावटी प्रशसा की आवश्यकता नही है। सौन्दर्य की अनुभूति तो दृष्टि से होती है, उसका वर्णन सौदा बेचने वाले दलालो की-सी जबान से नही हो सकता। आप मेरी इस तरह प्रशंसा करके जितना अपने-आपको बुद्धिमान् कहलवाना चाहते हैं उससे कहीं

कम ही गर्व का अनुभव मैं यह सब कुछ सुनकर करती हूँ। लेकिन श्रेष्ठ बौयेट। अब अपना काम करिए पहले। आपको यह पता ही है और नेवैरे के बाहर सभी के बीच इस बात का शोर है कि नेवैरे के सम्राट् ने यह प्रतिज्ञा कर ली है कि कठिन अध्ययन के ये तीन वर्ष जब तक समाप्त नहीं हो जायँगे तब तक कोई भी स्त्री उनके शान्त प्रासाद के निकट तक नही जा पायेगी, इसलिए इससे पहले कि हम इनके प्रतिबन्ध की अवहेलना करके नगर-द्वारो के भीतर घुसे इसके लिए उनकी आज्ञा प्राप्त कर ले। इस काम के लिए आप ही सबसे अधिक योग्य है। लॉर्ड बौयेट ! इसलिए हम आपको ही अपना श्रेष्ठ और प्रभावशाली दूत बनाकर भेजती है। उनसे कहना कि फ्रांस की राजकुमारी किसी आवश्यक कार्य से आई हुई है और फिर शीघ्र ही लौट जाना चाहती है, इसके लिए वह आपसे कुछ समय मिलने की आज्ञा चाहती है। शीघ्रता करिए और विनीत मुखमुद्रा वाले प्रार्थियों की तरह प्रार्थना करके उनकी इच्छा जानिए, तब तक हम यही प्रतीक्षा करती है।

बौयेट : मुझे इस सेवा के लिए गर्व है, मैं सहर्ष अभी जाता हूँ।

राजकुमारी : सभी गर्व सहर्ष गर्व ही होता है, इसी प्रकार आपका भी है।

[बौयट का प्रस्थान]

श्रेष्ठ लॉर्ड्स ! इन गुणशील सम्राट् के साथ प्रतिज्ञा करने वाले इनके अनुयायी कौन-कौन है ?

लॉर्ड : एक तो लौगेविले है।

राजकुमारी : क्या आप उनको जानते है ?

मेरिया : श्रीमती ! मै उनको जानती हूँ। लॉर्ड पेरीगोर्ट और जेक्स

फैल्कनब्रिज की सुन्दरी पुत्री के विवाह की दावत के समय मैंने उनको नौर्मंडी मे देखा था। श्रेष्ठगुणसम्पन्न और उच्चगौरव-प्राप्त व्यक्ति है। सभी कलाओ मे पूर्ण कुशल है और शस्त्र-अस्त्र विद्या मे पूर्णतः पारगत हैं। जिस वस्तु के विषय मे वे अच्छे की कामना करे, वह कभी बुरी नही हो सकती। उनके गुणों की आभा के बीच एक ही धब्बा है, यदि किसी धब्बे से उस आभा मे कोई दोष पैदा होता है तो। वह है उनकी तीव्र बुद्धि के विपरीत उनकी इच्छा-शक्ति की शिथिलता। उनकी बुद्धि की तीव्रता तो किसी को भी काटने की सामर्थ्य रखती है लेकिन इच्छा कभी भी दृढ निश्चय के रूप मे नही बदलती। जो भी उनकी शक्ति के भीतर आ जाता है, उनका वाक्चातुर्य किसी को भी नही छोड़ता।

राजकुमारी : कोई बडे मजाकिया लॉर्ड लगते है।

मेरिया : जो उनके स्वभाव को सबसे अच्छी तरह से जानते है, वे ऐसा ही कहते हैं।

राजकुमारी : ऐसी अल्पकालीन बुद्धि की तीव्रता जैसे पैदा होती है वैसे ही नष्ट हो जाती है।

बाकी और कौन है ?

कैथराइन : नवयुवक ड्यूमेन है। बडा ही भरा-पूरा नवयुवक है और प्रेम ही उसका सबसे बडा गुण है, उसी गुण के लिए सभी उससे प्रेम करते है। किसी को भी अधिक से अधिक हानि पहुँचाने की सामर्थ्य रखता है लेकिन बुराई को तो जानता तक नही है क्योंकि वह अपनी बुद्धि से बुराई को अच्छाई के रूप में बदलना जानता है। और किसी स्त्री का प्रेम प्राप्त कर सकता है चाहे उसमे तनिक भी वाक्-चातुर्य न हो। मैंने उसको एक बार ड्यूक ऐलैंसन के

यहाँ देखा था और जो अच्छाई मैंने उसमे देखी थी उसको देखते हुए तो जो मै उसकी प्रशसा कर रही हूँ, वह बहुत थोडी है।

रोजालिन : मैंने यह भी सुना है कि इनमे से एक शपथग्राही और था उसके साथ उस समय। उसका नाम बैरोने है। वह ज्यादा खुश-दिल आदमी है अपने हँसी-मजाक के एक निश्चित दायरे मे। मैंने तो कभी भी उससे एक घंटे तक बाते नही की। अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने के लिए उसकी दृष्टि उचित अवसर निकाल लेती है क्योंकि जहाँ किसी चीज पर दृष्टि पडी कि बुद्धि ने उसका मजाक बना दिया जिसे वह अपनी चतुराई को प्रकट करने वाली जबान से बड़े ही अच्छे और उचित शब्दो मे बाँधकर इस तरह सामने रखता है कि पुराने आदमी भी उसकी बाते सुनकर चुप रह जाते है और जवान लोग पूरी तरह दब जाते है। ऐसे मधुर और धाराप्रवाह ढंग से बोलता है वह !

राजकुमारी : भगवान् मेरी सभी सहेलियों को प्रसन्न रखे। क्या वे सभी प्रेम में पड़ गई है ? कि प्रत्येक अपने-अपने प्रेमी की ऐसी बढ़ी-चढ़ी प्रशंसा कर रही है।

लॉर्ड : लीजिए, बौयेट तो आ रहे है।

[बौयेट का प्रवेश]

राजकुमारी : क्या समाचार है लॉर्ड ?

बौयेट : नेवैरे को आपके आने का पता था और मेरे आने से पहले वे और उनके सभी साथी आपसे मिलने के लिए तैयार हो गये थे। इतना तो मुझे पता लगा है कि वे आपको उस व्यक्ति की तरह जो नगर के चारों ओर घेरा डालकर उन पर आक्रमण करने आया हो, बाहर खुले मैदान में ही ठहराने का इरादा कर चुके है। इस तरह वे आपको अपने शान्त निवास-स्थल में जाने

की आज्ञा न देकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना चाहते है।

[महिलाएँ अपने को नकाब से ढक लेती हैं।]

[सम्राट्, लौंगेविले, ड्यूमेन, बैरोने तथा परिचारिको का प्रवेश]

वह देखिए, नेवैरे आ रहे है।

सम्राट् · सुन्दर राजकुमारी। नेवैरे के राजदरवार मे आपका स्वागत है।

राजकुमारी : सुन्दर शब्द को तो मै आपको ही वापिस देती हूँ और स्वागत मेरा अभी तक हुआ नही है। इस राजदरवार की छत तो इतनी ऊँची है कि यह आपकी तो हो ही नही सकती और इन फैले खेतो के वीच मेरा स्वागत इतने निम्न-कोटि का है कि वह मेरा स्वागत नही हो सकता।

सम्राट् . श्रीमती ! आपका मेरे दरवार मे स्वागत किया जाएगा।

राजकुमारी : तब मेरा अवश्य स्वागत होगा। मुझे उधर ही ले चलिए।

सम्राट् : श्रीमती ! मेरी वात सुनिए। मैने एक प्रतिज्ञा ग्रहण की है।

राजकुमारी : देवी मेरी श्रीमान् की सहायता करे। इनकी प्रतिज्ञा अवश्य भग हो जाएगी।

सम्राट् : दुनिया की इतनी ताकत नही है श्रीमती ! इसे तो मै अपनी इच्छा से ही भग कर सकता हूँ।

राजकुमारी : हाँ हाँ, इच्छा से ही तो यह भग होगी और किसी चीज से नही।

सम्राट् : श्रीमती को अभी पता नही है कि वह प्रतिज्ञा क्या है।

राजकुमारी : अगर श्रीमान् भी इसी तरह इस सवसे अनभिज्ञ होते तो यही अनभिज्ञता उनकी बुद्धिमत्ता होती जवकि इस समय उनकी बुद्धिमत्ता पूरी तरह उनका अज्ञान है। मैने सुना है कि श्रीमान् ने अतिथि-सत्कार न करने की प्रतिज्ञा ग्रहण कर ली है। श्रीमान्,

इसका पालन करना तो महापाप है, और इसका उल्लंघन करना भी पाप है लेकिन क्षमा करिए मुझको, मै एकाएक ही इतना साहस कर गई। एक शिक्षक को शिक्षा देना मेरे लिए कहाँ तक उचित है ? मेरा यहाँ आनें का कारण पढ़कर कृपया शीघ्र मेरे मामले का निर्णय कर दीजिए।

[उसे एक कागज देती है।]

सम्राट् : श्रीमती ! यदि मै शीघ्र कर सका तो अवश्य करूँगा।

राजकुमारी : जितना शीघ्र हो सके उतना ही अच्छा है क्योंकि मै यहाँ से चली जाऊँगी, नही तो मेरे यहाँ ठहरने से आपकी प्रतिज्ञा भंग हो जाएगी।

बैरोने : क्या मै आपके साथ एक बार ब्रैबेट में नही नाचा था ?

रोजालिन : क्या मै आपके साथ एक बार ब्रैबेट में नही नाची थी ?

बैरोने : अवश्य ! मै जानता हूँ।

रोजालिन : तो फिर यह प्रश्न पूछना कितना अनावश्यक था।

बैरोने : इतनी तेजी नही दिखानी चाहिए आपको अभी से।

रोजालिन : यह आपकी ज्यादती है कि इस तरह की बातों से आप मुझको चोट पहुँचाते हे।

बैरोने : आपकी बुद्धि इतनी गरम है कि यह बहुत तेज दौड़ती है। थक जाएगी यह।

रोजालिन : तब तक नही जब तक यह अपने सवार को दलदल में नहीं डाल देगी।

बैरोने : क्या बजा है इस समय ?

रोजालिन : वही जिसे बेवकूफ पूछते हे।

बैरोने : अच्छा तो सुन्दरी ! अब तो यह अपना चेहरा हटा लीजिए।

रोजालिन : जिस चेहरे को इसने ढांक रखा है उसका सौभाग्य है।

बैरोने : कि वह आपके पास बहुत से प्रेमियो को बुला दे ।

रोजालिन : अमीन ! तो आप उनमे से एक भी नही है ।

बैरोने : तो फिर मै जाता हूँ ।

सम्राट् . श्रीमती ! आपके पिता ने एक लाख क्राउन्स की अदायगी के बारे मे लिखा है जो उस पूरे धन का आधा भी नही है जिसे मेरे पिता ने उनके युद्धो के लिए ऋण-रूप मे दिया था । लेकिन न तो उन्होने और न हमने उस धन को पाया है, फिर भी एक लाख और बच रहता है जो अभी से अदा किया जाना है जिसकी जमानत मे ऐक्वीटेन का एक भाग हमारे अधिकार मे है, यद्यपि उसका उतना मूल्य नही है। इसलिए अगर आपके पिता सम्राट् उस आधे धन को और दे दे जिसको उन्होने नही दिया है तो हम ऐक्विटेन से अपना अधिकार हटाकर उनसे मैत्री-भाव स्थापित कर ले । लेकिन लगता ऐसा है कि उनका ऐसा विचार नही है क्योकि इस पत्र के अनुसार तो वे ऐक्विटेन का अधिकार इस तरह माँग रहे है जैसे उन्होने सारा ऋण चुका दिया है । उन्होने यह नही लिखा है कि एक लाख क्राउन्स के देने पर ऐक्विटेन उन्हे समर्पित कर दिया जाय । अगर हमे वह धन मिल जाता जो हमारे पिता ने आपके पिता को ऋण-रूप मे दिया था तो हम इस गिरवी रखे हुए ऐक्विटेन को तुरन्त वापिस कर देते ।

प्रिय राजकुमारी । यदि उनकी प्रार्थना इतनी अनुचित न होती तो आप स्वय ही प्रार्थना करके उचित कर्त्तव्य की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करती और पूरी तरह सतुष्ट होकर वापिस फ्राँस को लौटती ।

राजकुमारी · आप इस तरह उस धन की प्राप्ति अस्वीकार करके, जो पूरे विश्वास के साथ आपको चुका दिया गया है, मेरे पिता

का अत्यधिक अपमान कर रहे हैं और अपने नाम को भी धब्बा लगा रहे हैं।

सम्राट् : मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ, मैंने कभी उसके बारे में सुना तक नही और अगर आप इसको सिद्ध कर दे तो मैं उस धन को आपको वापिस दे दूंगा या एक्विटेन को आपके समर्पित कर दूंगा।

राजकुमारी : हम आपकी बात को पकड़ती हैं।

बौयेट ! आप इनके पिता चार्ल्स के विशेष अधिकारियो के हाथ के उस धन के प्राप्ति-पत्र दिखला सकते हैं।

सम्राट् : हाँ, हाँ, इस तरह मुझे सतुष्ट कर दीजिए।

बौयेट : जैसी आपकी आज्ञा। जिस पैकिट में वह और दूसरे आवश्यक पत्र हैं, वह अभी पहुँच नहीं पाया है। कल आपको सभी कुछ दिखला दिया जाएगा।

सम्राट् : इतना पर्याप्त रहेगा मेरे लिए। मै उनको देखकर अपने उचित कर्तव्य का पालन करूँगा। तब तक मै अपने यहाँ आपका वही स्वागत करता हूँ जो आपके सर्वथा योग्य है और जिसमें मुझे किसी प्रकार अपनी शपथ को भग नही करना पड़ता।

सुन्दर राजकुमारी ! यद्यपि आप नगर-द्वारों के भीतर प्रवेश नही कर सकती लेकिन यहाँ बाहर भी आपका इस प्रकार स्वागत होगा कि आप यह अनुभव करेगी कि स्वयं मेरे हृदय में आप रह रही है, यद्यपि मेरे महल में प्रवेश करने की आपको मनाही है। आपके निजी श्रेष्ठ विचार मुझे क्षमा करे। अच्छा विदा। कल फिर हम आपसे मिलेगे।

राजकुमारी : श्रीमान् का स्वास्थ्य अच्छा रहे और सभी सुन्दर कामनाएँ पूर्ण होती रहें।

सम्राट् मै भी प्रत्येक स्थान पर आपके लिए यही शुभ कामना करता हूँ।

[परिचारको सहित प्रस्थान]

बैरोने : श्रीमती ! मै अपने हृदय से आपकी प्रशंसा करता हूँ।

रोजालिन · अवश्य, कृपा करके आप मेरी प्रशसा करिए, मुझे इससे प्रसन्नता होगी।

बैरोने . काश ! आप इसकी तड़पन सुन पाती !

रोजालिन क्या दिल बीमार है ?

बैरोने : दिल की बीमारी ही है।

रोजालिन हाय ! तब तो इसका कुछ खून बह जाने दीजिए।

बैरोने . क्या उससे फायदा हो जाएगा ?

रोजालिन : शरीर-रोग-सम्बन्धी मेरा ज्ञान तो यही कहता है।

बैरोने : तो क्या आप अपनी आँख को चुभाकर इसका खून निकाल देगी ?

रोजालिन . मेरी आँखे इतनी तीखी नही है। अपने चाकू से यह कर दूंगी।

बैरोने परमात्मा आपको बचाये !

रोजालिन · और आपको लम्बे जीवन से।

बैरोने मै धन्यवाद देने को भी नही रुक सकता।

[पीछे हट जाता है।]

ड्यूमेन श्रीमान् ! मै आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ—कौन-सी श्रीमती है वे ?

बौयेट ऐलैसन की पुत्री। कैथराइन नाम है उसका।

ड्यूमेन · बडी बहादुर स्त्री है। अच्छा श्रीमान् ! विदा।

[प्रस्थान]

लौंगेविले · मै आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ—वह सफेद कपडे पहने हुए कौन है ?

बौयेट . अगर आपने उसे कभी प्रकाश मे देखा हो तो शायद एक स्त्री है।

लौंगेविले कभी शायद प्रकाश को प्रकाश में देखा है। मै तो उनका नाम चाहता हूँ।

बौयेट . वह तो इनके पास एक ही है जो उनके अपने लिए है। उसको चाहने मे तो आपको शरम आनी चाहिए।

लौंगेविले : कृपा करके यह बताइए श्रीमान्! किसकी पुत्री है ?

बौयेट · मैने तो सुना है कि अपनी माता की है।

लौगेविले . परमात्मा आपकी इस दाढी पर कृपा करे।

बौयेट : श्रीमान्, क्रुद्ध मत होइए। यह फैल्कनब्रिज की पुत्री है।

लौंगेविले : ठीक है, अब मेरा क्रोध शान्त हो गया। वे तो बडी ही सुन्दर स्त्री है।

बौयेट · हो सकता है श्रीमान्! ठीक ही है।

[**लौंगेविले का प्रस्थान**]

बैरोने · जो टोपी पहने हुई है उनका नाम क्या है ?

बौयेट : सौभाग्य से उनको रोजालिन कहकर पुकारते है।

बैरोने · उनका सम्बन्ध हो गया है या नही ?

बौयेट . अपनी इच्छा से ही सम्बन्ध हुआ है श्रीमान्!

बैरोने . आपका स्वागत है श्रीमान्! अच्छा विदा।

बौयेट विदा मेरे लिए श्रीमान् और स्वागत आपके लिए।

[**बैरोने का प्रस्थान। महिलाएँ नकाब उतारती है।**]

मेरिया : वह आखिरी बैरोने है। बड़ा मजाकिया किस्म का लॉर्ड है। उससे तो सिवाय मजाक के एक लफ्ज भी मत बोलना!

बौयेट . और हरएक मजाक सिर्फ एक ही लफ्ज मे पूरा हो जाना चाहिए।

राजकुमारी : यह आपने ठीक किया कि उनकी वात को पकड़ लिया।

बौयेट : जितना वह हमला करने पर तुला हुआ था उतना ही लडने के लिए मै तैयार था।

कैथराइन दो गरम स्वभाव की भेडे, हे मरियम ! फिर जहाज क्यों नही ?

बौयेट . जब तक हम तुम्हारे ओठो पर भूख न मिटा ले तव तक प्रिय सुकुमार मैमने ! कोई भेड नही।

कैथराइन : तुम तो भेड़ हो और मै चरागाह हूँ । क्या इससे मजाक पूरा हो जाता है ?

बौयट · तो फिर तुम मुझको चरने दो ।

[चुम्वन लेने आगे बढता है।]

कैथराइन : इस तरह नही सीधे जानवर। मेरे ओठ यद्यपि कई है फिर भी वे कोई आम तौर पर काम मे लाने के लिए थोडे ही है ।

बौयेट : किसका अधिकार है उन पर ?

कैथराइन : मेरे भाग्य का और मेरा।

राजकुमारी अच्छे वाक्-चतुर व्यक्ति कभी समझौते की स्थिति पर नही आयेगे लेकिन अन्य साधारण अच्छे स्वभाव के व्यक्ति आपस में समझौता कर लेते है। यह वाक्-चातुर्य का जो गृह-युद्ध-सा छिड़ा हुआ है, इसका प्रयोग नेवैरे और उनके विद्वान् साथियों पर अच्छा होगा क्योकि यहाँ तो इसका दुरुपयोग ही हो रहा है। यह बहुत ही बुरा है और इसकी यहाँ आवश्यकता भी नही है।

बौयेट यह मेरा अनुभव (जो हृदय की बातों को आँखों द्वारा प्रकट होते देखने मे बहुत कम ही गलत निकलता है) मुझे इस समय धोखा नही दे रहा है तो मै कहता हूँ कि नेवैरे छू गया है।

राजकुमारी : किससे ?

बौयेट : उससे जिससे हम प्रेमी प्रेम कहते है ।

राजकुमारी : इसका आधार ?

बौयेट : उसके सारे काम आखिर जाकर उसकी आँखों मे झलकते हैं जिनमे पूरी तृष्णा समाई हुई है। उसके हृदय पर आपकी छाप पड़ी हुई है। अपने ऊपर उसे गर्व है और वह गर्व उसकी आँखों मे झलकता है। उसकी जबान बोलने के लिए पूरी तरह अधीर होकर जल्दी मे लडखड़ा गई और उसके हृदय का यह भाव उसकी आँखों मे उतर आया। किसी अपूर्व सुन्दरी की ओर देखने से जो भी हृदय मे भाव उठते हैं वे सभी आँखों के द्वारा व्यक्त हो रहे थे। मेरे विचार से तो उसके हृदय के सारे भाव उसकी आँखों मे इस तरह बन्द थे जैसे किसी ऐसे राजकुमार के खरीदने के लिए जवाहरात पारदर्शी केस में रखे हुए हों; जो शीशे के पीछे से अपना मूल्य बताते हुए इशारा कर रहे हो कि आप उनके पास से गुजरते समय उन्हे खरीद ले। उसके चहरे पर ही इस तरह के भाव थे कि सभी लोगों ने उसकी आँखों को किसी की आँखों के जादू मे घिरे हुए देखा था। मै आपको ऐक्विटेन और इसके अलावा उसका सब कुछ देता हूँ लेकिन आप मेरे लिए उसको सिर्फ एक चुम्बन दे दीजिए।

राजकुमारी : आओ देखो, बौयेट मजाक कर रहे है।

बौयेट : लेकिन जो कुछ उसकी आँखो मे है उसको शब्दों के रूप मे कहकर तो मैंने उसकी आँखों को एक मुँह के रूप मे बदल दिया है और एक जबान जोड़ दी है, जो मै जानता हूँ, झूठ नही बोल सकता।

मेरिया : तुम तो पुराने प्रेमी हो इसीलिए इतनी चतुराई की बातें करते हो।

कैथराइन : कामदेव के दादा है ये और उसकी खबर जानते हैं।

रोजालिन : तो फिर वीनस देवी तो अपनी माँ की तरह होगी क्योंकि उसके पिता जुपिटर तो बडे क्रोधी और कठोर स्वभाव के हैं।

बौयेट : सुनती हो इन पागल स्त्रियो की बाते ?

मेरिया : नही।

बौयेट तो फिर तुम क्या देखती हो ?

मेरिया . अपने जाने की राह।

बौयेट . तुम तो मेरे लिए बड़ी कठोर हो।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

स्थान—उद्यान

[आर्मेडो और लड़के का प्रवेश]

आर्मेडो : गाओ लडके ! मेरे कानों मे मधुर सगीत-लहरी भर दो।

[लड़का कोन्कोलिनैल[1] गाता है।]

आर्मेडो : प्रिय सुकुमार लड़के ! यह चाभी ले जाओ और उस मूर्ख को खोल दो और फिर शीघ्र उसे यहाँ ले आओ। मै अपनी प्रेयसी के पास उसके द्वारा एक पत्र भेजना चाहता हूँ।

लड़का : क्या आप अपनी प्रेयसी को फ्रास के ब्रौल[2] नृत्य के द्वारा अपने वश मे करेंगे ?

आर्मेडो . क्या मतलब, फ्राँस की बोली मे बड़बड़ाने से ?

लड़का : नही मेरे मालिक ! बल्कि पहले तो किसी धुन को जबान पर नचाना फिर उसके साथ पैर उठाकर नाचना और उसके अनुसार अपनी आँखे फिराकर उसको ठीक कर लेना। एक गाने को गुनगुनाइए और फिर उसी गाने को कभी गले से गाइए जैसे मानो आप प्यार के गीत गाकर प्रेम को आत्मसात् कर गए हो, कभी-कभी नाक मे होकर भी मानो आपने पूरी तरह एक

---

१. Concolinel : सम्भवतया उस गाने का शीर्षक जिसे मौथ गाता है।

२. Browl : इस शब्द के दो अर्थ हैं—(१) एक प्रकार का फ्रांस का नृत्य। (२) बड़बड़ाना। इस पन को अलग-अलग शब्दों के द्वारा ही हमने निभाया है।

विक्षिप्त प्रेमी होकर प्रेम को सूँघकर उसे अपने अन्दर चढा लिया हो। आपके हाथ अपने कसे हुए डेबलैट पर एक दूसरे से लिपटे हुए होने चाहिएँ जैसे एक खरगोश जमीन पर बैठता है, या आपके हाथ उस आदमी की तरह जो पुरानी तस्वीर देखता है, अपनी जेब मे होने चाहिएँ। इसके अलावा अधिक देर तक एक ही धुन छेड़ते मत रहना बल्कि एक बार छेड दी और फिर परे हट गए। ये आवश्यक गुण और ढग होने चाहिएँ। ये बडी अच्छी स्त्रियों को अपने जाल मे फॉस लेते है और उन व्यक्तियों को जो इनसे सम्पन्न है, प्रसिद्धि दिलाते है। क्या आप उन आदमियो को देखते है, जो इनकी ओर सबसे अधिक आकर्षित है ?

आर्मेडो : यह अनुभव तुमने कैसे प्राप्त किया ?

लड़का · अपनी निरीक्षण-क्षमता से।

आर्मेडो लेकिन ओ ! लेकिन ओ।

लड़का : उस अश्वगीत को तो भूल ही गए।

आर्मेडो क्या ? तू मेरे प्रेम को वेश्या[1] कहता है।

लड़का नही स्वामी ! अश्व से मेरा मतलब एक बछेड़े से था जबकि शायद आपका प्रेम एक आम किराये के घोडे जैसा है। लेकिन क्या आप अपनी प्रेयसी को भूल गए है ?

आर्मेडो हाँ, करीब-करीब भूल ही चुका हूँ।

लड़का लापरवाह विद्यार्थी है आप ! उसका नाम तो हृदय से याद

---

१. Hobby horse इस शब्द पर पन का प्रयोग किया है। उसके दो अर्थ है—(१) वह गीत जिसमें गायक बनावटी घोड़े की आकृति और शरीर लगाकर अभिनय करता है और उसे गाता है जिसके लिए हमने अश्वगीत शब्द का प्रयोग किया है। (२) वेश्या। हमने अश्व और वेश्या इन दोनों निकटकी ध्वनि वाले शब्दो को लेकर अपनी सीमाओ मे पन को निभाया है।

कर लेना चाहिए ।

आर्मेडो : हृदय से और हृदय मे बिठा लेना चाहिए, लड़के !

लड़का · और हृदय के बाहर। स्वामी ! इन तीनों चीजो को मैं सिद्ध करूँगा ।

आर्मेडो : क्या सिद्ध करेगा तू ?

लड़का : अगर मैं जिन्दा रहा तो एक ऐसा आदमी जो एक ही समय मे से, मे और बाहर के द्वारा अपने प्रेम में बद्ध है। आप अपनी प्रेयसी को हृदय से प्रेम करते है क्योकि आपका हृदय उनके पास' कभी नही आ सकता। हृदय मे आप उनको प्रेम करते है और हृदय के बाहर आप उनको प्रेम करते है क्योकि आपका हृदय इस सबके बाहर रहकर उनमे किसी प्रकार के आनन्द का अनुभव नही कर सकता।

आर्मेडो : मै यह तीनो हूँ ।

लड़का : इनसे तिगुने और फिर भी कुछ नही ।

आर्मेडो : उस मूर्ख को इधर पकड़कर ले आओ। वह मेरा एक पत्र ले जाएगा।

लड़का : यह सदेश सहानुभूति के योग्य है। गधे का संदेशवाहक घोड़ा !

आर्मेडो : हा, हा, क्या कहता है तू ?

लड़का : श्रीमान् ! आपको घोड़े के ऊपर बिठाकर गधे को भेजना चाहिए क्योकि उसकी चाल बड़ी धीमी है । लेकिन मै जाता हूँ।

आर्मेडो : थोडा ही तो रास्ता है। जाओ।

लड़का : सीसे की गोली के समान तेज श्रीमान् ।

---

१. By : यहाँ लड़का By, in, out इन तीन शब्दो को लेकर अपना चातुर्य दिखाता है। By के दो अर्थ है—(१) से, द्वारा (२) पास। हमने दोनो शब्दों का प्रयोग किया है।

आर्मेडो . तेरा उत्तर तो बड़ी चतुराई-भरा होता है। क्या सीसा एक भारी और स्थिर रहने वाली धातु नही होती ?

लड़का : बिलकुल नही मेरे सच्चे स्वामी !

आर्मेडो : मैं कहता हूँ सीसा बड़ा ही धीमा सरकने वाला होता है।

लड़का · श्रीमान्। ऐसा कहने मे आप बडी शीघ्रता कर रहे हैं। क्या वह सीसा धीमी चाल से जाता है जो एक बन्दूक की नली से दागा जाता है।

आर्मेडो : वाह, क्या खूब बात कही है। मुझे तो इसने बन्दूक बना दिया और खुद सीसे की गोली बन गया। अच्छा तो मै तुझे उस मूर्ख की तरफ दागता हूँ।

लड़का : अच्छा तो दबाइए घोड़ा और मै भागा यहाँ से।

[प्रस्थान]

आर्मेडो : बड़ा ही मजाकिया और बोलने वाला है यह ! मधुर आकाश ! अब मै तेरी ओर नि श्वासे भरना प्रारम्भ करूँगा। विक्षोभ की क्रूर भावना ! वीरता की भावना के स्थान पर अपना अधिकार स्थापित कर लो। मेरा सदेशवाहक लौट आया है।

[लड़का विदूषक को साथ लेकर आता है]

लड़का : आश्चर्य, स्वामी ! देखिए इस कौस्टर्ड के पैर की हड्डी टूट गई है।

आर्मेडो : कोई रहस्यपूर्ण बात, कोई चक्कर, बताओ। अपना सार दो न।

विदूषक : कोई रहस्य नही है, न कोई चक्कर है, न कोई सार है और न साल्व[1] है थैले मे श्रीमान् ! प्लैटन की आवश्यकता है

---

१. L'envoy. salve : इस दृश्य में विदूषक, आर्मेडो और लड़के की वाक्पटुता चलती है। विदूषक आर्मेडो को L'envoy शब्द पर बेवकूफ बना देता है। इस शब्द का अर्थ है—किसी एक रहस्यपूर्ण पद की पूर्ति के लिए जो

यहाँ तो, प्लैटन की। कोई सार नही, न कोई साल्व बल्कि प्लैटन चाहिए।

आर्मेडो : तेरी ये बेवकूफी की बाते तो सच मुझे हँसी दिला रही है, और तेरे ये बेतुके विचार मेरी तबियत बिगाड़ रहे है साँस के साथ जैसे ही फेफड़े उठते है, बड़ी जोर की अजीब हँसी छूटने को होती है। क्षमा करना मुझे, ओ परमात्मा ! क्या बेवकूफ सार की जगह साल्व और साल्व की जगह सार का प्रयोग कर सकता है ?

लड़का : क्या बुद्धिमानो का विचार कुछ दूसरा है ? क्या सार को साल्व नही कहते ?

आर्मेडो : नही लड़के ! किसी रहस्यपूर्ण बात को स्पष्ट करने के लिए जो बाद मे कहा जाता है, वह सार कहलाता है जो सारे रहस्य को प्रकाश मे लाता है जैसे मै इसका उदाहरण देता हूँ—

लोमड़, बन्दर, मक्खी दीन,
ऊने[1] थे, क्योकि थे तीन।

उसी के साथ दूसरा पद जोड़ा जाता है जिससे पूरा अर्थ खुलता है; उसके लिए हमने 'सार' शब्द का प्रयोग किया है, उसका कारण है कि साल्व के साथ हमें उसे मिलाना था। प्लैटन (Plantan) एक चौड़े पत्तों वाला केले जैसा पेड़ होता है जिसके पत्ते पीसकर घाव पर लगाये जाते हैं। आर्मेडो 'साल्व' के स्थान पर 'सार' कह जाता है। साल्व का अर्थ है कोई मरहम या लेप। इस पर विदूषक उसे बेवकूफ बना देता है और आगे सार और साल्व के अर्थ सोदाहरण समझाता है।

१. कवि ने 'Odds' का प्रयोग किया है, जिसके दो अर्थ होते है : (१) ऊने, यानी दो से विभाजन न होने वाली संख्या; (२) मुश्किल में पड़ना। ये ही पक्तियाँ जब बाद में लड़का कहता है तो उसका दूसरा अर्थ लगता है।

यह तो रही नैतिकता सम्बन्धी एक बात । अब इसके साथ सार ।

लड़का. मैं जोडूंगा सार । कहिए उस बात को फिर ।

आर्मेडो. लोमड, बन्दर, मक्खी दीन,
ऊने थे, क्योकि थे तीन ।

लड़का : आई बत्तख, खोला द्वार,
पूरे-पूरे हो गये चार ।

अच्छा तो अब मैं आपकी बात को कहता हूँ और आप इसके पीछे सार जोड दीजिए ।

लोमड, बन्दर, मक्खी दीन,
थे मुश्किल मे, क्योकि थे तीन ।

आर्मेडो. आई बत्तख, खोला द्वार,
मुश्किल मिटी न, हो गये चार ।

लड़का : बड़ा अच्छा सार है, बत्तख पर आकर खत्म होता है । क्या आप इससे अधिक के लिए इच्छुक है ?

विदूषक : लड़के ने बड़ा बुरा सौदा बेचा उनको, एक बत्तख, जो बेकार है । श्रीमान् ! आपका सौदा अच्छा है और आपका बत्तख मोटा है । किसी बुरे सौदे को अच्छी तरह बेच देना भी बडी चालाकी का काम है । लाइए दिखाइए मुझे उस मोटे सार को, अरे नही, मतलब उस मोटे बत्तख को ।

आर्मेडो. इधर आओ, अब बोलो । यह बहस किस तरह शुरू हुई थी ?

लड़का : यह कहने के साथ कि कौस्टर्ड के पैर की हड्डी टूट गई है, तब आपने सार के लिए कहा था ।

विदूषक : हाँ, ठीक है, तब मैने प्लैटन के लिए कहा था । इस तरह बात चली थी, फिर लड़के का मोटा सार यानी उस बत्तखके बारे

मे बाते, जो आपने खरीदा है और इस तरह बात खत्म हो गई।

आर्मेडो : लेकिन यह बताओ मुझे कि कौस्टर्ड के पैर की हड्डी कैसे टूट गई ?

लड़का : मै पूरी अनुभूति के साथ आपसे कहूँगा।

विदूषक : मौथ ! तुम्हें इसकी कोई अनुभूति नही है। मै उस सार को बोलूँगा। मै भीतर पूर्णतया सुरक्षित था कि बाहर भागा और ड्योढ़ी पर गिर पड़ा और मेरे पैर की हड्डी टूट गई।

आर्मेडो : अच्छा, अब इस बारे में हम आगे बात नही बढ़ाएँगे।

विदूषक : जब तक कि पैर की हड्डी मे कुछ अधिक बात न हो।

आर्मेडो : कोस्टर्ड ! मै तुझे मुक्त कर दूँगा।

विदूषक : तो एक फ्रैंसिस नाम की औरत के साथ मेरी शादी करा दीजिए। मुझे तो इसी में कुछ सार मालूम पड़ता है।

आर्मेडो : मैं अपनी सच्ची आत्मा से कह रहा हूँ कि मै तुझे छोड़ना चाहता हूँ। चाहता हूँ कि तू मुक्त हो जाय। तू अभी तक बन्धन मे पड़ा रहा, तुझे अन्दर बन्द कर दिया गया। किसी तरह की आजादी तुझे नही मिली।

दूषक : सच, सच, अब आप ही मेरी पीड़ा को दूर करेंगे और मुझे मुक्त कर देंगे।

आर्मेडो : मै तुझे मुक्त करता हूँ। अब तेरे ऊपर किसी प्रकार का बन्धन नही है। इसके बदले मे मै तुझ पर केवल इतना काम डालता हूँ कि इस पत्र को (पत्र देता है।) उस ग्रामीण स्त्री जैक्वेनिटा के पास ले जा। इसके लिए तुझे अपना पारिश्रमिक मिलेगा क्योकि मै हमेशा अपने अधीनों को इसी तरह दिया करता हूँ। मौथ आओ।

[प्रस्थान]

लड़का : एक अनुचर की तरह। मै भी चला। अच्छा कौस्टर्ड ! मेरी
विदा।

विदूषक : मेरे अच्छे यहूदी ! वाह, मेरे भले आदमी !

[लड़के का प्रस्थान]

अब मै उसके पारिश्रमिक के लिए सोचूंगा। पारिश्रमिक। ओ ! तीन फार्दिग्स[1] के लिए यही लैटिन शब्द तो प्रयुक्त किया जाता ही है। इस लिनन के फीते की क्या कीमत है ? एक पैंस, नही। मैं तुम्हे तीन फार्दिग्स दूंगा। क्यो ? क्योकि यही पारिश्रमिक है। क्यो ? क्योंकि फ्रेंच क्राउन की अपेक्षा यह अधिक अच्छा नाम है। मैं इस शब्द से खरीद और फरोख्त कभी नही करूँगा।

[बैरोने का प्रवेश]

बैरोने : ओ धूर्त कौस्टर्ड ! खूब मिले।

विदूषक . कृपा करके बताइए श्रीमान्, कि इस पारिश्रमिक मे एक आदमी कितनी लाल रिबन खरीद सकता है ?

बैरोने : यह पारिश्रमिक क्या है ?

विदूषक : श्रीमान् ! कुछ आधी पेनी फार्दिग।

बैरोने : अरे, तीन फार्दिग की रेशम।

विदूषक : मै आपको धन्यवाद देता हूँ श्रीमान्। परमात्मा आपकी रक्षा करे !

बैरोने : ठहरो धूर्त गुलाम ! मैं तुमसे एक काम लेना चाहता हूँ। तुम

---

१. Remuneration : पारिश्रमिक। लैटिन भाषा में इस शब्द का अर्थ तीन फार्दिग्स है। फार्दिग एक सिक्का होता है।

इस काम के करने से मेरे कृपा-पात्र बन जाओगे। जैसा मैं कहूँ, वैसा एक काम मेरे लिए कर दो।

विदूषक : कब कराना चाहेंगे आप उस काम को ?

बैरोने : इसी दुपहर के बाद।

विदूषक : अच्छा मैं कर दूंगा श्रीमान् ! विदा।

बैरोने : अरे, वाह, तुम्हें कुछ पता तो है नहीं कि वह काम क्या है ?

विदूषक : जब मैं उसे कर चुकूंगा तब जान लूंगा उसे श्रीमान् !

बैरोने : नहीं बदमाश ! तुम्हे पहले ही पता होना चाहिए उसका।

विदूषक अच्छा, तो कल सुबह मैं आपकी सेवा मे उपस्थित होऊँगा।

बैरोने . आज दुपहर के बाद ही वह काम होना चाहिए। सुनो। काम यह है सिर्फ। राजकुमारी बाग मे शिकार के लिए आई हुई है, उसके साथ एक सुशील स्त्री है। जब मुखो से मधुर स्वर निकलते हैं तो वे उसी का नाम लेते है। रोजालिन कहकर वे उसको पुकारते हैं। उससे मिलकर उसके श्वेत हाथ मे ले जाकर तुम इस गुप्त पत्र को दे देना। यह तुम्हारा पुरस्कार है। जाओ।

[उसे एक शिलिंग देता है।]

विदूषक : पुरस्कार ! ओ अच्छा पुरस्कार, पारिश्रमिक से अच्छा ! ग्यारह पैस उससे अच्छे है। अहा, प्रिय पुरस्कार ! अवश्य श्रीमान् मैं इसे अवश्य करूँगा। पुरस्कार, पारिश्रमिक !

[प्रस्थान]

बैरोने ओ, क्या मैं सचमुच प्रेम करता हूँ ? क्या मैं, जो प्रेम का तिरस्कार किया करता था, इसके वश मे हो गया हूँ ? मैं तो प्रेम मे भरी हुई आहो को कोड़ा लगाकर दूर भगाने वाला था, इस सारे व्यापार का कटु आलोचक था, इस प्रेम के ऊपर पहरेदार था और उस लड़के के सामने अपने पाखण्डी ज्ञान को

प्रदर्शित करता था। स्थूल नश्वर वस्तुओ की ओर मेरा आकर्षण नही था। यह आधा अधा, आवारा, पुकारने वाला, सिर पर 'हुड' लगाने वाला लड़का। यह बौना डॉन क्यूपिड[1] जो प्रेम-गीतो का देवता, मुड़े और बँधे हुए हाथों का स्वामी, आहो और दु ख-भरी पुकारो का अधिपति, सभी विक्षिप्त, अभावग्रस्त भटकने वालो का अधिकारी, पैटीकोट के खुले हिस्से का भयानक राजा, मोजो के खुले हुए हिस्सो का सम्राट्, तीव्र-गति से भागने वाले उन धार्मिक अधिकारियो का एकमात्र शासक और नियन्त्रक, जो नैतिकता के विरुद्ध अपराध करने वालो को दण्ड देते है। ओ मेरे हृदय! मै उसके क्षेत्र का एक सैनिक अधिकारी होकर एक रस्सी पर नाचने वाले के छल्ले की तरह उसके रगीन फीते पहनूं!

क्या? मै प्रेम करता हूँ, मै पीछे फिरता हूँ; मै एक पत्नी की खोज मे हूँ। एक ऐसी स्त्री की खोज में जो जर्मन घंटा-घडी की तरह हो कि सदा उसकी मरम्मत होती रहे और सदा अपने फ्रेम से निकली हो, और हाथ की घड़ी होकर कभी ठीक नही चलती हो लेकिन उस पर देखभाल हो जिससे वह फिर भी ठीक चल सके। लेकिन प्रतिज्ञा तोड़ना तो सबसे बुरी बात है और फिर उन तीनो मे से उस सबसे बुरी से प्रेम करना जो आजाद और आवारा-सी सफेद औरत है और जिसकी मखमली भौहे है। उसकी आँखे बिलकुल दो काली गेदो की तरह है।

हाँ, हाँ, सच, वह आदमी तो ऐसा है जो काम कर देगा चाहे आरगस उसका काचुकीय और हर तरह से उसकी देखभाल करने वाला हो। मै उसके लिए आहे भरने, उसकी प्रतीक्षा

१. कामदेव।

करने, उसके लिए भगवान् से प्रार्थना करने जाता हूँ। अगर मैं लापरवाही करूँगा तो फिर कामदेव, अपनी भयानक शक्ति से उससे दारुण व्यथा पैदा कर देगा। अच्छा तो मैं अवश्य प्रेम करूँगा, लिखूंगा, आहें भरूँगा, प्रार्थना करूँगा, वेदना-भरी पुकार मेरे हृदय से उठेगी। किसी न किसी से तो मनुष्य प्रेम करता ही है।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

स्थान : उद्यान

[राजकुमारी, एक वनवासी तथा राजकुमारी की सहेलियाँ और सरदारों का प्रवेश]

राजकुमारी : क्या वे ही सम्राट् थे जो उस पहाड़ी के सीधे चढाव पर अपने घोडे को बुरी तरह मार रहे थे ?

बौयेट : मैं तो जानता नही लेकिन मेरे विचार से वे नहीं थे।

राजकुमारी : कोई भी हो लेकिन उनकी चढने की प्रवृत्ति है।

सरदारो ! आज हम यहाँ अपना काम कर लेंगे और शनिवार को फ्रास को वापिस लौट जाएंगे। अच्छा, तो मेरे मित्र वनवासी ! वह झाडी कहाँ है जहाँ खडे होकर हम हत्यारे को पास बुला सकती है।

वनवासी पास ही उस वन-भूमि के किनारे है जहाँ खडी होकर आप सबसे सुन्दर निशाना लगा सकेंगी।

राजकुमारी मैं अपनी सुन्दरता को धन्यवाद देती हूँ। मै जो निशाना लगाती हूँ, स्वय सुन्दर हूँ, इसके ऊपर तुम सबसे सुन्दर निशाने की बात कहते हो।

वनवासी . श्रीमती ! मुझे क्षमा करिए, मेरा मतलब यह नही था।

राजकुमारी : क्या, क्या ? पहले मेरी प्रशंसा करके फिर उससे इन्कार करते हो !

ओ अल्प-जीवी गर्व ! क्या मै सुन्दर नही हूँ ? हाय ! कैसे

दु:ख की बात है !

वनवासी : श्रीमती ! आप सुन्दर है, मै स्वीकार करता हूँ।

राजकुमारी : नही, अब इस तरह झूठी बाते बनाकर मुझे मत बहकाओ। जहाँ सुन्दरता है ही नही वहाँ प्रशंसा कभी भी उसको नही ला सकती। मेरे अच्छे दर्पण को पकड़ो। यही सारी सचाई को प्रकट करेगा। बुरी बातों के बदले यदि अच्छा और सुन्दर वापिस किया जाय तो यह उचित से भी अधिक होगा।

वनवासी : आप पूर्ण-रूपेण सुन्दरी है।

राजकुमारी : अच्छा देखना, अपने गुण से ही मै अपनी सुन्दरता को बचाऊँगी। सुन्दरता के विरुद्ध इस तरह का विचार, ठीक है इन दिनो के लिए। जो हाथ देने वाला है चाहे वह बुरा क्यो न हो, फिर भी उसकी प्रशसा होगी। लेकिन चलो अब। मेरा धनुष। अब, दया वध करने के लिए जाती है, लेकिन अच्छी तरह निशाना लगाकर वध कर देना बुरा समझा जाता है। इस तरह मै अपने सम्मान की रक्षा करूँगी इस शिकार मे, किसी को आघात नही पहुँचाऊँगी क्योंकि मेरी करुणा उसको मुझे करने नही देगी। यदि मैने आघात पहुँचा भी दिया तो यह तो केवल अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए था। इसका उद्देश्य वध करना नही था बल्कि प्रशसा प्राप्त करना था। और इसीलिए यह कभी-कभी तो निर्विवाद सत्य मालूम होता है कि जब हम केवल प्रशसा और यश के लिए अपना पूरा हृदय घृणित अपराधों के प्रति लगा देते है तो हमारा यश या गौरव इनका अपराधी हो जाता है। जैसे—जिस हरिण को हानि पहुँचाने की मेरे हृदय मे तनिक भी इच्छा नही है, उसका रक्त मै केवल अपनी प्रशसा करवाने के लिए बहाऊँगी।

बौयेट : क्या वे कठोर स्वभाव वाली स्त्रियाँ इसी प्रशसा के लिए अपने पतियो पर शासन नही करती हे ?

राजकुमारी : केवल प्रशंसा के लिए। ऐसी स्त्री जो अपने स्वामी पर शासन कर सकती है, उसकी तो प्रशसा हम करेगी।

[विदूषक का प्रवेश]

बौयेट : यह आया उस समूह का एक सदस्य।

विदूषक : भगवान् तुम सबको दफन करे! इन सब महिलाओ की सिर-मौर कौन हे ?

राजकुमारी : इसका तो पता तुम्हे दूसरो को देखकर लग जाएगा जिनके सिर नही हे ?

विदूषक : सबसे बडी और ऊँची श्रीमती कौन-सी हे ?

राजकुमारी : सबसे बडी मोटी और सबसे ऊँची।

विदूषक : हाँ, सबसे मोटी और सबसे ऊँची! यही सही। सत्य तो सत्य है। श्रीमती। यदि आपकी कमर इतनी पतली होती जितनी मेरी बुद्धि है तो इन महिलाओ मे से किसी का कमरबन्द आपके ठीक आ जाता। क्या आप ही इनकी स्वामिनी नही हे ? क्या आप यहाँ सबसे अधिक मोटी नही है ?

राजकुमारी · आप चाहते क्या हे श्रीमान्! क्या काम है आपका ?

विदूषक : श्रीमान् बैरोने का किसी श्रीमती रोजालिन के नाम पत्र लाया हूँ मे।

राजकुमारी · ओ तुम्हारा पत्र, तुम्हारे लिए पत्र। मेरा बड़ा अच्छा मित्र है वह तो। मेरे अच्छे मित्र! इधर बगल मे आकर खड़े हो जाओ। बौयेट! आप इस पत्र को खोलिए तो। सील तो तोडिए!

बौयेट : जो आज्ञा। पर यह पत्र तो गलत जगह पर आ गया। यहाँ किसी

के नाम नही है यह। यह तो जैक्वेनिटा के लिए लिखा गया है।

राजकुमारी : सच, हम इस पत्र को पढेगी। खोलिए इसको, हाँ, सभी सुनो।

बौयेट : (पढ़ता है) "भगवान् की सौगन्ध, यह तो एक अकाट्य सत्य है कि तुम सुन्दरी हो। यह भी सत्य है कि तुम्हारा रूप मनोरम है और यह भी सत्य है कि तुम अपने लुभावने रूप के कारण आकर्षक हो। सुन्दर से भी अधिक सुन्दर, मनोरम से भी अधिक मनोरम, सत्य से भी अधिक सच्ची बात है यह। अपने इस वीर सेवक पर कृपा करो। उस गौरवशाली और प्रसिद्ध सम्राट् कौफेचुआ की आँखे उस घृणित और दीन भिखारिन जैनेलोफोन के ऊपर लग गई थी और वह था, जो ठीक यह कहता—वेनी, वीडी, वीसी[1], जिनको यदि आम बोलचाल की भाषा मे परिवर्तित करके देखा जाय तो—ओह! यह आम बोली भी कितनी बुरी और न समझ मे आने वाली है! वीडेलिसेट : वह आया, उसने देखा और उसने जीत लिया। पहली बात तो वह आया; दूसरी, उसने देखा; तीसरी, उसने जीत लिया। कौन आया?—सम्राट्। क्यो आया वह?—देखने के लिए। क्यों देखा उसने?—जीतने के लिए। किसके पास आया था वह?—भिखारिन के पास। क्या देखा था उसने?—भिखारिन को। किसको सम्राट् ने जीत लिया?—भिखारिन को। इसका निष्कर्ष विजय निकला। किसकी विजय?—सम्राट् की। वन्दिनी धनी-मानी हो गयी। कौन?—भिखारिन। अन्त हुआ इसका शादी मे। किसके लिए?—सम्राट् के लिए। नही, एक मे दोनों के लिए या दोनों मे एक के लिए। अच्छा तो तुलना इस प्रकार चलती है कि मै तो

---

१. Veni, Vidi, Vici : तीन लैटिन भाषा के शब्द

सम्राट् हूँ और तुम एक भिखारिन हो । तुम्हारी निम्न स्थिति इसकी साक्षी है। क्या मैं तुम्हारे प्रेम का अधिकारी हो सकता हूँ ?—अवश्य। क्या मै तुम्हारे प्रेम के लिए तुम से आग्रह कर सकता हूँ—?अवश्य। क्या मै तुम्हारे प्रेम के लिए तुमसे प्रार्थना कर सकता हूँ ?—अवश्य करूँगा मैं। क्या तुम अपने फटे-पुराने चीथड़ो को बहुमूल्य वस्त्रो से बदलना चाहोगी और अपनी निम्न स्थिति के बदले उच्च सम्मान प्राप्त करना चाहोगी ? क्या तुम अपने लिए मुझे प्राप्त करना चाहोगी ? तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करता हुआ मैं तुम्हारे पैरो को अपने ओठो से चूम रहा हूँ। तुम्हारी तस्वीर की तरफ मेरी आँखे लगी हुई हैं और तुम्हारे प्रत्येक भाग पर मेरा हृदय बसा हुआ है।

तुम्हारा सबसे प्यारा—

डॉन ऐड्रियानो डि आर्मेडो।"

"इस तरह पुकारते हुए आपने उस भयनक नेमीन सिह को सुना जिसका वध देव जूपिटर ने किया था और आपके सामने ही वह मैमनी है जो उसका शिकार बनी खड़ी हुई है। वह बड़ा सकुचाते हुए आगे पैर बढा रहा है और अपने खाने के लिए वह यह सब कुछ खेल खेलेगा। दीनात्मा ! अगर तुम प्रयत्न भी करो तो भी तुम क्या हो आखिर ? उसके क्रोधावेश का भोजन और उसकी माँद मे खाने और उपभोग करने की सामग्री।"

राजकुमारी : यह कौन मजेदार आदमी है जिसने इस पत्र को लिखा है ? कौन-सा यह दिशा बताने वाले बनावटी मुर्गे-जैसा प्राणी है ? क्या आपने कभी इससे अच्छा पत्र सुना ?

बौयेट · हाँ, शैली तो मुझे इसकी याद है, बाकी तो मै बडे धोखे मे पड़ गया हूँ।

राजकुमारी : अगर और जगह इसको आपने पढ़ा है, फिर तो आपकी स्मृति अच्छी नही है ।

बोयेट : यह आर्मेडो तो एक स्पेन-निवासी है जो राजदरबार मे रहता है, बिलकुल अजीब आदमी है, पूरा उस सनकी मोनार्को-जैसा लगता है जो रानी ऐलिजाबेथ के दरबार में रहता था । यहाँ सम्राट् और उनके साथियों का मनोरंजन करने के लिए रहता है।

राजकुमारी . हाँ, तुम बोलो ! यह पत्र किसने दिया था तुमको ?

विदूषक : मैने आपसे कहा था, मेरे स्वामी ने ।

राजकुमारी किसको दिये जाने के लिए था यह ?

विदूषक : मेरे स्वामी के यहाँ से मेरी स्वामिनी के लिए दिये जाने को था ।

राजकुमारी . किस स्वामी के यहाँ से और किस स्वामिनी को ?

विदूषक . मेरे स्वामी बैरोने का यह पत्र फ्रास की एक श्रीमती रोजालिन को दिये जाने को था ।

राजकुमारी : तुम भूल से दूसरे पत्र को यहाँ ले आये हो । आइए सरदारो ! चले यहाँ से ।

प्रिय सखी ! इसको रख लो । किसी और दिन यह तुम्हारे लिए होगा ।

[राजकुमारी का प्रस्थान]

बोयेट : निशाना लगाने वाली कौन है ? कौन है, बताओ ?

रोजालिन ' क्या मै बताऊं तुम्हे इसे ?

बोयेट : अहा ! मेरी सुन्दरता की देवी ।

रोजालिन : वह जिसके हाथ मे धनुष है । क्या अच्छा काटा !

बोयेट : श्रीमती हरिण मारने जा रही है लेकिन मुझे फाँसी पर लटका देना अगर जिस साल तुम शादी करो उसी साल यह न हो कि

कोई आदमी एक व्यभिचारिणी स्त्री का पति बन गया । क्या अच्छा उत्तर है !

रोज़ालिन अच्छा तो फिर मै निशाना लगाने वाली हूँ ।

बोयेट . तुम्हारा हरिण कौन है ?

रोज़ालिन अगर सीगो[1] के द्वारा ही हम देखे तो तुम हमारे पास न आना । अच्छा उत्तर रहा न ?

मेरिया बौयेट ! तुम अभी तक उससे झगड रहे हो जबकि वह तुम्हारे सिर का निशाना लगाकर तुम्हे मारती जाती है ।

बोयेट लेकिन वह स्वय नीचे चोट खा रही है । क्या मैने अब मार दिया उसे ?

रोज़ालिन क्या मै एक पुरानी कहावत तुम्हे सुनाऊँ कि जब फ्रास का बादशाह पेपिन एक छोटा-सा बच्चा था वह एक पूरा आदमी था । यह चोट[2] वाली धुन को छूता है ।

बौयेट इसी तरह इतनी ही पुरानी कहावत से मै तुम्हे उत्तर देता हूँ कि जब ब्रिटेन की रानी गिनीवर एक छोटी वच्ची थी, वह एक पूरी स्त्री थी । यह भी चोट की धुन को छूता है ।

रोज़ालिन तुम उस बात को नही गिरा सकते, नहीं गिरा सकते ।

---

१. Horns यह शब्द व्यभिचारिणी पत्नी के पति के लिए भी प्रयुक्त होता है । इसका दूसरा अर्थ हरिण भी है । सींग भी इसका अर्थ है । सींग उस अभागे की ओर सकेत करते है क्योकि उसी के सिर पर ये सींग बांधे जाते थे ।

२ Hit it : एक संगीत की धुन । दूसरा अर्थ है मारना, टक्कर देकर गिराना । इस शब्द पर पन का प्रयोग हुआ है । हमने इस शब्द के लिए चोट शब्द का प्रयोग किया है ।

भले आदमी ! तुम इसको गिरा ही नही सकते ।

बौयेट : मै नही कर सकता, मै नही कर सकता, नही कर सकता, दूसरा कर सकता है ।

[रोजालिन और कैथराइन का प्रस्थान]

विदूषक : अरे वाह ! सच कितना अच्छा रहा ! दोनों ने खूब बात पर बात बिठाई !

मेरिया : निशान पर गजब का निशाना लगा क्योकि इन दोनो ने ही उसे लगाया था ।

बौयेट : निशान, ओ, सिर्फ उस निशान को देखो[1] । श्रीमती निशान की बात कह रही है । अगर हो सके तो उस निशान के बीच एक काँटा गढवा दो जिस पर निशाना लगाया जा सके ।

मेरिया : सच, तुम्हारा हाथ बाईं तरफ को बहुत निकला हुआ है ।

विदूषक निस्सदेह उनको नजदीक ही निशाना लगाना चाहिए । नही तो वे कभी भी उस कपडे के टुकड़े पर निशाना नही लगा पायेगे ।

बौयेट : अगर मेरा हाथ बाहर है तो फिर तुम्हारा हाथ अन्दर होगा ।

विदूषक : तो फिर वह निशान के बीच खूंटी गाडकर ऊपर की ओर निशाना लगायेगी ।

मेरिया : चलो, चलो, तुम तो चिकनी-चुपड़ी बाते करते हो । तुम्हारे ओठ इनसे गन्दे हो रहे हैं ।

विदूषक : श्रीमान् ! ऐसी चुभनी मारों के लिए तो वह आपसे कही

---

१. Mark : इस शब्द पर पन का प्रयोग किया गया है । निशान और देखना इस शब्द के दो अर्थ हैं । इसी प्रकार यह दृश्य ही इसी वाक्पटुता के प्रदर्शन के निमित्त रखा गया है ।

अधिक तेज और कठोर है। आप तो गेंद के खेल (Bowls) से उसको चुनौती दीजिए।

बोयेट . मैं बहुत ज्यादा मजाक[1] पसन्द नहीं करता। अच्छा, मेरे अच्छे उल्लू। विदा।

[बोयेट तथा मेरिया का प्रस्थान]

विदूषक : सच, बड़ा ही गँवार, सीधा और मूर्ख था। ओ भगवान्, मैंने और सभी स्त्रियों ने मिलकर उसको कैसे नीचा दिखाया था। बड़े अच्छे मजाक चले थे, बहुत ही सुन्दर वाक्-चातुर्य। जब यह इसी तरह आसानी से चलकर खत्म हो जाए और इतना ही भद्दापन इसमें आये जितना था, तभी अच्छा रहता है। और दूसरी तरफ आर्मेडो, एक तरफ, ओ! क्या ही मजेदार आदमी है! उसको किसी स्त्री के सामने आते देखना, उसका पंखा पकड़कर चलते और अपना हाथ चूमते हुए देखना कितना मजेदार लगेगा! कैसी मधुरता के साथ वह प्रतिज्ञा ग्रहण करेगा और उसका अनुचर दूसरी तरफ, वही जो थोड़ी-सी वाक्चातुरी रखता है! आह भगवान्! यह तो सबसे अधिक करुणापूर्ण सम्बन्ध है। सोला, सोला![2]

[प्रस्थान]

---

१. Rubling : इस शब्द पर पन का प्रयोग है। मजाक और गेंद के खेल के मैदान की ऊबड़-खाबड़ जमीन ये इसके दो अर्थ हैं। चूँकि Bowls की बात छिड़ गई थी, उसी सिलसिले में यह शब्द आया है। हमने भावार्थ की ओर ही विशेष ध्यान रखते हुए सवादों को रखा है।

२. sola sola शिकार करते समय जो शृंगी बजाई जाती है उसकी आवाज की नकल विदूषक करता है।

दृश्य २

स्थान : उद्यान

[भीतर हल्ला]

[डल ढोगी ज्ञानी होलोफर्नीज तथा क्यूरेट (Curate)
नैथेनियल का प्रवेश]

नैथेनियल : बडा अच्छा खेल रहा। सत्य और सद्भावना से प्रेरित होकर किय गया था।

होलोफ़र्नीज : जैसा आप जानते है, वह हरिण पूरी तरह स्वस्थ और एक सेब की तरह पका हुआ था जो अब नभ यानी आकाश अन्तरिक्ष यानी स्वर्गलोक के कान में एक रत्न की तरह लटका हुआ है, और एक सेब की तरह ही पृथ्वी, धरती, भूमि या वसुन्धरा पर एक क्षण-भर मे गिर पड़ता है।

नैथेनियल : सच, श्रीमान् होलोफर्नीज ! कम से कम एक विद्वान् की तरह आपने अलग-अलग विशेषणो का प्रयोग तो बड़ा मजेदार किया है लेकिन श्रीमान् मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह तो एक हरिण का बच्चा था जो पाँचवे साल मे चल रहा था।

होलोफ़र्नीज . श्रीमान् नैथेनियल, मुझे विश्वास नही।

सिपाही · वह विश्वास नही था, एक-दो साल का हरिण का बच्चा था।

होलोफ़र्नीज . बडी ही मूर्खतापूर्ण बात है फिर भी उसकी गलती की चेतावनी तो है जैसे 'सकेत' का अर्थ खोलते समय 'रास्ते मे' था जैसे कि मानो यह दिखाने के लिए कि अपढ़, अशिक्षित, अज्ञानी, अबोध,असंस्कृत, असभ्य और वहुत ही बेतुका होने से एक हरिण के लिए मेरा 'पंचवर्षीय सुकुमार मृग' रखा गया, उसका उत्तर या कहिए जवाब था।

सिपाही : मैने तो कहा था कि हरिए पूरे सीगो वाला पचवर्षीय मृग नही था बल्कि यह तो द्विवर्षीय हरिण का बच्चा था।

होलोफ़र्नीज़ : बहुत सीधापन यानी भोलापन[1]। ओ घूर्त्त अज्ञान ! कैसा बुरा लगता है तू।

नैथेनियल श्रीमान् ! किसी पुस्तक मे जो आनन्द छिपा रहता है उसका उपभोग इसने कभी नही किया है। इसने न तो कागज खाया है और न स्याही पी है, इसकी बुद्धि बिलकुल खोखली है, यह तो एक जानवर है, मोटी बाते समझता है सिर्फ। ऐसे बेवकूफ हमारे सामने लाए जाते है कि इसके लिए हमे कृतज्ञ होना चाहिए। भावना और रस से पूर्ण हम जैसे व्यक्ति तो बुद्धिमत्ता की बातो मे अपना चित्त लगाने के लिए है। क्योकि जैसे मेरा बेवकूफ या नासमझ हो जाना असम्भव है इसी प्रकार इसको किसी स्कूल मे देखना ऐसा असम्भव है जैसे कोई निरा मूर्ख विद्वान् बनने पर तुल बैठे। लेकिन पुराने पादरी का दिमाग है मेरा, इसीलिए कहता हूँ कि सब ठीक है। बहुत से आदमी जो हवा को नही चाहते मौसम को बर्दाश्त कर ही लेते है।

सिपाही : आप दोनो तो पूरे विद्वान् है। क्या आप अपनी बुद्धि से यह बता सकते है कि मुझे, केन के जन्म पर कौन एक महीने का था जो अभी तक पाँच हफ्ते बडा भी नही हो पाया है।

होलोफ़र्नीज : इन्दु, मेरे अच्छे डल ! इन्दु, मेरे दोस्त डल !

---

१. ज्ञानी इस दृश्य में अपनी लेटिन भाषा की जानकारी को भी व्यक्त कर रहा है इसीलिए पहले अंग्रेजी में एक बात कहकर उसी को लेटिन में कहता है, पहले भी आकाश, नभ आदि पर्यायो के साथ यही था जो सीधापन के साथ है। Twice boiled simplicity कहकर उसने his coctus का प्रयोग किया है, दोनो का अर्थ एक है।

सिपाही : इन्दु क्या होता है ?

नैथेनियल : चन्द्रमा या शशि को ही इन्दु कहते है।

होलोफ़र्नीज़ : जब आदम इस दुनिया में नही था उस समय चन्द्रमा एक महीने का था और जब आदम सौ साल का हो गया तो चन्द्रमा पाँच हफ़्ते का भी नही हुआ। बदले मे यह प्रसंग बैठ गया।

सिपाही : निस्सन्देह ठीक है, बदले मे यह षड्यन्त्र[1] बैठ गया।

होलोफ़र्नीज़ : भगवान् तुम्हे बुद्धि दे, मै कह रहा हूँ प्रसंग बैठ गया न कि षड्यन्त्र।

सिपाही : मै कहता हूँ बदले मे कुरंग[2] बैठ गया क्योंकि चन्द्रमा कभी एक महीने का नही होता और इसके अलावा मै कहता हूँ कि राजकुमारी ने जिसका शिकार किया था वह दो वर्ष का मृग का बच्चा था।

होलोफ़र्नीज़ : श्रीमान् नैथेनियल ! क्या आप हरिण की मृत्यु पर लिखी आशु कविता को सुनेगे ? इस बेवकूफ की बात को मान भी लें कि राजकुमारी ने एक दो वर्ष के मृग के बच्चे को मारा था जिसे मै हरिण कहता हूँ।

नैथेनियल : अच्छा, मित्र होलोफर्नीज ! आगे बढ़िए। कृपा करके इस नीचे दर्जे के मजाक को खत्म करिए।

होलोफ़र्नीज़ : मै अब अनुप्रास अलङ्कार का प्रयोग करूँगा, इससे बड़ी आसानी रहती है :

---

१. Collusion } ये शब्द allusion के साथ ध्वनि मिलाकर चले हैं,
२. Pollusion } सिपाही यहाँ होलोफर्नीज के साथ मजाक करता है।
शब्दो के अलग-अलग अर्थ है इसलिए हिन्दी में उसी तरह की ध्वनि वाले शब्द मिलना कठिन है फिर भी हमने षड्यन्त्र और कुरंग शब्दों के प्रयोग से ध्वनि के साम्य को निभाया है।

क्रीडारत थी राजकुमारी, मारा त्वरित हरिण को रह-रह
था वह शावक, घाव कर दिया, शर से धावित कातर दुस्सह,
भूंके कुत्ते, घाव बढाते, शावक भागा आतुर
जन चिल्लाते, कोलाहल कर शावक हुआ भयातुर
जैसे हरि हरि को हरि हरि का उच्चारण करवाता
हरि का हरि पर क्रन्दन करवा हरि को है पिघलाता,
यो यदि शावक धावन मे वह घाव एक होता है
किंतु शून्य से मूल्य बढाकर दस गुण-सा होता है
एक ओर मे शून्य लगा कर शत उसको कर सकता,
शत शत का यह मूल्य शून्य मे ही है बढकर मिलता।

नैथेनियल : असाधारण प्रतिभा है।

सिपाही : अगर प्रतिभा एक पजा है तो देखिए, किस तरह प्रतिभा से वे उनकी खुशामद[1] कर रहे है।

होलोफर्नीज : यह देन तो साधारणतया मुझको है। सीधी और बहुत सी बेकार की चीज रखने की मूर्ख प्रवृत्ति, जिसके कारण मुझे अनेक रूपो, वस्तुओं, विचारो, कार्यक्रमो तथा अनेक गतिविधिओ आदि का पूरा ज्ञान है। ये सभी चीजे स्मृति से पैदा होती है, मस्तिष्क मे इनका पोषण होता है और अवसर पकने पर इनको बाहर निकाला जाता है लेकिन यह देन उन्ही के लिए अच्छी है जिनके अन्दर यह पूरी तीव्रता लिये हुए है और इसके लिए मै कृतज्ञ हूँ।

---

१. Talent, Claw : पहले शब्द का अर्थ है प्रतिभा, गुण लेकिन talon के ऊपर पन का प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ claw यानी पजा है। फिर claw के भी दो अर्थ है—पंजा और खुशामद करना। इस कारण यहां भी पन है।

नैथेनियल : श्रीमान् ! मै आपके कारण लॉर्ड की प्रशंसा करता हूँ और यही दूसरे नागरिक करेंगे क्योंकि आप उनके बच्चों को अच्छी तरह पढाते है और उनकी पुत्रियाँ आपके नीचे बहुत लाभ उठाती है। आप तो ईसाई धर्म के अच्छे सदस्य है।

होलोफ़र्नीज़ : अगर उनके लडके बुद्धमान है तो उन्हें किसी प्रकार के अध्ययन की कमी नही रहेगी; अगर उनकी पुत्रियाँ इस योग्य हुई तो मै इनको पढाऊँगा लेकिन जो कम बोलता है वह बुद्धिमान् होता है। कोई स्त्री हमे अभिवादन कर रही है।

[जैक्वेनिटा तथा विदूषक का प्रवेश]

जेक्वेनिटा : भगवान् तुम्हे सुखी रखे श्रीमान् पर्सन।

होलोफर्नीज : मास्टर पर्सन ! सिर्फ शकल-सूरत से ही आदमी (Person) ? और अगर कोई काले रग का आदमी है[1] तो बताओ कौन है वह ?

विदूषक . श्रीमान् स्कूलमास्टर, जो एक बडे खाली शराब के बर्तन की तरह है।

होलोफ़र्नीज़ . काले रग के प्याले जैसा। इस मूर्ख में बडी वाक्‌चतुरता है, किसी सख्त से सख्त धातु को भी पिघलाने के लिए काफी आग है। एक सुअर के लिए पर्याप्त मोती है। खूब ! बहुत अच्छा !

जेक्वेनिटा ' अच्छे मास्टर पार्सन। कृपा करके मुझे इस पत्र को पढकर सुना

---

१. Person, Parson, Perst : जैक्वेनिटा और विदूषक के आते ही पन शुरू हो जाता है। स्त्री होलोफर्नीज को श्रीमान् पर्सन कहकर पुकारती है। पर्सन का अर्थ आदमी भी है,फिर होलोफर्नीज कहता है कि अगर कोई पर्स्ट है तो बताओ कौन है वह ? Perst शब्द को भी Person के साथ मिलाने के लिए रखा गया है। Perse का अर्थ है 'काले रंग का'। इसके बाद विदूषक Hogshead : एक बड़े बर्तन की बात करता है जिस पर होलोफर्नीज Pessing Hogshead कहकर उसको शाबाशी देता है। इस तरह यह पन का खेल चलता है।

दे। कौस्टर्ड ने मुझे लाकर इसे दिया है। डॉन आर्मेडो ने भेजा है इसे। कृपा करके पढ दे।

होलोफ़र्नीज़ : 'फॉस्टस ! जब तुम्हारा सारी भेडो का झुड शीतल छाया के नीचे बैठा हुआ चर रहा हो''[1]–बस इसी तरह है आगे। अहा, 'मेरे अच्छे पुराने मैट्युअन ! जैसे यात्री वेनिस के बारे मे कहता है वैसे ही मै तेरे बारे मे कह सकता हूँ। 'जिसने तुझे नही देखा है, वह तेरी सुन्दरता को क्या जान पाएगा।'

पुराने मैट्युअन ! पुराने मैट्युअन। जो तुझे नही समझता, तुझसे प्यार भी नही करता।

(उट, रे, सोल, ला, मी, फा)[2] क्षमा करिए श्रीमान्। क्या विषयवस्तु है ? या जैसे कि होरेस अपनी पुस्तक मे कहता है— अरे क्या कविता है ? ओ !

नथेनियल : हाँ और पूरी विद्वत्ता से भरी हुई है।

होलोफ़र्नीज़ . अच्छा तो मुझे इसकी पक्तियाँ या एक पद ही सुना दीजिए।

नैथेनियल : (पढता है) "अगर प्रेम से ही मेरी प्रतिज्ञा नष्ट हो जाती है तो फिर प्रेम करने की प्रतिज्ञा मै कैसे कर सकता हूँ ? मनुष्य के हृदय मे विश्वास तभी स्थिर रह सकता है जब वह किसी सुन्दरी के प्रति शपथ ले ले। यद्यपि स्वय के प्रति मै विश्वासघाती होऊँगा लेकिन तुम्हारे प्रति तो मै पूरा विश्वास और प्रेम रखूंगा। जो विचार तुम्हारे लिए झुके हुए ओसियर पेडो की तरह है वे मेरे लिए

---

१. ये शब्द मैंटुआ के 'बैप्टिस्टा स्पैग्नोली के ईकलोग्स' (Eclogues of Baptista spagnoli of Mantua) से है जो शेक्सपियर के समय में स्कूलो में टेक्स-बुक की तरह पढ़ाई जाती थी। पत्र लेटिन भाषा में है अधिकतर जिसे स्त्री नहीं समझ पाती है।

२. ut, re, sol, la, mi, fa : एक गाने की सरगम।

ओक के पेड़ो की तरह है। उसकी पत्तियों को पढ़ लेना। मैंने तो तुम्हारी आँखों को ही अपनी पुस्तक बनाया है जहाँ वे सभी आनन्द समाहित है जो कला दे सकती है। यदि ज्ञान प्राप्त करना ही जीवन का उद्देश्य हो तो केवल तुमको जान लेना ही पर्याप्त है। जो वाणी तुम्हारी प्रशसा करे, वह पूर्ण विद्वत्ता से भरी हुई है। वह व्यक्ति अज्ञानी है जिसके हृदय मे तुम्हें देखकर कौतूहल और आश्चर्य की भावनाएँ नहीं उठतीं। मै तुम्हारे अगो की प्रशंसा कर रहा हूँ, वह मुझे कुछ ही प्रशंसा लगती है तुम्हारी—तुम्हारी आँखो मे तो दिव्य आभा है और तुम्हारी आवाज उसकी भयानक गर्जना के समान है। लेकिन जब उसी आवाज मे क्रोधावेश नहीं रहता तो वह मधुर संगीतमय हो जाती है। तुम तो कोई स्वर्ग की अमर देवी हो। प्रिये! मेरे इस अपराध को क्षमा कर देना कि मै स्वर्ग की देवी की प्रशंसा अपनी इस स्थूल वाणी से कर रहा हूँ।"

होलोफ़र्नीज़ : आप इसमे स्वर की छूट को ही नही देखते, इसलिए पूरी ध्वनि के साथ पढ ही नही पाते। लाइए। मुझे पढने दीजिए उसे। इन पंक्तियो की लय तो मिल जाती है लेकिन इसमें काव्य का आनन्द तो नही है। ओविडस नैसो था आदमी तो। क्यों था नैसो ? क्योंकि वह कल्पना की मधुरता को पहचानता था। ये नये प्रयोग वगैरह कुछ नही है। ऐसा ही तो कुत्ता अपने मालिक से, बन्दर अपने रखवाले से थका घोडा अपने सवार से करता है। लेकिन सुकुमारी! क्या यह पत्र तुम्हारे लिए लिखा गया है ?

जैक्वेनिटा : जी श्रीमान्। एक कोई बडे अजीब लॉर्ड बेरोने है, उन्होने ही लिखा है।

होलोफ़र्नीज : ऊपर पते की जगह जो लिखा है उसे देखता हूँ मैं—"अपूर्व सुन्दरी लेडी रोजालिन के बर्फ के समान श्वेत हाथ मे समर्पित।"
मै उस व्यक्ति का नाम देखने के लिए जिसने यह पत्र उपरि-लिखित महिला को लिखा है, फिर एक बार पत्र पढना चाहता हूँ।
"तुम्हारा सदा अपना ही,
बैरोने।"
सर नैथेनियल। यह बैरोने तो सम्राट् के साथ प्रतिज्ञा लेने वाला एक व्यक्ति है और यहाँ इसने राजकुमारी के साथ रहने वाली एक स्त्री के लिए पत्र लिखा है जो अकस्मात् ही या यो कहे कि ठीक कायदे से चलता हुआ भूल से यहाँ आ पहुँचा है। जाओ मित्र। शीघ्र जाकर यह पत्र सम्राट् के हाथो मे दे दो। इसकी बडी आवश्यकता हो सकती है। अब मेरे प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिए रुककर यहाँ समय नष्ट मत करो। जाओ, मै तुम्हे अपने काम से छुट्टी देता हूँ। विदा।

जेक्वेनिटा . अच्छे कौस्टर्ड ! मेरे साथ चलो। भगवान् तुम्हे सुखी रखे।

विदूषक : चलो, तुम्हारे साथ चलता हूँ लडकी !

[विदूषक और जैक्वेनिटा का प्रस्थान]

नैथेनियल श्रीमान् ! परमात्मा से डरकर आपने बड़ी धार्मिकता के साथ यह काम किया है और जैसे किसी पादरी ने कहा है—

होलोफर्नीज बस श्रीमान् ! पादरी की बात मुझसे मत करिए। मै इन प्रशसा-सूक्तियो से डरता हूँ। हाँ तो फिर उस कविता की बात छेडें, क्यो श्रीमान् नैथेनियल ! क्या आपको वह पसन्द आई थी ?

नैथेनियल : बहुत खूब लिखी है।

होलोफर्नीज : आज मै अपने एक शिष्य के पिता के घर खाना खाने जाऊँगा जहाँ यदि आप कृपा करके आ सकें तो मै बिना किसी सकोच के,

जैसा मेरा उस शिष्य के माता-पिता के साथ खुला व्यवहार है, यह सिद्ध करूँगा कि वह कविता बिलकुल मूर्खतापूर्ण थी जिसमे न तो किसी प्रकार का शब्द-चातुर्य था, न कोई प्रयोग था और न सच्चे काव्य की आत्मा ही उसमे थी। कृपा करके आइए वहाँ। मै आपके सत्सग के लिए प्रार्थना करता हूँ।

नैथेनियल : इसके लिए आपको धन्यवाद। बाइबिल में भी लिखा है कि सत्सग ही जीवन का सुख है।

होलोफ़र्नीज़ : हाँ, बाइबिल का यही तो अकाट्य निष्कर्ष है! (सिपाही से) श्रीमान्। मै आपको आमन्त्रित करता हूँ, अब आप 'न' नही कहेगे। चलिए। श्रेष्ठ सज्जन अपने खेल मे लगे हुए है, हम भी अपना मनोरजन करें।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

स्थान : उद्यान

[अकेले बैरोने का हाथ में एक कागज़ लिये हुए प्रवेश]

बैरोने : सम्राट् तो हरिण का शिकार कर रहे है। मै अपने आपका शिकार कर रहा हूँ। उन्होने तो एक जाल बिछा दिया है और मै आरी के दो दाँतों के बीच घिरा मेहनत कर रहा हूँ। वे दाँते जो लगातार चक्कर से चलते है, न यह शब्द ठीक नही है। अच्छा, तो वेदना मिट जा। कहते है कि मूर्ख ने यही कहा था और यही मै कहता हूँ तो फिर मै मूर्ख हूँ। वाह, क्या बात सिद्ध हुई है। भगवान् की सौगन्ध, यह प्रेम तो बिलकुल ऐजेक्स[1] की तरह

---

१. Ajaks : जब एकिलीज की ढाल ऐजेक्स को नहीं दी गई तो वह अधीर हो उठा और पागलपन के से आवेश में आकर उसने एक भेड़ो के झुंड को शत्रु की सेना समझकर काट डाला।

पागल और आवेशपूर्ण है। उसने भेड़ो को काट डाला था और यह मुझे मारता है तो फिर मै एक भेड़ हुआ। वाह, फिर मेरे ही पक्ष मे कितनी अच्छी बात सिद्ध हुई है! मै प्रेम नही करूँगा और अगर मैं करूँ तो मुझे फाँसी पर लटका देना। सच कहता हूँ, मैं कभी भी प्रेम नही करूँगा। वस मै सिवाय उसकी आँख के, मै प्रकाश के सामने हाथ करके कहता हूँ कि सिवाय उसकी आँख के मै उससे विल्कुल प्रेम नही करूँगा, हाँ, वस करूँगा तो उसकी दोनो आँखो के लिए ही सिर्फ। अरे, मै तो झूठ वोलने के सिवाय इस दुनिया मे कुछ करता ही नही और अव सरासर झूठ वोल रहा हूँ। भगवान् की सौगन्ध, मै तो प्रेम करता हूँ और इसी ने मुझे कविता वनाना और वेदनामय रहना सिखाया है। यह मेरी कविता का एक भाग है, और यह मेरी वेदना है। उसके पास तो मेरा एक सौनैट पहले ही पहुँच चुका है, एक विदूषक उसे ले गया था। एक वेवकूफ ने भेजा था और एक स्त्री के पास है वह।

प्रिय विदूषक, प्रियवर मूर्ख, प्रियतमा स्त्री! सच कहता हूँ, अगर वे तीनो भी इस जाल मे फँस जाएँ तो फिर तनिक भी चिन्ता व डर नही रहे। पत्र लेकर कोई आ रहा है यहाँ। भगवान् उसको वह सामर्थ्य और साहस दे जिससे वह अपने हृदय की आहों को वाहर निकाल सके।

[वह एक पेड़ पर चढ़ जाता है। एक कागज लिये सम्राट् का प्रवेश]

सम्राट्: अरे!

वैरौने: काम देवता! आगे वढकर अपना कार्य सम्पन्न करो। तुमने अपने वाणो से उसके हृदय को वेध दिया है। सच, यह तो वड़ा रहस्य है।

सम्राट्: (पढता है) "वह दिव्य स्वर्णिम आभा वाला सूर्य भी प्रात:काल

अपनी किरणों से गुलाब पर पड़ी ओस की बूँदो को इतनी मधुरता से नही चूमता जितनी तुम्हारी आँखो से खिलती नव-किरणे मेरे गालो पर बिखरी रात्रिरूपी ओस की बूँदों को चूमकर नव प्रभात का-सा आनन्द मेरे अन्तर् मे जगाती है । जैसा तुम्हारी सुन्दर मुखाकृति का प्रकाश मेरी आँखो मे भरे आँसुओं के बीच होकर खिलता है, उससे आधा भी उस रजत चन्द्र का प्रकाश निर्मल जल के भीतर नही खिलता। आँखो से बहने वाले प्रत्येक आँसू मे तुम्हारी आभा व्याप्त है, प्रत्येक बूँद मे तुम समाई हुई हो । इस तरह मेरी वेदना मे पूर्ण विजय का गर्व लिये हुए तुम मुझे पूरी तरह अपने वश मे कर चुकी हो। बस केवल मेरी आँखों से बहते आँसुओं को देखो, मेरी पीड़ा के भीतर से वे तुम्हारे गौरव का प्रदर्शन करेगे । लेकिन अपने आपसे ही प्रेम करने वाली अभिमानिनी बनकर मत रहना क्योंकि तब तो तुम मेरे आँसुओ को दर्पण की तरह देखने लगोगी और मुझे और भी रुलाओगी ।

ओ सम्राज्ञी ! तुम्हारे इस अद्वितीय रूप की कहाँ तक प्रशसा करूँ ? न तो कल्पना इतने ऊपर तक जा सकती है और न साधारण प्राणि-जगत् की भाषा मे इसका वर्णन किया जा सकता है ।"

वह मेरे हृदय की वेदना को कैसे जानेगी ? मै इस पत्र को यही डाल देता हूँ। मधुर पत्तियो ! इस मूर्खता पर अपनी छाँह रखना । कौन आ रहा है इधर ?

[सम्राट् छिपकर खड़े हो जाते है । लौगेविले का एक कागज लिये प्रवेश ।]

क्या ? लौगेविले कुछ पढ़ रहा है ! सुनना चाहिए ।

बैरोने : अब तेरी ही तरह का एक और मूर्ख आ गया ।

लौंगेविले : ओह ! मेरी तो शपथ भग हो चुकी।

बैरोने : अरे, यह तो अपनी शपथ तोड़कर आये व्यक्ति की तरह हाथ मे पत्र लिये हुए आया है।

सम्राट् ' मेरा ख्याल है, यह भी प्रेम में फँसा हुआ है। संकोच में कैसे मधुर साथी मिलते है !

बैरोने : एक नशेबाज दूसरे नशेबाज से ही प्रेम दिखाता है।

लौंगेविले : क्या मै ही पहला व्यक्ति हूँ जिसने अपनी शपथ को भंग किया है ?

बैरोने : नही, नही, दो अन्य व्यक्तियो के नाम गिनाकर मै तुम्हे धैर्य बँधा सकता हूँ और अब तुमने आकर तो सख्या तीन कर दी, बिल-कुल टाइबर्न के तिकोने फाँसी के तख्ते की तरह जहाँ गरीब फाँसी पर लटकाये जाते है।

लौंगेविले : मुझे डर है कि ये पक्तियाँ तुम्हारे हृदय को प्रभावित कर पायेगी या नही।

ओ मधुर और सुन्दरी मेरिया ! मेरे हृदय की रानी ! इन गीतो को फाडे देता हूँ मै। गद्य मे लिखूँगा इस सब को।

बैरोने . अरे कामदेव के मोजे पर कविता की पक्तियाँ ही तो रक्षक का काम करती है। उसके मोजे को मत बिगाडो।

लौंगेविले : यही ठीक रहेगा।

[सॉनेट पढता है]

यह अनुपमेय तेरी आँखे, यह दिव्य ज्योति का केन्द्र धाम,
क्या नही इन्ही ने शपथ भग मेरी करवा दी स्वयकाम,
मै वचन भग कर चुका किन्तु अपराधी फिर भी नही आज,
जिस नारी के हित पाप किया, वह देवी है सशय न व्याज,
सब कुछ छोड़ा पर तुझे नही इतना क्या कह दे नही सत्य ?

यह शपथ दीन पार्थिव है औ, तू परम दिव्य ज्योतित अगत्य,
तेरी यदि दया मुझे ढँक ले, अपमान न छू सकते मुझको,
है शपथशून्य उच्छ्वास, और उच्छ्वास वाष्प ही हैं सबको,
ओ दीपसूर्य ! तू जिससे है मेरी वसुन्धरा ज्योतिमान,
इस वाष्प सकल को ओझल कर, हे शुद्धात्मा तू है महान।
यदि नष्ट प्रतिज्ञा हुई भला, मेरा इसमें अपराध कौन ?
पाये कोई यदि स्वर्ग भूमि के बदले क्यों वह रहे मौन ?
मैं इसी हेतु सब छोड़ चुका कर चुका समर्पण पूर्णमग्न
तेरी आँखो में मेरा है ससार हो चुका स्वय लग्न ।

बैरोने : यह तो प्रेमी की सनक होती है जिसके कारण वह एक साधारण प्राणी को दिव्यात्मा का-सा गौरव देने लगता है, एक छोटी-सी बत्तख को देवी कहकर पुकारने लगता है, बिलकुल मूर्तिपूजा है यह तो। भगवान हमें बचाये, भगवान हमे बचाये, हम तो अपने मार्ग से बहुत पतित हो चुके है।

[ड्यूमेन का एक कागज लिये प्रवेश]

लौंगेविले : किसके हाथो भेजूँ इसे मैं—अरे, यह तो दूसरा साथी आ गया ? ठहरो।

[एक ओर हट जाता है।]

बैरोने : छिप जाओ सभी, छिप जाओ, बच्चों का पुराना आँख-मिचौनी का खेल हो रहा है। एक अर्द्ध-परमात्मा की तरह मैं यहाँ आकाश में बैठा हूँ और इन सभी मूर्खों के गुप्त कार्यो को देखता हुआ इनके भेद ले रहा हूँ।

अरे, अभी तो चक्की के लिए और भी अनाज है। मेरे भगवान् ! अब तो मेरी इच्छा पूर्ण हो गई। ड्यूमेन भी बदल गया ! एक ही तश्तरी मे चार मुर्गे। वाह !

ड्यूमेन . ओ दिव्यसुन्दरी केट !
बैरोने : ओ आवारा और गन्दी औरत।
ड्यूमेन : अहा ! भगवान् की सौगन्ध। तुम्हारा सौन्दर्य एक साधारण प्राणी की आँखो मे अपूर्व आश्चर्य भर देता है।
बैरोने पृथ्वी की सौगन्ध, वह ऐसी नही है। वह दिव्य नही है। तुम झूठ बोलते हो।
ड्यूमेन : तुम्हारे सुन्दर बाल स्वर्णिम आभा से भी अधिक स्वर्णिम और सुन्दर है।
बैरोने सुवर्ण के से पीले रग के कौए पर अच्छी दृष्टि पड़ी।
ड्यूमेन . चीड के वृक्ष की तरह सीधी।
बैरोने : मै कहता हूँ, झुकी हुई। उसका कधा तो बोझ से लदा हुआ है।
ड्यूमेन : दिन की तरह सुन्दर।
बैरोने : हाँ हाँ, कुछ उन दिनो से तुलना कर सकते हो जब सूरज न निकला हो।
ड्यूमेन : भगवान् ! काश ! मेरी कामना पूर्ण हो जाए !
लौगेविले : और मेरी भी !
सम्राट् : और मेरी भी, मेरे अच्छे लॉर्ड !
बैरोने आमीन ! इसी तरह काश ! मेरी भी कामना पूर्ण हो जाय ! क्या यह शब्द ठीक नही है ?
ड्यूमेन मै तो उसे भूलना भी चाहता था लेकिन वह तो एक रोग बनकर मेरे रक्त मे समा गई है और बार-बार उसकी याद मुझे आया करती है।
बैरोने तुम्हारे रक्त मे रोग बनकर ! तो फिर अपने दिल को दो हिस्सो मे काटकर उस रक्त को बाहर निकल जाने दो। अच्छा रहेगा।
ड्यूमेन : एक बार फिर मै अपने लिखे हुए उस आह्वानगीत को पढ़ूंगा।

बैरोने : एक बार फिर मै देखूंगा कि प्रेम किस तरह बुद्धि मे विभिन्नता लाता है ।

ड्यूमेन : (पढता है)

आह, ग्रीष्म के मधुर मास मे जब मखमली पल्लवों मे चल
बहती थी मधुवात सुकोमल गंधजीर्ण करती मन विह्वल,
उस दुर्दिन में मधुर प्रेम ने अपने पथ की ओर निहारा
सब कुछ खोया हुआ विसर्जित लगा हो गया हारा हारा।
विकल प्रीति के कठिन पाश मे वह श्वासो की दिव्य गध की
तृष्णा मे रह रह अकुलाया, फिर भी पाया नही पथ री।
कहा—अनिल बह ले हे चचल, यदि मुझको भी चपल बनाता।
किन्तु करूँ क्या हाय बद्ध हूँ, तुझ तक तभी पहुँच कब पाता?
फिर भी पापी मुझे न कहना यह तो यौवन ही अधीर रे,
तेरे लिए देवता भी निज रूप छोड़ते परम सत्य है,
होते अमर मर्त्य जगती के, बह लेते चचल समीर से,
फिर मेरा क्या दोष भला जो तुझ को मन ने कहा—गत्य है!
मै तुझ में हूँ, अतः न मुझको त्याग, अरे निष्ठुर मत बनना!
जहाँ बंधनों में स्वतन्त्रता मिल जाये उस पर मत हँसना।

इसे और इसके साथ कुछ और स्पष्ट सदेश मे भेजूंगा। जो मेरे सच्चे प्रेम की वेदना को अभिव्यक्त करेगा। ओ, काश! सम्राट्, बैरोने और लौंगेविले भी इस बुराई के लिए बुराई के रूप मे उदाहरण बनने के लिए प्रेमी होते जिससे मेरे ऊपर प्रतिज्ञा भंग करने का अपराध तो नही आता क्योंकि जहाँ सभी लोग इस प्रेम के जाल में फँसे हुए हों वहाँ कोई भी एक-दूसरे के ऊपर प्रतिज्ञा भग करने के कारण क्रुद्ध नही होगा।

लौंगेविले : (आगे बढते हुए) ड्यूमेन! तुम्हारा प्रेम सद्भावना से दूर

है क्योकि तुम प्रेम की अपनी इस वेदना मे भी दूसरो के सहयोग की अपेक्षा करते हो। अगर इस तरह इन-बातो को छिपकर कोई सुन ले और पकड ले तो तुम तो पीले पड़ जाओगे लेकिन मैं जानता हूँ मै तो शरम के मारे मर जाऊँगा।

सम्राट् (आगे आते हुए) अच्छा तो चलो, अब तुम भी शरमाकर अपना सिर नीचे झुका लो। तुम भी तो उसी जाल मे फँसे हुए हो जिसमे वह है। तुम उसके ऊपर क्रुद्ध होकर उसको बुरा कह रहे हो, इस तरह से तो दूना अपराध कर रहे हो तुम। क्या तुम मेरिया से नही प्रेम करते? लौगेविले! क्या तुमने उसके लिए कभी भी सॉनेट नही लिखा? और क्या अपने मन के वेग को दबाने के लिए तुमने अपने दोनो हाथो को एक-दूसरे मे फँसाकर अपने वक्ष को नही दबाया था? मैने इस झाड़ी के अन्दर छिपे हुए तुम दोनो को अच्छी तरह देख लिया है। तुम दोनो ने ही शरम के मारे सिर झुका लिये थे। मैने स्वय तुम्हारी अपराधपूर्ण कविताओ को सुना है और तुम्हारे सारे रंग-ढग को ध्यान से देखा है। तुम्हारे उस भावावेश को भी मैने देखा है जब तुम्हारे हृदय से आहे निकलने लगी थी।

एक कहता था–मेरी सौगन्ध, तो दूसरा पुकारता था–भगवान् की सौगन्ध। एक कहता था कि उसके बाल स्वर्णिम आभा लिये हुए थे जबकि दूसरा अपनी प्रेयसी की आँखो की तुलना स्फटिक से करता था। (लौगेविले से) तुम स्वर्ग के लिए ही अपनी प्रतिज्ञा भग करोगे और (ड्यूमेन से) ईश्वर स्वय तुम्हारी प्रेयसी के लिए प्रतिज्ञा तोड़ देगा। जब बैरोने इस तरह प्रतिज्ञा-भग की बात सुनेगा तो क्या कहेगा और विशेष रूप से जबकि प्रतिज्ञा लेने के समय पूरा उत्साह दिखाया गया था? कितना

हँसेगा वह हम पर ? किस तरह के ताने कसेगा? किस तरह एक विजेता का सा गर्व लेकर वह खुशी से कूदता हुआ और हमारा उपहास करता हुआ फिरेगा ! अगर मुझे अपना सारा धन भी दे देना पड़े तो भी मैं यह चाहूँगा कि वह मेरा भेद न जान सके।

बैरोने · (पेड़ से उतरकर) अब मैं इस पाखण्ड को खोलने के लिए आगे बढ़ता हूँ।

आह मेरे स्वामी ! कृपा करके मुझे क्षमा करिए। सहृदय श्रीमान् ! जो व्यक्ति स्वयं ही सबसे अधिक प्रेम के वश मे है उसे दूसरो को इसलिए बुरा कहने का क्या अधिकार है ? आपकी आँखों से बहते आँसुओं में तो किसी के लिए स्थान नहीं है। कोई निश्चित राजकुमारी भी नही है जो प्रकट हों। आप तो अपनी प्रतिज्ञा भंग नही करेंगे। यह तो बड़ा ही घृणित है।

हिश ! भाटों के अलावा कोई भी सॉनेट बनाना नहीं पसद करता। लेकिन क्या आपको लज्जा नहीं आती ? क्या आप तीनों को इस तरह पकड़े जाने पर तनिक भी लज्जा का अनुभव नही होता ? तुमने उसके दोष को देखा लेकिन सम्राट् ने तुम्हारी कमजोरी को देख लिया लेकिन फिर भी मैं एक किरण की तरह तीनों के दोष देखता रहा। ओह ! कैसा मूर्खता-भरा दृश्य था यह जो मैंने देखा है। आहे, वेदना-भरी पुकार दु:ख, पीड़ा, क्या-क्या था ! ओह, सम्राट् को एक मच्छर बनते देखने के लिए मैं कितने धैर्य से बैठा रहा ? महान् हरक्यू-लीज को एक लट्टू फिराते हुए, पूर्णताप्राप्त सालोमन को एक गीत गाते हुए जनरल नैस्टर को बच्चो के साथ खेल खेलते हुए और आलोचक टाइमन को बेकार के-से खिलौनों पर हँसते देखने के लिए मैंने कितना धैर्य रखा ! तुम्हारी पीड़ा कहाँ है ?

मेरे अच्छे मित्र ड्यूमेन ! बताओ तो मुझको। प्रिय लौंगेविले ! तुम्हारी पीड़ा कहाँ है और मेरे स्वामी की तड़पन कहाँ है ? क्या सभी सीने के आसपास है ? अरे ! कुछ गरम पीने को लाना।

सम्राट् . बड़ा तीखा मजाक है तुम्हारा। क्या सचमुच तुमने छिपकर हमारे साथ धोखा किया है ?

बैरोने : धोखा आपके साथ नही किया है, धोखा तो मेरे साथ किया है आपने। मेरे साथ, जो एक बार शपथ ग्रहण करके उसको तोड़ना पाप समझता है। आप जैसे अस्थिर व्यक्तियो के साथ रहकर मैंने स्वय धोखा खाया। आपने मुझे कोई प्रेम-गीत लिखते हुए कब देखा है ? या जोन के लिए आहें भरते या एक मिनट का भी समय अपने बनाव-सिंगार के लिए नष्ट करते हुए कब देखा है ? आपने यह कब सुना कि मै किसी हाथ, पैर, चेहरे या आँख की प्रशसा कर रहा हूँ या भौंहे, वक्ष, कमर, पैर और वस्त्र वगैरह के प्रति आकर्षित होकर उनका प्रशसात्मक वर्णन कर रहा हूँ ?

सम्राट् ठहरो ! इतना तेज किधर जा रहा है यह ? जो इस सरपट गति से भागता है वह कोई सच्चा आदमी है या कोई चोर है ?

बैरोने : श्रेष्ठ प्रेमी ! अब मुझे जाने की आज्ञा प्रदान करिए। मैं अब इस प्रेमी-समाज से विदा लेता हूँ।

[जेक्वेनिटा और विदूषक का प्रवेश]

जेक्वेनिटा : भगवान् सम्राट को सुखी रखे।

सम्राट् : क्या उपहार है तुम्हारे पास ?

विदूषक कोई निश्चित षड्यन्त्र।

सम्राट् ' यहाँ षड्यन्त्र कौन करता है ?

विदूषक : करता तो यह कुछ नही है श्रीमान् !

सम्राट् . अगर इससे किसी प्रकार की हानि नही पहुँचती तो षड्यन्त्र और तुम दोनो यहाँ से शान्तिपूर्वक दूर चले जाओ ।

जेक्वेनिटा : मै आपसे प्रार्थना करती हूँ श्रीमान्, कि इस पत्र को पढ़ लीजिए। हमारा पादरी इस पर सदेह करता है, इसीलिए इसने षड्यन्त्र कहा है इसे ।

सम्राट् : बैरोने ! पढ़ना इसको ।

[बैरोने पत्र को पढ़ता है ।]

कहाँ से लाई हो तुम इसको ?

जेक्वेनिटा : कौस्टर्ड के पास से ।

सम्राट् : तुम कहाँ से लाये हो ?

विदूषक : डन ऐड्रमेडियो से । डन एड्रमेडियो से ।

[बैरोने पत्र फाड़ डालता है ।]

सम्राट् : क्यों ? क्या हुआ ? क्या हो गया तुम्हें ? फाड क्यों डाला तुमने इसको ?

बैरोने · मेरे स्वामी ! यह तो एक खिलवाड़ है । आपको परेशान होने की कोई आवश्यकता नही है ।

लौगेविले : इससे बैरोने के दिल मे उथल-पुथल मच उठी है, इसलिए हमे इसे सुनना ही चाहिए ।

ड्यूमेन : यह तो बैरोने का हस्तलेख है और यहाँ उसका नाम भी है।

[पत्र के टुकड़े इकट्ठा करने लगता है ।]

बैरोने : (विदूषक से) ओ, तवायफ की औलाद, बेवकूफ कही के, क्या तू मुझे इस तरह लज्जित करने के लिए ही पैदा हुआ था ? मेरे स्वामी ! मै अपना अपराध स्वीकार करता हूँ ।

सम्राट् : क्या ?

बैरोने यही कि चारो का समूह पूरा करने के लिए आप तीनों मूर्खों मे एक मुझ मूर्ख की ही कमी थी। यह, यह, आप और मै, स्वामी, इस प्रेम मे छली और कपटी सिद्ध हो चुके है इसलिए अब तो हमको मर जाना ही उचित है। इन और लोगो को यहाँ से विदा कर दीजिए। तब मै आपको और बातें बताऊँगा।

ड्यूमेन अब तो सख्या सम है।

बैरोने . ठीक, अब हम चार है। क्या ये कछुए यहाँ से जाएँगे नही ?

सम्राट् : अच्छा श्रीमान्! आप लोग कृपा करके जाइए।

विदूषक सच्चे आदमी अलग चले जाएँ और इन विश्वासघातियो को यहाँ रह जाने दे।

[कौस्टर्ड तथा जैक्वेनिटा का प्रस्थान]

बैरोने : मेरे अच्छे सरदारो! प्रिय प्रेमियो! आओ, एक-दूसरे से गले मिल ले। जितनी सचाई एक मनुष्य के अन्दर हो सकती है, उतने ही हम सच्चे है। समुद्र मे तो ज्वार-भाटा आयेगा ही। आकाश तो अपना मुख दिखायेगा ही। नये खून वाले नौजवान पुरानी मर्यादा का पालन नही कर सकते। हम जिस लिए इस पृथ्वी पर पैदा हुए है उसकी अवहेलना नही कर सकते, इसीलिए हमारी प्रतिज्ञा भ्रष्ट हो गई है।

सम्राट् · क्या इस पत्र मे, जिसे तुमने फाड डाला है, तुम्हारे प्रेम-सम्बन्धी कोई बात थी ?

बैरोने . उसमे थी, क्या आप यह कहते है ? जो एक बार उस दिव्य सुन्दरी रोजालिन को देख लेगा वह इडीज के असभ्य और जगली आदमियो की तरह वैभवशाली पूर्व दिशा के पहले द्वार पर अपना सिर झुकायेगा और अधा होकर एक दास की तरह जमीन

चूमने लगेगा। बाज की सी आँखों वाला कौन उसकी दिव्य-दृष्टि की ओर देखने का साहस करेगा जो उसकी दिव्य आभा के सामने अंधा न हो जाएगा ?

सम्राट् : कैसे उत्साह और आवेश ने तुम्हे इस समय प्रेरित कर रखा है ! तुम्हारी प्रेयसी की स्वामिनी मेरी प्रेयसी तो अति सुन्दर चन्द्रमा के समान है और तुम्हारी प्रेयसी उसके पास रहने वाले प्रकाशरहित तारे के समान है।

बैरोने अगर यह सत्य हो तो ये आँखे मेरी आँखे नही है और न मै बैरोने हूँ। ओ ! मेरी प्रेयसी के बिना तो दिन रात्रि के रूप में परिवर्तित हो जाता ! संसार मे जितनी भी सुन्दरियाँ है, उन सबसे अधिक सुन्दरी है वह। उसकी मुखाकृति पर सर्वोच्च कोटि की सुन्दरताएँ एक मेले की तरह एकत्रित हो गई है जहाँ कई श्रेष्ठताओं ने मिलकर एक अद्वितीय सुन्दरता का निर्माण किया है। वहाँ किसी तरह के अभाव की छाया-मात्र भी नही है। मृदुल स्वरों की सुन्दर भाषा मुझे वरदान-रूप मे दो। मुझे बनावटी दिखलाई पड़ने वाली भाषा से घृणा है। मेरी प्रेयसी भी इसकी आवश्यकता अनुभव नही करती। विक्री की वस्तुओं की प्रशसा करने का कार्य विक्रेता का होता है। उसकी प्रशसा करने मे प्रशसा को स्वयं अपनी लघुता का आभास होता है। सौ वर्ष का एक बुड्ढा साधु भी एक बार उसकी सुन्दर आँखों को देखकर पचास वर्ष कम आयु का हो जाएगा। सुन्दरता वृद्धावस्था को मिटाकर एकसाथ नव शैशव के रूप मे बदल सकती है जब हाथ मे लाठी पकडकर चलने वाला व्यक्ति भी एक बार पालने मे झूलने की स्थिति मे आ जाएगा। ओ, सूर्य ही तो सभी वस्तुओं को प्रकाशमान बनाता है।

सम्राट् : भगवान् की शपथ, तुम्हारी प्रेमिका तो बिल्कुल आबनूस की तरह काली है।

बैरोने : क्या आबनूस उससे तुलना करने योग्य है? ओ! दिव्य काष्ठ। ऐसा काष्ठ सुख का स्वामी होता है। ओ, कौन इस समय शपथ ग्रहण करा सकता है? पुस्तक कहाँ है, जिस पर हाथ रखकर मैं शपथ ग्रहण कर सकूँ कि वह सुन्दरता अभावपूर्ण है जिसने मेरी उस अनन्य सुन्दरी प्रेयसी की आँखो से देखना नही सीखा? जो मुखाकृति इतनी काली नही होती वह कभी भी सुन्दर कहलाने योग्य नहीं है।

सम्राट् : ओ वाक्छल! काला तो नरक-चिह्न है, धरती के नीचे वाले अँधेरे कारागार का रग है, रात्रि के स्कूल[1] का भी यही रग है। सुन्दरी का सिर तो आकाश के रग से ही उचित साम्य रखता है।

बैरोने · ओ! दुष्ट आत्माएँ ही प्रकाश की देवी वनने का प्रलोभन रखती है। यदि मेरी प्रेयसी की भौंहें काले रग से सुसज्जित की जाएँ तो फिर यह दु.खद प्रश्न उठ खडा होता है कि इस वेश-सज्जा और अनधिकार रूप से सुन्दरता का अपहरण करने वाले बालो से देखने वालो को मुखाकृति का वनावटी झूठा रूप प्रत्यक्ष दिखेगा इसलिए मेरी प्रेयसी काले रग को ही स्वाभाविक सुन्दरता के रूप मे बदलने के लिए पैदा हुई है। उसने समय की रीति को बदल दिया है, क्योंकि अब स्वाभाविक रग को ही वेश-सज्जा के अनुरूप समझा जाता है। इसीलिए लाल रग जो अपनी किसी

---

१. School of night : वह स्कूल जहाँ रैले, हैरियट, मार्लो, चैपमेन आदि लोग इकट्ठे होते थे और धार्मिक परम्परा और मान्यताओ के विरुद्ध स्वतंत्र चिंतन करते थे वहीं से कई ऐसे लेख इन लोगो ने निकाले थे जिन पर चर्च के अधिकारी काफी क्रुद्ध हो गए थे।

प्रकार की बुराई नही सुनना चाहता, उसकी भौह की अनुकृति मे अपने आपको काले रूप में परिवर्तित करने के लिए प्रस्तुत है ।

ड्यूमेन : चिमनी साफ करने वाले भी उसी की तरह काले होते है ।

लौगेविले : लेकिन अब उसके समय मे तो कोयले की खान मे काम करने वाले मजदूर भी सुन्दर मुखाकृति वाले गिने जाएँगे ।

सम्राट् : फिर तो इथोपिया-निवासी भी अपनी सुन्दर मुखाकृति की बढ़-बढकर प्रशंसा करेगे ।

ड्यूमेन : अब तो काली रात मे किसी तरह का दीपक जलाने की भी आवश्यकता नही है क्योकि अन्धेरा तो अब स्वय प्रकाश हो गया है ।

बैरोने : आप लोगो की प्रेयसियाँ इस डर से कभी बरसते पानी मे नही आती कि कही पानी मे उनके रग धुल न जाएँ ।

सम्राट् : यह अच्छा है कि तुम्हारी प्रेयसी तो आ जाती है। मै सच कह रहा हूँ, मित्र, कि मुझे तो गोरा चेहरा ही पसन्द है, फिर चाहे वह साफ भी न किया गया हो ।

बैरोने : मै कयामत के दिन तक इस पर बहस कर सकता हूँ और सिद्ध कर सकता हूँ कि वह सुन्दरी है ।

सम्राट् : तब तुम्हे कोई भी दैत्य उसके समान डरा नही पायेगा ।

ड्यूमेन . मुझे पता नही था कि ऐसे भी मनुष्य इस दुनिया मे होते है जो बुरी चीजो से भी बहुत प्यार करते है ।

लौगेविले : यह देखो तुम्हारी प्रेयसी का रूप , बस मेरा तो पैर और उसका मुख एक से ही है ।

[अपना जूता दिखाता है ।]

बैरोने : ओ, अगर आम रास्ते तुम्हारी आँखो से पाट दिये जाएँ तो भी उसके पैर उन पर चलने के लिए अति कोमल है ।

ड्यूमेन : ओ, कैसी झूठ और खराब बात है । अच्छा यह बताओ कि

जब वह चलेगी तो ऊपर की तरफ क्या होगा ? सभी लोग उसको सिर के बल चलता देखेगे।

सम्राट् : लेकिन इस सबसे क्या ! क्या हम सभी प्रेम मे डूबे नही है ?

बैरोने · ओ, कुछ भी पूरी तरह निश्चित नही है, यही कारण है कि हम सभी वचनभ्रष्ट व्यक्ति है।

सम्राट् · फिर छोडो इस बहस को। मित्र बैरोने ! अब तो किसी तरह इस प्रेम को वैध सिद्ध करके हमे यह विश्वास दिलाओ कि हमने अपने विश्वास को नही तोड़ा है !

ड्यूमेन : ओह ! इस दोष को भी ठीक कहने की कोशिश।

लौंगेविले इस कार्य को करने के लिए तो कोई प्रामाणिक लेख ढूंढना पडेगा। दुष्टता से छल करने के लिए चाल और चतुराई का आश्रय लेना पडेगा।

ड्यूमेन . इस पतन को उचित ठहराने के लिए किसी औषध की व्यवस्था करनी ही पडेगी।

बैरोने : ओ ! यह तो आवश्यकता से भी अधिक है। तब तो अपने पास प्रेम के सरक्षक रखना। सोचो तो हमने पहले क्या शपथ ग्रहण की थी—यही न, कि पूरी तरह सयम से रहकर अध्ययन करेगे और किसी भी स्त्री से नही मिलेगे ? जीवन के उच्छ्वास-काल यौवन के विरुद्ध कितना बडा षड्यन्त्र है यह। बताओ, क्या हम उपवास कर सकते है ? अभी हमारे उदर इसके लिए परिपक्व कहाँ है ? फिर इस तरह निरोध करने से अनेक दोष पैदा हो जाते है। फिर कहाँ तो हम सभी ने अध्ययन करने की प्रतिज्ञा ली थी अब प्रत्येक ने पुस्तक छोडकर अपनी प्रतिज्ञा भ्रष्ट कर ली है। क्या हम अब भी पुस्तक पर अपनी निगाह गड़ा-कर अध्ययन करने की कल्पना कर सकते है ? आपने भी बिना

एक स्त्री के सुन्दर रूप के अध्ययन के, सुन्दरता को पाया होगा ? स्त्री की आँखो मे यह सिद्धांत निकालता हूँ कि वे आँखे ही पुस्तके, शिक्षालय, तथा क्षेत्र आदि सभी कुछ है जहाँ से सच्ची दिव्याग्नि का परिचय मिलता है जिसे प्रोमेथियस स्वर्ग के देवताओं से छीनकर मानव मात्र के लिए लाया था। जिस तरह लगातार चलने और परिश्रम करने से बड़ा से बड़ा शक्तिशाली यात्री थककर चूर हो जाता है उसी प्रकार यदि हृदय की मृदु भावनाओं के विरुद्ध इस तरह चारों ओर से षड्यन्त्र करना प्रारम्भ कर दिया तो जीवन की सारी स्फूर्ति और उत्साह नष्ट हो जायगा। इसके अलावा स्त्री के मुख को न देखने की शपथ खाकर तो तुमने अपनी आँखो की उपयोगिता को ही ठुकराया है और फिर दु ख मोल लेने के लिए अध्ययन करने की शपथ ले ली है। संसार मे ऐसा कोई लेखक है जो किसी और वस्तु को स्त्री की आंखो के बराबर सुन्दर बताता हो ? विद्या तो हमारे व्यक्तित्व का एक गुण है और जहाँ हम होगे वही हमारी विद्या होगी। इसलिए जब हम अपने आपको स्त्रियो की आँखों के भीतर देखते है तो क्या हम वही अपना ज्ञान नही देखते ? सरदारो ! हमने अध्ययन करने की प्रतिज्ञा ग्रहण की थी लेकिन उसमे तो हमने अपनी पुस्तके ही छोड़ दी। बताइये मेरे स्वामी, आपने अथवा आप मे से अन्य किसी ने भी कब इस तरह पूर्ण निरोध और प्रतिबन्ध के साथ अध्ययन करके ऐसी सुन्दर वस्तु को देखा होगा जैसी ये आँखे है और कब सौन्दर्य की ऐसी शिक्षिकाएँ तुम्हे मिली होगी ? अन्य नीरस विषय पूरी तरह मस्तिष्क मे जम जाते है इसलिए उनकी प्राप्ति के लिए निरर्थक प्रयास करने वाले लोग अपने कठिन से कठिन परिश्रम

का मुश्किल से ही कुछ परिणाम उठा पाते है, लेकिन प्रेम जो पहले पहल किसी स्त्री की आँखो से सीखा जाता है, मस्तिष्क में अकेला ही बन्द नही रहता बल्कि शरीर की सभी धातुओं को उससे शक्ति और गति मिलती है, और जिस प्रकार वेग से विचार मस्तिष्क मे चलता है, उसी वेग के साथ अग-प्रत्यग मे दूनी शक्ति और स्फूर्ति समा जाती है। इससे आँख को अद्भुत ज्योति प्राप्त होती है। एक प्रेमी की आँखे एक गिद्ध के अन्धेपन को भी देख सकती है। उसके कान धीमे से धीमे स्वर को भी सुन सकते है, जब सदेह मे भरे किसी चोर को रोका जाता है। प्रेम की भावना पृथ्वी पर रेंगने वाले केंचुए के शरीर से भी अधिक कोमल और मृदुल होती है। प्रेम की वाणी इतनी सुन्दर और आनन्ददायक होती है कि स्वय आनन्द का देवता 'बैकस' उसके सामने फीका लगता है। जहाँ तक शक्ति का प्रश्न है तो क्या प्रेम ही एक हरक्यूलीज नही है? क्या यह हैस्पेरिडीज बहनो के बाग के निरन्तर बढने वाले वृक्षो की तरह नही है? यह तो स्फिक्स की तरह चतुर, ऐपोलो की ल्यूट की तरह जिस पर उसके बालो के तार बधे हुए हैं, मधुर सगीतमय है। और जब प्रेम बोलता है तो ऐसा लगता है मानो सारे देवताओ की मधुर ध्वनि से आकाश मूर्च्छित-सा हो गया हो। कोई भी कवि तब तक कविता नही लिख सकता जब तक उसको प्रेम की तडपन की सजीव अनुभूति न हो। इसके बाद तो उसकी पक्तियाँ कठोर से कठोर हृदय को भी द्रवित कर देगी और अत्याचारियो के हृदय मे भी करुणा और प्रेम की भावना जगा देगी। स्त्री की आँखो से यह सिद्धात मैंने ग्रहण किया है। वे अभी भी प्रोमेथियस के द्वारा लाई गई आग में और भी नवीन

आभा भर देती है। वे ही पुस्तक कलाएँ, शिक्षा-संस्थाएँ आदि सभी कुछ है जो सभी वस्तुओ से पूर्ण ।होकर ससार का पोषण करती है। ऐसा न होता तो कोई भी किसी चीज मे अच्छा सिद्ध न हो सकता। तब इन स्त्रियो का परित्याग करके तो तुमने अपने आपको मूर्ख बना लिया है या जो भी प्रतिज्ञा तुमने ली है उसको पालन करते हुए तुम स्वय को मूर्ख बना लोगे। बुद्धिमत्ता के लिए, जो शब्द सभी आदमियो को प्यारा है ; या प्रेम के लिए, जो शब्द सभी आदमियों को प्यार करता है; या पुरुषो के लिए जो इन स्त्रियो के निर्माता है; या स्त्रियो के लिए जिनके द्वारा हम पुरुष पुरुष है, एक बार आओ, हम स्वय को प्राप्त करने के लिए इस प्रतिज्ञा को छोड़ दे, नही तो प्रतिज्ञा निबाहने के लिए हमे अपने आपको खोना पड़ेगा। इस तरह प्रतिज्ञा तोड़ना तो धर्म है, क्योकि दूसरो के साथ सहृदयता और सहानुभूति का व्यवहार करना भी तो ईश्वरीय नियम है। बताओ, सहृदयता और सहानुभूति से प्रेम को अलग कौन कर सकता है ?

सम्राट् · तो फिर हमारा देवता कामदेव है। योद्धाओ ! चलो मैदान मे।

बैरोने : बढाओ अपने झडे योद्धाओ ! और उन पर आक्रमण करके उनको पराजित कर दो, लेकिन इसका सबसे पहले ध्यान रखना कि इस सघर्ष मे उनको उस समय प्राप्त करने का प्रयत्न करना जब कि उनकी आँखो में सूर्य हो।

लौंगेविले · अच्छा, अब साफ बाते करो। इन बहानेबाजियों को रहने दो। क्या फ्रांस की इन कुमारियो के साथ प्रेम करने का हम दृढ निश्चय कर ले ?

सम्राट् : और उनको अपनी पत्नी बनाने का भी ? तो फिर आओ

उनके खेमो मे किसी मनोरंजन की व्यवस्था करे।

बैरोने सबसे पहले तो हमे चाहिए कि बाग से उन्हे यहा ले आयें; फिर प्रत्येक अपनी-अपनी प्रेयसी का हाथ पकड़कर अपने घर चला जाय। दुपहर के बाद हम किसी विचित्र मनोरंजन के द्वारा उनका जी बहलायगे—ऐसा मनोरजन, जो इतने थोडे समय में हो सके। आनन्दोत्सव, नृत्य, मास्क तथा अन्य प्रकार के मनो-विनोद के लिए चलो प्रेमियो! और अपनी प्रेयसियो के मार्ग मे फूल बिछा दो।

सम्राट् चलो, चलो अब जो कुछ करना है उसमे किसी तरह का समय नष्ट नही करेगे हम।

बैरोने बबूल बोकर आम खाने को नही मिलेगे आपको। न्याय अपनी निश्चित और सम्यक् गति से चलता है। वचन-भ्रष्ट आदमियों के लिए वे स्त्रियाँ जो नैतिकता की ओर अधिक उन्मुख नहीं होती, एक मुसीबत बन जाती है। अगर ऐसा है तो फिर हम अपना सब कुछ देकर कोई उससे भी अच्छी वस्तु नही प्राप्त कर रहे है ?

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

स्थान : पार्क

[होलोफर्नीज, नैथेनियल तथा डल का प्रवेश]

होलोफ़र्नीज जिससे आवश्यकता पूर्ण हो जाये उतना ही पर्याप्त है।

नैथेनियल · श्रीमान्। आपकी बुद्धि के लिए तो मै, सच, परमात्मा की प्रशसा करता हूँ। खाने के वक्त तो आपकी बाते बड़ी ही तीखी और गूढार्थक पहेली जैसी हो गई थी। बिना किसी निम्नकोटि के हास के वे आनन्ददायक थी, बिना किसी प्रकार के अहकार और आडम्बर के उनमे पूरा बुद्धि-चातुर्य था, बिना किसी प्रकार की धृष्टता के इनको पूरी निर्भयता से कहा गया था, बिना उग्र दम्भ के उनमे पूरी विद्वत्ता थी और बिना किसी धार्मिक मर्यादा का उल्लघन किये जाने पर भी वे बाते विचित्र थी। मैने कल ही सम्राट् के एक सहयोगी से बाते की थी। उनको डॉन ऐड्रियानो डि आर्मेडो के नाम से जाना जाता है।

होलोफ़र्नीज : मै आपको और उस आदमी को दोनों को जानता हूँ। उसकी सनक तो बडी ऊँची है। बाते भी बड़ी प्रामाणिक करता है, वाणी सुगढ है, आँखों मे महत्त्वाकांक्षा झलकती है, वेशभूषा बड़ी ही शानदार है और उसका साधारण व्यवहार बडा ही विचित्र है। बहुत बढ-बढकर व्यर्थ की बाते बनाने वाला आदमी है। वह इतना विचित्र, दम्भी और सदा अपने आपको बड़ा समझने वाला सनकी है कि इनचीजों को देखकर तो मै उसे कोई अजनबी परदेशी ही कहूँगा।

नैथेनियल : बिल्कुल, एकमात्र बहुत ही अच्छा विशेषण है यह उसके लिए।

[अपनी किताब निकालता है।]

होलोफ़र्नीज़ : जितना अच्छा उसका तर्क नही होता, उससे कही अच्छे श दो का जाल-सा बिछा देता है वह। मै ऐसे विचित्र और अपनी वाक्-चपलता मे डूबे रहने वाले दम्भी व्यक्तियों से घृणा करता हूँ। वर्णाक्षरो तथा उच्चारण आदि के नियमो के विरुद्ध जो अन्याय करते हैं, उनके प्रति तो मै घृणा और उपेक्षा ही रखता हूँ, क्योकि जब उन्हे सदेह कहना चाहिए तो उसके स्थान पर वे सन्दे कहेगे, ऋण के लिए रिण, बछडे की जगह वशणा, अर्द्ध की जगह अर्‌ध, पड़ौसी के लिए पणौसी, हिनहिनाने को सक्षिप्त करके वे हिननन कहेगे। यह बडा ही घृणित है जिसको वह घृड़ित कहेगा। मुझे तो पागलपन लगता है और यह आर्मेडो एक पूरा पागल है।[1]

नैथेनियल भगवान् को इसके लिए धन्यवाद है, मै आपकी बात समझता हूँ।[2]

होलोफ़र्नीज़ थोडी कमजोर भाषा है, लेकिन ठीक है—चलेगी।

---

१. होलोफर्नीज़ के संवाद में अंग्रेजी के कुछ शब्द और उनके उच्चारण सम्बन्धी समस्या आती है। होलोफर्नीज़ मर्यादा को तोड़नेवाले व्यक्तियो से घृणा करता है जैसे आर्मेडो Doubt शब्द को Dout, Debt को Det, Calf को Cauf, Half को Hauf, Neighbour को Neibour कहता है। होलोफर्नीज़ भाषा के क्षेत्र में इस स्वतन्त्रता का विरोधी है। हमने इन शब्दो के अनुवाद देकर हिन्दी के उच्चारण के साथ इसका तार मिला दिया है।

२. यह सवाद लेटिन भाषा का है लेकिन भाषा कमजोर है इसीलिए होलोफर्नीज़ उसके बारे में बाद में कहता है।

[आर्मेडो, लड़के तथा विदूषक का प्रवेश]

नैथेनियल : देखो कौन आ रहा है ?

होलोफ़र्नीज · देख रहा हूँ और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

आर्मेडो : लणके !

होलोफ़र्नीज लड़के के लिए यह 'लणके' शब्द का प्रयोग क्यो ?

आर्मेडो · शान्तिप्रिय व्यक्तियों की अच्छी मुठभेड हुई ।

होलोफ़र्नीज़ अत्यधिक साहसी और वीर श्रीमान् ! अभिवादन स्वीकार करिए।

लड़का ये किसी भाषाओं की बड़ी दावत में गये थे और वहाँ से बचे-खुचे टुकड़ों को चुरा लाये हैं।

विदूषक : ओ, उन्होने तो बहुत समय तक शब्दो की भीख माँगने की टोकरी से जीवन-निर्वाह किया है। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे स्वामी ने एक शब्द के लिए तुमको नही खाया है क्योकि तुम इतने बडे नही हो जितना बड़ा औनरिफिकेबिलिट्यूडिनिटेटिबस (Honorificabilitudinitatibus)[1] शब्द है। तुम तो एक मुनक्का से भी अधिक आसानी के साथ निगले जा सकते हो।

लड़का : शान्त ! कोई तीव्र ध्वनि उठने लगी है।

आर्मेडो : श्रीमन्, क्या आप अशिक्षित है ?

लड़का : हाँ, हाँ, वे तो लड़को को उस सीग से ढकी किताब को पढाते है। उनके सिर पर सीग के साथ आ ब को उलटी तरफ से क्या पढेगे ?

होलोफर्नीज : मेरे वच्चे। सीग के साथ, बा पढेगे उसे।

---

१. यह लेटिन भाषा का सबसे लम्बा शब्द है, जिसका अर्थ है–'सम्मान से लादे जाने की स्थिति में।'

लड़का : बा यानी अत्यन्त सीधी भेड़ जो सींग सहित है। आप उनकी विद्वत्ता को सुन रहे हैं ?

होलोफ़र्नीज़ : किसकी, बता व्यञ्जन ?

लड़का . यदि आप उनको दुहरायें तो पाँच स्वरों[1] में से तीसरे तक और यदि मैं दुहराऊँ तो पाँचवे तक।

होलोफर्नीज़ · मैं उनको दुहराता हूँ : अ इ ई।

लड़का : यह तो भेड़[2] है। बाकी के दो जो इसको पूरा करते हैं ओ और उ हैं। वे आगे का मतलब पूरा करते हैं।

आर्मेडो अहा, भूमध्यसागर की खारी लहर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, कैसी सुन्दरता के साथ वाक्-पटुता का प्रदर्शन हुआ है ! कितनी शीघ्रता से ऐसी अच्छी बात बनी कि सच, तबियत खुश हो गई। यह है सच्चा बुद्धि-कौशल !

लड़का : जिसे एक लड़के ने एक वृद्ध के सामने प्रदर्शित किया है, जो एक पुराना अपने ज्ञान की सींगी[3] बजाने वाला है।

---

१. अंग्रेजी भाषा के व्याकरण में पाँच स्वर, सत्ताईस व्यंजन होते हैं। स्वर हैं– A, E, I, O, U, अर्थात् अ, ए या इ, ई, ओ, ऊ। हमने हिन्दी में रूपान्तर करते समय उसी अंग्रेजी के विधान का अनुसरण किया है।

२ Ba : भेड़ की आवाज़ 'बा बा' ही होती है, इसी कारण इस शब्द का अर्थ भेड़ लगाया गया है, फिर आगे O, U में सींग की ध्वनि से उसका अर्थ आरोपित करके लड़के ने स्वरों के द्वारा अपनी बात को सिद्ध किया है, यह उसका भाषा-कौशल है।

३. Wit-old : इस शब्द का अर्थ तो 'एक पुराना वाक्-चतुर' होता है लेकिन इसके साथ Wittol का 'पन' और है जिसका अर्थ है—व्यभिचारिणी स्त्री का पति जो सिर पर सींग लगाता है। सींग शब्द को लाने के लिए ही हमको सींगी बजाने वाले का प्रयोग करना पड़ा।

आर्मेडो : क्या कहा ? क्या कहा ?

लड़का : सीग।

आर्मेडो : तुम तो एक बच्चे की तरह झगड़ा करते हो। जाओ अपनी गाडी हाँको।

लड़का : अपना एक सीग मुझे दे दीजिए गाड़ी बनाने के लिए, फिर मै चारो तरफ एक आवारा औरत के पति के एक सीग की गाड़ी को घुमाता हुआ आपकी बदनामी फैलाऊँगा।

विदूषक · अगर मेरे पास इस दुनिया में एक पैसा भी है तो उसमे तुम्हे अदरक के रस मे भीगी रोटी खरीदने के लिए दे दूंगा। यह लो, जड और मूर्ख लड़के ! तुम्हारे स्वामी से मैने इसे पारिश्रमिक के रूप मे पाया है। ओः ! भगवान् करता कि तुम मेरी हरामजादी औलाद होते। फिर कैसा अच्छा बाप मिलता तुम्हे ! जाओ, यह तो तुम्हारे पोटुओ पर है।

होलोफ़र्नीज़ : ओह, यह तो भाषा का गलत प्रयोग है। पोरो के लिए पोटुओ का प्रयोग गलत है।[1]

आर्मेडो : विद्वान् महाशय पहले आप जाइये। फिर आप जैसे जगली और मूर्ख से तो छुटकारा मिलेगा। क्या होलोफर्नीज महोदय ! नवयुवको को पर्वत के ऊपर स्थित शुक्ल-भवन मे नही पढाते है ?

होलोफ़र्नीज़ : या पहाडी के ऊपर कहिए।

आर्मेडो : हाँ पर्वत के लिए जो चाहे कह लीजिए।

होलोफर्नीज . हाँ, विना शका के यही मान लेता हूँ मै।

---

१. यह सब कुछ लेटिन भाषा का लेकर चलता है, हमने ग्रामीण प्रयोग और साहित्यिक प्रयोग को लेकर भाषा की गलती को स्पष्ट किया है। सार रूप में होलोफर्नीज़ भाषा का ज्ञान दिखा रहा है।

आर्मेडो : श्रीमान् ! सम्राट् की यह बड़ी इच्छा है कि वे राजकुमारी का अपने यहाँ मध्याह्न के पश्चात् स्वागत करें, जिसे गँवार लोग दुपहर के बाद कहते हैं।

होलोफ़र्नीज़ : श्रीमान् ! मध्याह्न के पश्चात् दुपहर के बाद के लिए शब्द अत्यन्त ही उचित है। वाह ! बड़ा छटा हुआ और चुनीदा शब्द है उसके लिए, सच कहता हूँ, विश्वास करिए।

आर्मेडो : श्रीमान् ! सम्राट् तो बड़े ही सहृदय व्यक्ति हैं और मेरे परिचित या कहूँ मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं, क्योंकि जो बात हमारे बीच छिपी हुई है, उसको प्रकाश में लाना ही चाहिए। मेरी यह प्रार्थना है कि शिष्टता का तो कम से कम विचार रखिए। बस, ठीक है, अब भले ही अपने सिर को ढाँप लीजिए और इसके अलावा और भी महत्त्वपूर्ण और आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन उसे जाने दें क्योंकि मैं आपको बता दूँ कि कभी-कभी तो सम्राट् स्वय मेरे इस गरीब के कंधे पर झुककर अपनी अगुलियो से मेरे बालो को सहलाते हे, मेरी मूँछों पर हाथ फेरते हैं। लेकिन प्रिय मित्र ! जाने दो उसे ! मैं कोई कल्पित कहानी, नही कह रहा हूँ, बल्कि सच कहता हूँ, सम्राट् की यात्रा के लिए प्रसिद्ध इस आर्मेडो पर, जिसने सारी दुनिया की यात्रा कर ली है, विशेष कृपा है लेकिन जाने दो उसे भी, यही इस सबका सार है लेकिन प्रिय मित्र ! इसको अपनें तक ही गुप्त रखना कि सम्राट् राजकुमारी के सामने मेरे द्वारा कोई अच्छा-सा खेल करवाना चाहते है। अब यह जानकर कि नैथेनियल और आप ऐसे काम में अच्छा सहयोग दे सकते हैं और दर्शकों को अपने अभिनय के द्वारा बहुत हँसा सकते है, इसलिए मे प्रार्थना करता हूँ कि इस काम में हमारी सहायता करिए।

होलोफ़र्नीज़ : श्रीमान् ! आप उनके सामने नव-रत्नों का खेल प्रस्तुत करेंगे। श्रीमान् नैथेनियल या मुझ जैसा विद्वान् और ख्याति-प्राप्त मनुष्य कोई भी, जहाँ तक मध्याह्न के पश्चात् सम्राट् की आज्ञा से राजकुमारी के सामने खेले जाने वाले खेल का सम्बन्ध है, नव-रत्न को प्रस्तुत करने के योग्य नही है।

नैथेनियल : तो फिर उसके लिए योग्य व्यक्ति आपको कहाँ से मिलेंगे ?

होलोफर्नीज़ : जोशुआ तो आप बनेंगे। मै जूडाज मेकेबियस बनूंगा और यह विदूषक काफी लम्बा है इसलिए पोम्पे महान् बन जायगा। लड़का हरक्यूलीज का पार्ट अदा कर लेगा।

आर्मेडो . क्षमा करिए श्रीमान् ! इसमे एक गलती है। यह लडका तो उस रत्न के अँगूठे के बराबर भी बडा नही है और लम्बाई मे तो उसके दण्ड के छोर से भी छोटा है।

होलोफर्नीज़ . क्या आप मेरी बात सुनेगे ? यह लड़का तो छोटी अवस्था वाले हरक्यूलीज का पार्ट अदा करेगा। वैसे रंगमच पर इसके आने और वहाँ से जाने के बीच इसका काम साँप का गला मरोड़ना ही होगा। इसके लिए मै क्षमा-याचना कर लूंगा।

लड़का : वाह, क्या अच्छी तरकीब है ! जिससे कि अगर कोई दर्शक फुसकारी की-सी आवाज करे तो आप यह चिल्लाये कि शाबाश हरक्यूलीज ! तुमने तो साँप को कुचल डाला। एक अपराध को सुन्दर और प्रिय बनाने का यही मार्ग है। लेकिन कम ही लोगों मे यह गुण पाया जाता है।

आर्मेडो : बाकी के 'रत्नो' के लिए क्या होगा ?

होलोफर्नीज़ : बाकी के तीन पार्ट तो मै स्वय अदा कर लूंगा।

लड़का : आप तो तिगुने गुणी है श्रीमान् !

आर्मेडो . क्या मै आपसे एक बात कहूँ ?

होलोफ़र्नीज हाँ, हाँ, कहिए।

आर्मेडो : अगर यह ठीक तरह नही जमता है तो हम एक प्राचीन नाटक प्रस्तुत करेगे। बस, अब कृपा करके मेरे साथ चलिए।

होलोफ़र्नीज मेरे अच्छे दोस्त डल! इस बीचतु मने तो ज़बान तक नही खोली है।

सिपाही श्रीमान्! कुछ समझ मे नही आया।

होलोफ़र्नीज हम तुम्हे भी इस काम में नियुक्त करते है।

सिपाही मै तो नाचने वगैरह का काम करूँगा, या जब रत्न नाचेगे तो उनके साथ मै ढोल बजा दूँगा।

होलोफर्नीज अच्छा, ईमानदार दोस्त डल! चलो, बस अब अपने खेल की तैयारी करे।

[प्रस्थान]

दृश्य २

स्थान : पार्क

[महिलाओ का प्रवेश]

राजकुमारी प्रिय सखियो! अगर इस अधिकता से हमारे पास भेटे आती चली गई तो हम यहाँ से जाने के पहले बहुत धनी हो जायँगी—एक महिला हीरो से लदी हुई! देखो, सखियो। प्रेमी सम्राट् के यहाँ से मेरे लिए क्या आया है!

रोजालिन श्रीमती! क्या इसके साथ और कुछ नही आया था?

राजकुमारी इसके अलावा तो कुछ भी नही। हाँ, उन्होने जो प्रेम-गीत इसके साथ भेजा है, वह इतना लम्बा है कि उससे एक कागज दोनो तरफ से मार्जिन सहित भर जायेगा और उसमे उन्होने काम-देवता की ओर अपना विशेष उत्साह और आकर्षण दिखाया है।

रोज़ालिन : यही तो रास्ता था उनकी आध्यात्मिक चेतना को विचलित करने का, क्योंकि पाँच हजार वर्षों से अभी तक वे एक अबोध बालक ही तो थे।

कैथराइन : लेकिन इसके साथ एक चालाक और अभागे धूर्त भी हैं।

रोज़ालिन : आप कभी भी उनके साथ सौहार्द्र और प्रेम नही स्थापित कर पायेंगी क्योकि उन्होंने ही आपकी बहिन को मारा था।

कैथराइन : उसे दुखी, चिन्तित और विक्षिप्त बनाने के कारण वे ही है, और इसी कारण वह मर गई। अगर वह आपकी तरह ही मजाकिया और अधिक गम्भीर न होते हुए चलते स्वभाव की होती तो मरने से पहले वह तो उनकी दादी बनकर रहती, लेकिन अब आपके बारे मे हमारी यही आशा है क्योकि हल्की तबियत का आदमी अधिक दिनो तक जीवित रहता है।

रोज़ालिन : इस 'हल्की'[1] शब्द का क्या काला अर्थ है तुम्हारा प्रिय सखी ?

कैथराइन : अत्यंत सुन्दरी की हल्की चलती आदते।

रोज़ालिन . तुम्हारे इस गूढार्थ को समझने के लिए तो हमको और अधिक प्रकाश की आवश्यकता है।

कैथराइन : तुम तो इस तरह मन मे बुझकर इस प्रकाश को ही समाप्त कर दोगी। इसीलिए मै अपनी बात को बुझी हुई हालत मे खत्म करूँगी।

---

१. Light : इस शब्द को लेकर अत्यधिक 'पन' का प्रयोग हुआ है। इस शब्द के कई अर्थ है : हल्की चलती तबियत का; छिछोरा; दुश्चरित्र, प्रकाश, आवारा, हल्का। ये सभी अर्थ जहाँ-तहाँ लगते है और उनसे एक Light शब्द को लेकर शब्द-कौशल दिखाया जाता है। इसके विपरीत Dark यानी अन्धेरा शब्द का प्रयोग किया गया है।

रोजालिन : देखो तो, तुम क्या करती हो और फिर अभी तक तुम इसे उस समय करती हो जब प्रकाश बुझ चुका होता है।

कैथराइन ऐसा तुम तो नही करती हो, क्योकि तुम तो बड़े हल्के और चलते स्वभाव की स्त्री हो।

रोजालिन निस्सदेह, मै तुम्हारा भार नही उठाती हूँ इसलिए हल्की हूँ।

कैथराइन तुम मेरा भार नही उठाती हो यानी तुम मेरी परवाह नही करती हो।

रोजालिन इसका बहुत बड़ा कारण है क्योकि जिसकी परवाह छोड़ दी जाती है, वह असाध्य होता है।

राजकुमारी वाह, खूब दोनो ने शब्द पर शब्द गढ कर अपना वाक्-चातुर्य दिखाया लेकिन रोजालिन, तुम्हे भी तो कोई प्यार करता है न ? किसने भेजा है इसे ? क्या है ?

रोजालिन . अच्छा होता आप इसको जानती। अगर मेरा चेहरा आपके जैसा सुन्दर होता तो मै इससे भी अधिक आकर्षण अपने प्रति पैदा कर पाती। देखिए इसे। अरे, मुझे तो गीत लिखकर भी भेजा गया है। इसकी पद-व्याख्या तो ठीक है, काश ! इसमे मेरे पद का भी मूल्याकन वैसा ही अच्छा हो जाता। मै इस धरती पर सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी होती ! मेरी तुलना बीस सहस्र सुन्दरियो से की गई है। अरे, उसने तो अपने इस पत्र मे मेरी तस्वीर तक बना दी है !

राजकुमारी : और कोई ऐसी चीज ?

रोजालिन : अक्षरो मे तो बहुत कुछ है लेकिन प्रशसा मे कुछ नही।

राजकुमारी : स्याही के समान सुन्दरी। बडा अच्छा निष्कर्ष है।

कैथराइन . एक कॉपी बुक मे 'बी' पाठ की तरह आकर्षक।

रोजालिन : पैंसिलों से सावधान रहना। कैसे ? लाल और सुन बालों वाली सखी। मैं तुम्हारा ऋण अपने ऊपर लेकर न मरना चाहती। ओ, काश। तुम्हारा चेहरा इतने गोल चकतरों भरा नहीं होता !

कैथराइन : बन्द करो यह मजाक। तुम सभी कुटिल स्त्रियों प भगवान् का अभिशाप गिरे !

राजकुमारी : लेकिन कैथराइन। श्रेष्ठ ड्यूमेन ने तुम्हें क्या-क्या भेज है ?

कैथराइन : यह दस्ताना भेजा है श्रीमती।

राजकुमारी : क्या उसने तुम्हें दस्तानों का जोड़ा नहीं भेजा ?

कैथराइन : जी हाँ श्रीमती। उनके अलावा हजारों पंक्तियों का प्रेम-पत्र भेजा है। बस पाखण्ड और धूर्त्तता का भाषानुवाद करके बड़ा-सा पोथा तैयार किया है। फिर इन पंक्तियों को बड़ी ही निम्नता के साथ सकलित करके अपनी पूरी मूर्खता का परिचय दिया है।

मेरिया : लौंगेविले ने इसको और इन मोतियों को भेजा है मुझे। पत्र तो करीब आधा मील लम्बा होगा।

राजकुमारी : मैं भी यही सोचती हूँ। क्या तुम यह नहीं चाहती अपने हृदय मे कि पत्र तो छोटा होता और प्रेम का बन्धन उससे कहीं अधिक बड़ा होता ?

मेरिया : ठीक, या मेरी तो यह इच्छा है कि यह साथ कभी टूटे ही नहीं।

राजकुमारी : अपने प्रेमियों का इस तरह उपहास करने के लिए हम काफी अक्लमंद हैं।

रोजालिन : वे तो और भी गये बीते बेवकूफ हैं जो इस तरह अपनी हँसी करा रहे हैं। जाने से पहले उस बैरोने के अहम् को तो मैं

कुचलकर जाऊँगी । काश, इस हफ्ते के आखिर तक वह यहाँ आ जाय तो फिर देखना मैं कैसे उसको मतवाला बनाती हूँ । वह झुकेगा, विनती करेगा, मेरे प्रेम मे तडपेगा और समय की प्रतीक्षा करता हुआ अपनी सारी अक्लमदी को बेकार की-सी कविताएँ लिखने मे खर्च करता रहेगा । फिर मेरी आज्ञा के ऊपर नाचता हुआ मुझे, जो उसका उपहास करूँगी, प्रसन्न करने के लिए स्वय इस कार्य मे गर्व का अनुभव करेगा । इस क्रूरता के साथ मै उसके अहम् को समाप्त करूँगी कि वह मूर्ख मेरे हाथ का खिलौना बन जायगा और मैं उसके भाग्य की नियन्ता बनकर रहूँगी ।

राजकुमारी : जब किसी को वश मे किया जाता है तो कोई भी इतने निश्चय के साथ वश मे नही किया जा सकता जैसे वाक्-छल मे अपनी ही अक्लमदी मे फँसे हुए मूर्ख को । क्या एक विद्वान् मूर्ख के लिए बुद्धिमत्ता, शिक्षण-संस्था का ज्ञान और वाक्-चातुर्य आभूषण-स्वरूप नही है ?

रोजालिन . एक नवयुवक का रक्त इतने वेग से प्रवाहित नही होता जितने वेग से गम्भीरता उच्छृखलता के विरुद्ध विद्रोह करती है ।

मेरिया मूर्खो मे जो मूर्खता पलती है, वह इतना कोई विशेष ध्यान आकर्षित नही करती जितना अक्लमद व्यक्तियो मे पलती मूर्खता, जबकि वाक्चातुर्य स्वय मूर्खता लगता है क्योकि वह व्यक्ति इस वाक्चातुर्य के बल पर जितना किसी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न करता है, उतना ही अपने आपको मूर्ख सिद्ध करता चलता है ।

[बौयेट का प्रवेश]

राजकुमारी : बौयेट आ रहा है, और देखो उसके चेहरे पर बड़ी खुशी झलक रही है।

बौयेट : ओ ! मै तो उपहास के मारे मर गया हूँ। राजकुमारी कहाँ है ?

राजकुमारी : क्यो बौयेट ! क्या समाचार है ?

बौयेट : तैयार हो जाइए श्रीमती ! पूरी तैयारी कर लीजिए । तुम भी बाँध लो अपने हथियार सुकुमारियो ! तुम्हारी शान्ति नष्ट करने के लिए सैन्यदल उमड़ा चला आ रहा है। प्रेम अपना वेश बदलकर इधर बढ़ा आ रहा है। अनेक तर्कों से इस तरह सुसज्जित है वह कि तुम देखकर आश्चर्य मे पड़ जाओगी। अपने वाक्चातुर्य को पूरी तरह व्यवस्थित कर लो और फिर अपनी रक्षा के लिए खड़ी हो जाओ और नहीं तो मूर्ख कायरों की तरह अपना मुँह छिपाकर भाग जाओ।

राजकुमारी : तो सन्त डेनिस सन्त कामदेव हो गये। कौन हैं वे जो इस तरह हम पर हमला करने आ रहे है ? बोलिए, बताइए मुझे।

बौयेट : अजीर के पेड़ की शीतल छाया में मैंने आध घंटा विश्राम करने का विचार किया था, तो उसी समय मेरे विश्राम मे व्याघात पहुँचाने के लिए सम्राट् और उनके साथी वही उस पेड़ के नीचे बाते करने के लिए आ गये। तुरन्त ही मै एक पास के कुज मे घुस गया और वहाँ से छिपकर मैंने उनकी उन बातों को सुना जिनको आप अब सुनेगी कि अपने वेश बदलकर धीरे-धीरे वे यहाँ आयेंगे। उनका अग्रदूत एक बेवकूफ धूर्त्त आदमी है जिसने अपने सदेश को जबानी याद कर लिया है। बोलना और

उसके साथ अभिनय करना उन्होने उसे सिखा दिया है कि इस तरह तुम्हे यह बोलना चाहिए और इस तरह की स्थिति में अपने आपको रखना चाहिए लेकिन कभी-कभी वे यह भी सन्देह करते थे कि अद्वितीय रूप की चमक के सामने इस बेवकूफ के दिमाग में पूरी तरह अन्धेरा न छा जाय कि किये कराये सबको भूल जाय क्योकि सम्राट् ने कहा था—'तुम एक अप्सरा को देखोगे लेकिन डरना मत, धैर्य और साहस रखकर बोलते जाना।' इस पर उस बेवकूफ लड़के ने जवाब दिया था—'एक अप्सरा कोई दुष्टात्मा नही होती फिर मुझे उससे डरने की क्या आवश्यकता है ? अगर वह एक दैत्या होती तो मै अवश्य उससे डरता।' इसे सुनकर सभी हँस पड़े और उन्होने उसकी इतनी तारीफ की कि वह मजाकिया बेवकूफ उन तारीफो से और भी फूल गया। एक तो उसकी केहुनी पकड़कर मलने लगा और शपथ खाने लगा कि इससे पहले कभी इससे अच्छी बात सुनने मे नही आई। दूसरा अपनी उगली और अँगूठा दिखाकर बोला कि चाहे जो कुछ हो हम इस काम को करके रहेगे। तीसरा बकरी की तरह उछलकर चिल्लाने लगा—'सब ठीक होगा।' चौथा तो अपने पैर के अँगूठे पर घूमकर जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथ ही वे सभी इतने जोर से हँसकर जमीन पर गिर पड़े कि इस बहुत जोर की हँसी को देखकर तो ऐसा लगता है कि उनके मूर्खतापूर्ण भावावेग को रोकने का हमारा सारा प्रयत्न उपहासास्पद होगा।

राजकुमारी : लेकिन क्या वे हम से मिलने आ रहे है ?

बौयेट : हाँ, अवश्य ! और जैसा मेरा अनुमान है बिलकुल मस्कोवाइट या रूस-निवासी के से वस्त्र पहने हुए है। उनके आने का

तात्पर्य हमसे बाते करके प्रेम करना और हमारे साथ नाचना है। उनमे से प्रत्येक अपनी-अपनी प्रेयसी को अपना प्रेम दिखायेगा और अनेक तरह के उपहार उसको देगा।

राजकुमारी : क्या वे ऐसा करेगे ? तो फिर उन योद्धाओं की परीक्षा ली जायगी। सखियो ! प्रत्येक अपने चेहरे पर एक नकली चेहरा लगा लो जिससे उनमे से कोई भी कितनी भी विनती करके हममे से किसी एक की भी शकल न देख पाये।

रोजालिन ! लो यह चेहरा तुम पहन लो, तब सम्राट् आकर तुम को ही अपना प्रेम प्रदर्शित करने लगेगे। यह लो प्रिय सखी। मेरा चेहरा और अपना मुझको दे दो। इस तरह बैरोने मुझे रोजालिन समझेगा। तुम भी सखियो ! अपना रूप एक-दूसरे से बदल लो जिससे तुम्हारे प्रेमी भी भ्रम में पड़कर इसी तरह अपनी प्रेयसी को छोड़कर दूसरी को अपना प्रेम प्रदर्शित करने लगे।

रोजालिन : आओ तो, अपना चेहरा एक-दूसरे से बदल ले।

कैथराइन : लेकिन इससे तात्पर्य क्या है आपका ?

राजकुमारी : मेरा उद्देश्य उनके उद्देश्य को निष्फल बनाना है। वे भी तो सिर्फ एक मजाक की तरह ही इस सबको करना चाहते हें, बस उस मजाक का जवाब मजाक में ही देना मेरा सारा उद्देश्य है। इस तरह प्रेयसियो की इस अदला-बदली मे वे अपनी बहुत सी हृदय की बाते दूसरी स्त्री के सामने खोल जायेगे और फिर अगली बार जब हम अपनी सही सूरते लेकर उनसे बाते करने बैठेगी तो पूरी तरह जमकर उनका मज़ाक उड़ायेगी।

रोजालिन : लेकिन अगर वे चाहें तो क्या हमें उनके साथ नाचना चाहिए ?

राजकुमारी : न, मरते दम तक अपना पैर नही हिलायेगी और हम उनकी बात का कोई जवाब नही देगी बल्कि जैसे ही कोई बात कही जाय तुरन्त ही हर एक अपना मुँह मोड़ ले।

बौयेट : लेकिन इस तरह की उपेक्षा और तिरस्कार तो उस पहले प्रेमी के हृदय को तोड देगा और इससे तो उस समय वह अपनी सारी स्मृति खो बैठेगा।

राजकुमारी . इसीलिए तो मै यह करना चाहती हूँ। मुझे इसमें तनिक भी शका नही है। अगर वह हारकर बाहर चला गया तो दूसरे तो कभी अन्दर आयेगी ही नही। एक खेल को दूसरे खेल से काटने वाला ऐसा और कोई खेल नही है] कि उनकी चीज को तो हम उनसे छीन ले और अपनी अपने पास ही बची रहे।

इस तरह हम उनके उपहास करने के इरादे को तोड़कर उल्टे उनका इतना उपहास करेगी कि शरम से सिर नीचा करके वे वापिस अपने घरो को चले जायँगे।

[तुरही की आवाज]

बौयेट : तुरही की आवाज आ रही है। बदल डालो अपने रूप। पहन लो एक-दूसरे के चेहरे।

[महिलाएँ चेहरे चढ़ा लेती हैं।]

[काले मूर जाति के लोग तुरही बजाते हुए आते हैं। उनके साथ लड़का बोलता हुआ आता है, साथ में वेश बदले हुए अन्य सरदार है।]

लड़का : ससार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियो ! हमारा अभिवादन स्वीकार करो।

बैरोने : अच्छे रेशमी कपड़े से अधिक सुन्दरी नही है ये।

लड़का . जिन्होने कभी भी आकर मनुष्य-ससार की ओर अपनी

पीठ फेरी है, उन स्त्रियों मे से सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियो का एक समूह।

बैरोने : पीठ नही बदमाश, बेवकूफ, आँख, उनकी आँख कहना चाहिए था।

लड़का : हाँ, जिन्होने कभी भी आकर मनुष्य-ससार की ओर अपनी आँखे फेरी है।

फिर—

बौयेट : हाँ ठीक है, अब जाओ यहाँ से। फिर देखना।

लड़का : फिर यदि तुम्हारी कृपा हो जाय तो उस समय दिव्यात्माएँ नही देखती है।

बैरोने : गधा, धूर्त्त कही का, एक बार देखने लगती है।

लड़का : हाँ, तुम्हारी उन आँखो से जिनमे भगवान् के पुत्र सूर्य की आभा है, एक बार माना दिव्यात्माएँ देखने लगती है।

बौयेट : उस विशेषण के लगाने से वे कोई जवाब नही देगी। इसके बजाय तो तुम पुत्र सूर्य के स्थान पर पुत्री की आभा से व्याप्त कर देते।

लड़का : वे मेरी तरफ ध्यान ही नही देती। अब मै बाहर जाता हूँ।

बैरोने : क्या यही तेरे चातुर्य की पूर्णता है ? बदमाश, चल, भाग जा यहाँ से।

[लड़के का प्रस्थान]

रोजालिन : ये अपरिचित व्यक्ति कौन है और क्या चाहते है ? उनका तात्पर्य मालूम कर लो बौयेट। यदि वे हमारी भाषा बोलते हो तो हमारी यह इच्छा है कि कोई सुलझा हुआ आदमी उनके तात्पर्य को बताये। मालूम करो कि वे क्या चाहते है।

बौयेट : आप राजकुमारी से क्या चाहते है ?

बैरोने : बस, शान्ति के सिवाय और कुछ नही और एक वार उनसे विनम्र भेंट।

रोजालिन . क्या चाहते है वे, बताओ ?

बौयेट शान्ति के सिवाय और कुछ नही और एक वार विनम्र भेंट।

रोजालिन ठीक है तो शान्ति तो उनके साथ है, इसलिए उनसे कहो कि वे यहाँ से चले जाएँ।

बौयेट : वे कह रही है कि यह तो आपके साथ है ही इसलिए यहाँ से चले जाइए।

सम्राट् : उनसे कहना कि यहाँ इस घास पर आपके साथ नाचने के लिए हम वहुत वडा मीलो का फासला माप करके आये है।

बौयेट : वे कह रहे है कि तुम्हारे साथ इस घास पर नाचने के लिए वे बहुत वडा मीलो का फ़ासला माप करके आये है।

रोजालिन : यह बात नही है। अच्छा, उनसे पूछो कि एक मील में कितनी इन्च होते है ? अगर उन्होने मीलो का रास्ता मापा है तो फिर एक मील का माप तो वे आसानी से बता देगे।

बौयेट . अगर इधर आने मे आपने वहुत मीलो का रास्ता पार किया है तो राजकुमारी आप से पूछती है कि एक मील मे कितने इन्च होते है ?

बैरोने उनसे कह देना कि हम उन्हे थके हुए कदमों से ही मापते है।

बौयेट वे स्वय ही सुन रही है।

रोजालिन · कितने थके हुए कदम एक मील के रास्ते मे होते है ?

बैरोने आपके लिए जिसका व्यय हम करते है उसको हम नही नापते। हमारा कर्त्तव्य तो इतना ऊँचा और असीम है कि बिना किसी तरह का हिसाब रखे हुए भी हम इसको पूरा कर सकते है। अब अपने सूर्य की सी आभा वाले चेहरे को दिखाइए

जिससे जंगली मनुष्यों की तरह हम उसकी पूजा कर सके।

रोज़ालिन : मेरा चेहरा तो केवल एक चाँद है और उसको भी बादलों ने ढाँप रखा है।

सम्राट् : उन बादलों का भी सौभाग्य है कि उन्हे ऐसा करने का अवसर मिला है। चमकीले और सुन्दर चाँद। अब तो निकल आओ और बादलो के हट जाने पर अपने तारो को हमारी पनीली आँखों मे चमकने दो।

रोजालिन : व्यर्थ की प्रार्थना करने वाले श्रीमान् ! कुछ और अधिक माँगिए। आप तो इस समय पानी मे चाँदनी के लिए प्रार्थना कर रहे है !

सम्राट् : तो फिर एक बार फिरकर मेरे साथ नाच लीजिए। आपने माँगने के लिए कहा है, इसलिए मेरे विचार से यह माँगना विचित्र तो नही है।

रोजालिन : अच्छा तो फिर गाना बजने दो। लेकिन शीघ्र समाप्त कर दीजिए इसको। अभी नही, कोई नाच नहीं होगा। इस तरह मै चन्द्रमा के समान फिर जाती[1] हूँ।

सम्राट् : क्या आप नही नाचेगी ? इस तरह आप कैसे फिर गई ?

रोजालिन : आपने तो चन्द्रमा को पूरा समझा था लेकिन अब उसका आकार फिर गया है।

सम्राट् . लेकिन वे तो अभी तक चन्द्रमा सी है और मै एक प्राणी हूँ। गाना वज रहा है, इस पर कुछ नाचिए न।

रोजालिन : अपने कान लगा रखे है मैंने इसकी तरफ।

---

१. Change : इस शब्द पर पन का प्रयोग होता है। इसका अर्थ है— फिर जाना या वदल जाना। नाच के साथ फेरे से इसका अर्थ स्पष्ट होता है और बाद में फिर जाना यानी वदल जाने से अर्थ स्पष्ट होता है।

सम्राट् . लेकिन इसके साथ तो आपके पैर चलने चाहिएँ।

रोजालिन : चूँकि आप अपरिचित व्यक्ति है और यहाँ अकस्मात् ही आ गये है, हम अच्छी साबित नही होगी। लीजिए हाथ मिलाइए, हम नही नाचेगी।

सम्राट् . तो फिर हाथ किसलिए मिलाऊँ ?

रोजालिन : एक-दूसरे से बिछुडने के लिए । बस श्रीमान् ! यही हमारा सौहार्द्र है और इस तरह यह नाच समाप्त होता है।

सम्राट् . चाहे आप अच्छी न हो लेकिन इस तरह का और नाच नाचिए।

रोज़ालिन : किसी भी कीमत पर हम इससे अधिक नही कर सकती।

सम्राट् . आप स्वय की कीमत जानती है । आपका सहवास किस तरह से प्राप्त हो सकता है ?

रोज़ालिन : आपकी अनुपस्थिति से ही।

सम्राट् : यह कभी नही हो सकता।

रोजालिन : तो फिर हम किसी तरह से प्राप्त भी नही की जा सकती। अच्छा विदा। दो बार तो आपके बनावटी चेहरे के लिए और आधी बार आपके लिए नमस्ते।

सम्राट् · अगर आप नाचने के लिए मना करती है तो फिर आइए बैठकर और अधिक बाते करे।

रोजालिन : अकेले मे।

सम्राट् · यह तो बडी प्रसन्नता की बात है।

बैरोने : श्वेत हाथ वाली श्रीमती ! आपसे केवल एक अच्छा मीठा वचन कहना चाहता हूँ मै।

राजकुमारी शहद जैसा, या दूध जैसा या शकर जैसा बताइए, ये तीनो ही मीठे होते है।

बैरोने : तो फिर तीन पासे फैंकिए और अगर आप इतनी अच्छी

बनती है तो तीन तरह की शराब (मैथेग्लिन, वर्ट, मैम्से) ला देना। पासे का खेल अच्छा चला। ये आधी दर्जन मिठाइयाँ है ?

राजकुमारी : सातवी मिठाई है विदा। क्योंकि आप धोखा दे सकते है इसलिए मै आपके साथ अब और अधिक नही खेलूंगी।

बैरोने : बस अकेले मे एक शब्द।

राजकुमारी : यह मीठा न हो।

बैरोने : आप तो मेरे साथ कठोरता दिखाकर मुझे दुखी करती है।

राजकुमारी . कठोरता और वैमनस्य तो बुरी चीजे है।

बैरोने : इसलिए कहता हूँ, एकान्त मे मिल लीजिए।

ड्यूमेन : क्या आप मुझे आपसे एक शब्द कहने-सुनने की आज्ञा देगी ?

मेरिया : क्या कहना ? नाम बताओ उस शब्द का।

ड्यूमेन . सुन्दरी देवी !

मेरिया : क्या आप ऐसा कहते है श्रेष्ठ लॉर्ड ? इसे तो आप अपनी सुन्दरी पत्नी के लिए ही प्रयोग करिए।

ड्यूमेन : कृपा करके इतना एकान्त मे ही, फिर मै आपसे विदा लेकर चला जाऊँगा।

कैथराइन : क्या आपके इस बनावटी चेहरे पर जीभ नहीं लगाई गई है ?

लौंगेविले . श्रीमती ! मै इसका कारण जानता हूँ कि आप यह क्यों पूछ रही है।

कैथराइन : अवश्य श्रीमान् ! शीघ्र बताइए, मै इसके लिए लालायित हूँ।

लौंगेविले : अपने चेहरे में आपके पास दो जीभ है, उससे कम से कम

एक जीभ तो आप मेरे इस गूंगे चेहरे को दे ही दीजिए।

कैथराइन डचमैन बॉच्छा[1] कहता है। क्या बॉच्छा गाय के बछड़े को नही कहते ?

लौंगेविले : एक बछड़ा, सुन्दरी ?

कैथराइन नही, एक श्रेष्ठ लॉर्ड एक बछडा।

लौंगेविले देखिए, इन तीखे मजाको मे आप किस तरह अपने आपको परेशान कर रही है। क्या आप सीग लगवायेगी सच्चरित्र देवी ? ऐसा मत करिए।

कैथराइन तो फिर इससे पहले कि आपके सिर पर सीग उगना शुरू हो, आप बछडे ही रहकर मर जाइए।

लौंगेविले . मेरे मरने से पहले एकान्त मे एक शब्द सुन लीजिए।

कैथराइन अच्छा ,तो धीरे मिमियाओ। कसाई तुम्हारी आवाज को सुन रहा है।

बौयेट : दूसरो का मजाक बनाने वाली स्त्रियों की बाते तो उस्तरे की ऐंसी धार की तरह पैनी होती है, जो दिखाई भी नही देती है। वह ऐसे बाल को भी चीर सकती है जो दिखाई भी नही पडे। उनमे पूरी अक्लमदी भी होती है। ऐसा लगता है कि उनका मिलना और उनका यह वाक्चातुर्य पख रखता है जो बाणों, गोलियो, हवा, विचार-प्रवाह से भी अधिक तेज जा सकता है।

---

१. Veal यहां डचमैन के उच्चारण का मजाक बनाया गया है। वह Well को Veal कहकर बोलता है, उसी Veal शब्द पर पन का प्रयोग किया जाता है। उसके दो अर्थ हैं—(१) अच्छा (२) गाय का बछड़ा। हमने बहुत अच्छा का उच्चारण 'बॉच्छा' शब्द के द्वारा कराकर बॉच्छा और बछड़ा का तार जोड़ा है।

रोज़ालिन . बस अब एक शब्द भी अधिक मत बोलना, सखियो ! चलो, छोड़ चलो यहाँ से ।

बैरोने : भगवान् की सौगन्ध, सभी इस साफ मजाक से बुरी तरह गये हैं।

सम्राट् : पागल स्त्रियो ! विदा ! आप लोगों के पास तो सीधे वाक्-चातुर्य के सिवा और कुछ है ही नही।

[सम्राट् तथा सरदारों और काले मूरों का प्रस्थान]

राजकुमारी · मेरे बर्फ की तरह जमे हुए कठोर मॉस्को-वासी ! क्या यही आश्चर्य-चकित कर देने वाला आपका वाक्चातुर्य और उसका परिणाम है ?

बौयेट : वे तो दीपक की तरह है जो आपके मधुर श्वासो से बुझ जायँगे ।

रोज़ालिन : अच्छा वाक्चातुर्य है इनका ! बहुत नीचे दर्जे का; बड़ा ही खराब और मोटे तरह का ।

राजकुमारी : ओ ! वाक्चातुर्य मे कमजोर ये राजसी परिवार के ग़रीब आदमी मजाक करते है। क्या तुम्हारे विचार से वे आज रात को स्वय को फाँसी पर नही लटका लेगे ? या कभी भी अगर इन्होंने अपनी शक्ल दिखाई तो वे बनावटी चेहरा लगाकर ही दिखायेगे। यह बहुत चतुर बनने वाला बैरोने तो पूरी तरह झेंप गया था ।

रोज़ालिन : उन सबकी हालत खराब थी। सम्राट् तो एक मीठे शब्द के लिए रोने वाले ही थे ।

राजकुमारी : बैरोने ने तो सौगन्ध खा ली थी कि वह अब किसी से भी प्रेम नही करेगा।

मेरिया : ड्यूमेन तो मेरी आज्ञा मे था और उसकी तलवार भी मेरे

इशारे पर चलती थी। मैंने कहा—कोई बात नही, तो उसी समय मेरा आज्ञापालक सेवक चुप हो जाता था।

कैथराइन : लौंगेविले कहता था कि मैं उसके हृदय के ऊपर अपना स्वत्व जमा चुकी हूँ, और जानती हो उसने क्या कहा था मुझसे ?

राजकुमारी : शायद बीमार कहा था।

कैथराइन . बिलकुल, यही तो।

राजकुमारी : जाओ, ओ बीमारी ! दूर हट जाओ।

रोजालिन · जो अच्छे वाक्चतुर और अक्लमद आदमी होते है वे चपटी ऊनी टोपियाँ पहनते है लेकिन क्या सुनोगी ? सम्राट् ने मुझसे अपने प्रेम की शपथ खा ली है।

राजकुमारी : और उस उतावले बैरोने ने मुझसे अपने प्रेम की सौगन्ध खाई है।

कैथराइन : लौंगेविले ने तो जन्म ही मेरी सेवा करने के लिए लिया है।

मरिया . जैसे एक पेड़ पर छाल होती है उसी तरह ड्यूमेन मेरा है।

बौयेट . श्रीमती और तुम सभी सुन लो कि अपनी सही शक्ल मे वे कुछ ही क्षणो मे यहाँ आ जायँगे क्योकि यह कभी नही हो सकता कि वे इस अपमान को सह पायेगे।

राजकुमारी क्या वे लौटेगे ?

बौयेट : अवश्य, अवश्य, परमात्मा जानता है। यद्यपि वे चोट खाकर लँगडे हो गये है फिर भी खुशी से तुम तो अपने मन मे फूल लो। इसलिए अपना-अपना लगाव बदल लो और जब वे फिर आये तो गुलाब के मधुर फूलों की तरह इस ग्रीष्म ऋतु की वायु मे खिलना।

राजकुमारी : कैसे खिलना ? कैसे खिलना ? समझाओ अपनी बात।

बौयेट : सुन्दरियाँ जब अपने चेहरे पर नकली चेहरा चढ़ा लेती है तो वे गुलाब के उन फूलों की तरह होती है जिनकी कलियां अभी तक फूटी नही हों। नकली चेहरा हटा देने के पश्चात् उनका हलके लाल और सफेद रंग का चेहरा ऐसा सुन्दर लगता है मानो बादलों को हटाकर देवदूतों की सुन्दर आभा उस पर आ गई हो या वह एक खिला हुआ गुलाब के फूल जैसा हो।

राजकुमारी : तो फिर यह सोचकर अपनी परेशानी दूर करो कि अगर वे अपनी सही शक्ल में ही प्रेम करने लौटकर आये तो हम क्या करेंगी ?

रोज़ालिन : श्रीमती ! यदि आप मेरी सम्मति मानें तो अभी भी हमें उन्हे अपने नकली वेश मे ही मानकर उनकी खिल्ली उड़ानी चाहिए। हम उनसे यह शिकायत करेंगी कि कैसे बेवकूफ यहाँ आ गए है जो मॉस्को-वासियों की तरह बेतुकी पोशाक पहनकर अपने आपको छिपाये हुए है। और अत्यत आश्चर्य करती हुई हम उनके प्रति कौतूहल दिखायेंगी और उनसे उनका परिचय पूछकर यह पूछेंगी कि उन्होंने अपने इस भद्दे से बनावटी वेश को किस तात्पर्य से धारण किया है और क्यो ऐसी बुरी भूमिका बाँधकर वे अपने उपहासास्पद भद्दे और बुरे वेश को दिखाने के लिए हमारे खेमे तक आये हैं।

बौयेट श्रीमती ! हट जाइए पीछे। वीर पुरुष निकट ही आ गए है।

राजकुमारी : जिस वेग से अण्डा जमीन पर भागता है उसी वेग से चलो अपने खेमे मे चले।

[प्रस्थान]

[सम्राट् तथा अन्य लोगो का प्रवेश]

सम्राट् . श्रीमान् ! मै आपकी मंगल कामना करता हूँ। राजकुमारी कहाँ है ?

बौयेट : अपने खेमे मे चली गई है । उनके लिए श्रीमान् की जो आज्ञा हो, मुझसे कहे ।

सम्राट् . यही, कि केवल एक शब्द कहने के लिए मै उनसे मिलना चाहता हूँ ।

बौयेट : जो आज्ञा । राजकुमारी अवश्य आपकी इच्छा पूर्ण करेगी, यह मै जानता हूँ श्रीमान् ।

[प्रस्थान]

बैरोने : जैसे कबूतर अपने साथ मटर के दाने लादकर चलते है उसी तरह यह आदमी भी वाक्चातुर्य को अपने सिर पर लादकर चलता है और फिर जब भी मौका होता है उसका प्रदर्शन करता है। यह शब्द और वाक्यो का एक फेरी वाला है और बाजार, सभा, मेले, उत्सव, समारोह आदि सभी जगह अपना माल बेचता फिरता है। परमात्मा जानता है कि हम जो इसका ही थोकबन्द व्यापार करते है, कभी भी ऐसे दिखावे के साथ इसको नही बेचते। यह बहादुर तो स्त्रियो को अपनी केहुनी से सटाकर मानो बाँध लेता है। अगर यह आदम होता तो सचमुच ईव को अपने वश मे कर लेता। यह तो हर कौशल दिखाकर बोल भी लेता है । यही तो है जिसने सौहार्द्र दिखाने के लिए अपना हाथ चूमा था। यह तो फैशन का गुलाम और नकलची है श्रीमान् ! क्योकि जब यह बिलियर्ड वगैरह कोई भी खेल मेज पर बैठकर खेलता है तो पासे के खेल को बडी अच्छी जबान मे बुरा कहता है। गाना भी वह बहुत बुरा गाता है। उन सुन्दरियो की देख-

भाल के लिए जो भी उसे सुधार सके सुधारे, वे तो उसे प्रिय और मधुर कहकर पुकारती है। सीढियाँ, जिन पर वह चलता है, उसके पैर चूमती है। यह एक ऐसा फूल है जो व्हेल मछली की हड्डी के से अपने सफेद दाँत दिखाकर प्रत्येक पर मुस्कराता है। जो व्यक्ति किसी प्रकार का ऋण लेकर नही मरना चाहते, वे उस मीठी जबान वाले बौयेट का ऋण चुका कर जाते है।

सम्राट् . सच कहता हूँ, उसकी इस मीठी जबान पर फोडा हो जाए जिससे उसने आर्मेडो के उस सेवक को हरा दिया।

[महिलाओ का प्रवेश]

बैरोने . देखिए वह आ रहा है। ओ व्यवहार-कौशल ! इस आदमी के द्वारा प्रदर्शन पाने से पहले तू क्या था ? और अब क्या है ?

सम्राट् : श्रीमती को सभी का अभिनन्दन।

राजकुमारी . सभी के अभिनन्दन मे सौदर्य कुरूपता में बदल जाता है। मेरा तो ऐसा ही विचार है।

सम्राट् : अगर आप कर सके तो मेरी बात को और अच्छी तरह समझने का प्रयत्न करिए।

राजकुमारी : तो फिर मेरे प्रति शुभकामनाएँ दे दीजिए। बस, फिर विदा।

सम्राट् : हम तो आपसे मिलने आए थे श्रीमती ! हम आपको अपने नगर के भीतर अपने महल मे ले जाना चाहते है। हमारी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए।

राजकुमारी : इसी मैदान मे ही रहेगी हम तो, आप अपनी प्रतिज्ञा रखिए। न तो परमात्मा और न मै इस तरह के प्रतिज्ञा-भ्रष्ट आदमियो को अच्छा समझते है।

सम्राट् : जिसके लिए आपने मुझे स्वयं प्रेरित किया है, उसी के लिए

मुझे बुरा मत कहिए। आपकी आँखो मे वह गुण है कि इसी कारण मैंने अपनी प्रतिज्ञा तोड दी है।

राजकुमारी : गुण नही दोष कहना चाहिए था आपको, क्योकि गुण तो कभी भी किसी को अपने वचन से पतित होने के लिए प्रेरित नही करता। अब मै अपने इस सम्मान के बल पर कहती हूँ, जो पूरी तरह पवित्र है, कि चाहे दुनिया भर की आपत्तियां सहन कर लूँगी लेकिन आपके घर जाकर आपकी अतिथि बनना स्वीकार नही करूँगी। पूरी दृढता और विश्वास के साथ ईश्वर को साक्षी बनाकर जो प्रतिज्ञाएँ की जाती है, उनको तोडने वालो से मुझे बहुत घृणा है।

सम्राट् : धिक्कार है हमे कि आप इस निर्जन स्थान मे अकेली रही और किसी ने आपकी देख-भाल नही की।

राजकुमारी . नही, यह बात नही है श्रीमान्! हमने यहाँ अनेक प्रकार के मनोरजन मे अपना समय बडी प्रसन्नता के साथ बिताया है। रूसियो का एक पूरा टोल अभी-अभी तो यहाँ से गया है।

सम्राट् . यह कैसे श्रीमती ? रूसी ?

राजकुमारी : जी हाँ श्रीमान्! सच कहती हूँ मै। अच्छी शक्ल-सूरत और बडे ही श्रेष्ठ व्यवहार वाले वीर पुरुष थे।

रोजालिन : सच बताइए श्रीमती ?

श्रीमान्! यह बात नही है। मेरी सखी तो समय के शिष्टाचार के नाते सौहार्द्र दिखाती हुई उनकी उतनी प्रशसा कर रही है जिसके अधिकारी वे नही है। चार रूसी यहाँ हमसे आकर मिले थे। एक घटे तक वे यही ठहरे थे और बातचीत करते रहे थे। उस एक घटे के बीच श्रीमान्, उन्होने हमारे प्रति

एक भी शब्द अच्छा नही कहा। मै उनको मूर्ख कहने का साहस तो नही करती लेकिन इतना अवश्य सोचती हूँ कि जब मूर्खों को प्यास लगती है तो इस तरह दिखाते है मानो उनके पास पीने को है।

बैरोने : यह मजाक मुझे बडा नीरस लगता है।

सुन्दरी ! आपकी बुद्धि तो बुद्धिमत्तापूर्ण वस्तुओं कोभी मूर्खता-पूर्ण बना देती है। जब हम अपनी अच्छी साफ आँखों से दिव्य आभा से व्याप्त सूर्य को देखते है तो उस आभा से हमारी आँखो की आभा नष्ट हो जाती है। आपकी भी ऐसी ही सामर्थ्य है कि बुद्धिमत्तापूर्ण वस्तुएँ तो मूर्खतापूर्ण लगने लगती है और मूल्य-वान वस्तुएँ निम्नकोटि की लगती है।

रोजालिन : तो इससे सिद्ध हुआ कि आप बुद्धिमान और धनी है क्योकि मेरी दृष्टि मे—

बैरोने . मै तो एक मूर्ख हूँ और पूरी तरह अभावग्रस्त हूँ।

रोजालिन : तो फिर जो आपका है उसे आप लीजिए। मुझे बोलने के बीच मे रोक देना तो बुरी बात है।

बैरोने · ओ, मेरी सारी सम्पत्ति पर और मुझ पर आपका अधिकार है।

रोजालिन : पूरे मूर्ख पर मेरा अधिकार है।

बैरोने : इससे कम मै आपको नही दे सकता।

रोजालिन : कौन-सा चेहरा आपने अपनी शक्ल पर चढाया था ?

बैरोने : कहाँ ? कब ? कैसा चेहरा ? इसे आप क्यों पूछती है ?

रोजालिन : वहाँ, उस समय, वह नकली चेहरा जिससे आपकी बुरी शक्ल छिप गई थी और उसकी जगह वह अच्छा चेहरा आ गया था।

सम्राट् · अरे, हमको तो पहचान लिया गया है ! अब तो ये खूब खुल

कर हमारा मजाक वनायेगी।

ड्यूमेन · हमे इसे स्वीकार करके मजाक वना देना चाहिए।

राजकुमारी : श्रीमान् को इतना आश्चर्य कैसे हो रहा है ? आप इतने चिंतित क्यो दिखाई दे रहे है ?

रोजालिन अरे इनका सिर थाम लो, ये कुछ वोलेगे।

क्यो श्रीमान् ! आप इतने पीले क्यो दिखाई दे रहे है ? मेरे विचार से मास्को से यहाँ तक की समुद्री यात्रा की परेशानी चढ़ी हुई है आप पर।

वैरोने तो इस प्रतिज्ञा-भग के लिए आकाश के तारे हमारे ऊपर अभिशाप गिरा रहे है, क्या एक पीतल का चेहरा भी इस स्थिति का अधिक देर तक सामना कर सकता है ? मै यहाँ खडा हो जाता हूँ श्रीमती ! अव मुझ पर आप अपनी सारी चतुराई को दिखा लीजिए। मेरी खिल्ली उडाकर मेरे हृदय को आघात पहुँचा लीजिए और चाहे किसी भी तरह के मजाक से मुझे परेशान कर लीजिए। मै अवोध वन जाता हूँ, अव आप अपना पूरा शब्द-चातुर्य और वुद्धि का छल दिखा लीजिए। अपनी वातो के तीखेपन से मुझे क्षार-क्षार कर डालिए, मै फिर कभी भी न तो आपसे नाचने के लिए कहूँगा और न रूसी तरीके से कभी आपकी सेवा मे उपस्थित होऊँगा।

ओ ! फिर मै कभी भी लिखित वातो पर विश्वास नहीं करूँगा और न एक स्कूल में पढने वाले लडके की-सी वाणी की गति मे किसी प्रकार का विश्वास रखूँगा, न कभी किसी अपने मित्र के पास नकली चेहरा लगाकर आऊँगा और न एक हार्प वजाने वाले अन्धे आदमी के गीत की तरह कभी गीत लिखकर प्रेम करने का प्रयत्न करूँगा। वहुत ही चमक-

दार वाक्य, बडे ही चिकने और खूबसूरत शब्द, एक पूरा शब्द-जाल, लम्बे और मुश्किल शब्द, अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिए अस्वाभाविक भाषा का प्रयोग—अपनी इस सनक का प्रदर्शन करता रहा हूँ मै अब तक। अब मै उस सब को छोड़ता हूँ और यह निश्चय करता हूँ यह सफेद दस्ताना (परमात्मा जाने कितना सफेद है) इसका साक्षी है कि अब से आगे मै अपने प्रेम का प्रदर्शन पूरी स्वाभाविकता के साथ सरल और स्वाभाविक शब्दो मे किया करूँगा।

परमात्मा मेरी रक्षा करे ! श्रीमती, मै पहले आपसे ही प्रारम्भ करता हूँ। आपके प्रति मेरा प्रेम दृढ और पूरी तरह निर्मल है—दोष-विहीन ।

रोज़ालिन : विहीन, विहीन, यह क्या है, कृपया बताइए ।

बैरोने : अभी तक भी पुरानी आदत से एकाध शब्द आ ही जाता है। ओह ! क्षमा करिए, मुझे बड़ा दु:ख है। धीरे-धीरे मे इस आदत को पूरी तरह छोड़ दूंगा। ठहरिए, देखे तो। इन तीनो पर तो 'परमात्मा हमारे ऊपर दया करे'[1] यह लिख देना चाहिए। ये तो रोगग्रस्त है। आपकी आँखो से ही इनको यह प्लेग का रोग लग गया है । इन सरदारो के अलावा आप भी तो इससे बची हुई नही है क्योकि अपने प्रेमियो की भेंट मै आपके पास देख रहा हूँ।

राजकुमारी : नही, जिन्होने हमे ये भेंटे दी थी, वे सभी प्रकार के रोगों से अलग है।

---

१. Lord have mercy on us : इंगलैंड में सन् १५९२-९३ में जो प्लेग फैली थी उस समय उन घरो के दरवाजो पर, जिनके अन्दर प्लेगग्रस्त लोग थे, ये शब्द—'परमात्मा हमारे ऊपर दया करे !' लिख दिये गये थे।

वैरोने : हमारी सत्ता हम से छिन चुकी है, अब आप इस तरह हमें वरबाद मत करिए।

रोजालिन · यह बात नही है क्योकि यह सत्य कैसे हो सकता है कि आप प्रेमी होकर अपनी सत्ता को छिना हुआ समझते है।

वैरोने : ठहरिए, बस अब शान्त रहिए, मुझे आपसे कुछ भी सम्बन्ध नही रखना है।

रोजालिन : हाँ ठीक है, अगर जैसा मेरा इरादा है मै वैसा ही करने लगू तो फिर आप सम्बन्ध नही ही रखेगे।

वैरोने . स्वय बोलती जाइए, बस मेरी बुद्धि तो समाप्त हो चुकी है।

सम्राट् : प्रिय सुन्दरी ! हमने जिस प्रकार धृष्टता के साथ मर्यादा का उल्लघन किया है, उसके लिए हमे कोई बचने का उपाय बताइए।

राजकुमारी : सबसे अच्छा तो अपने अपराध को स्वीकार कर लेना है। बताइए, क्या आप अभी भी यहाँ अपने वेश बदलकर नही खड़े थे ?

सम्राट् : श्रीमती ! मै अवश्य इसी प्रकार खडा था।

राजकुमारी और क्या आपको इसके लिए किसी ने राय दी थी ?

सम्राट् : हाँ, श्रीमती !

राजकुमारी : अच्छा, तो जब आप यहाँ थे तो आपने अपनी प्रिया के कान मे क्या कहा था ?

सम्राट् · यही कि दुनिया मे सबसे अधिक मै उनका सम्मान करता हूँ।

राजकुमारी : यदि वह इसको चुनौती दे तो आप उसको छोड़ देगे।

सम्राट् . नही, मै शपथ खाकर कहता हूँ ऐसा नही होगा।

राजकुमारी · शान्त, शान्त, इसे छोड़ दो। एक बार अपनी शपथ

तोड़कर फिर दूसरी बार भी शपथ तोड़ने मे आपको तनिक भी संकोच नही होगा ।

सम्राट् : अगर मै अपनी इस शपथ को तोड़ दू तो मुझसे घृणा करना ।

राजकुमारी : अवश्य घृणा करूँगी, इसलिए रखिए अपनी इस शपथ को । रोजालिन ! रूसी सज्जन ने तुम्हारे कान मे क्या कहा था ?

रोजालिन : श्रीमती ! वे शपथ खाकर कहने लगे कि वे तो मुझे अमूल्य नयन-ज्योति के बराबर प्रिय समझते है और इस संसार से कही अधिक मेरा सम्मान करते है, इसके साथ यह और जोड़ दिया था उन्होने कि या तो वे मुझसे शादी कर लेगे नही तो इस दुनिया मे जीवित नही रहेगे ।

राजकुमारी : परमात्मा तुम्हें उनका सुख प्रदान करे ! श्रेष्ठ सरदार पूरे विश्वास और सम्मान के साथ अपने वचन को निवाहते है ।

सम्राट् : आपका क्या मतलब है श्रीमती ? मै सच अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैने इन श्रीमती के सामने कभी इस तरह शपथ नही ली ।

रोजालिन : भगवान् साक्षी है, आपने ली थी और इसकी पुष्टि के लिए आपने मुझे यह दिया था । अब श्रीमान्, इसको वापिस ले लीजिए ।

सम्राट् : लेकिन मै तो पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि मैने यह तो राजकुमारी को दिया था । उनकी बांह पर इस रत्न को देखकर ही तो मै उनको पहचानता था ।

राजकुमारी : मुझे क्षमा करिए श्रीमान् ! इस रत्न को तो इन्होने पहन रखा था और मै तो लॉर्ड बैरोने को धन्यवाद देती हूँ, वे ही मुझे प्रिय है । क्या ? आप मुझे प्राप्त करना चाहते है । या अपना मोती वापिस माँग रहे है ?

बैरोने : कुछ भी नही। मै तो दोनो का परित्याग करता हूँ। इस पर खेली गई चाल को मै जान गया हूँ। हमारी चाल का पहले से पता लगाकर आप लोगो ने यह मिलकर निश्चय कर लिया था कि हमारे खेल को एक क्रिसमस सुखान्त नाटक की तरह बनाकर इसकी खिल्ली उडाई जाय। किसी इधर से उधर बात ले जाने वाले ने, या किसी खुशामदी ने, या किसी घृणित दास ने, या किसी चुपचाप खबर पहुँचाने वाले ने, या अधीनता मे रहने वाले किसी साहसी मनुष्य ने या किसी ऐसे डिक ने जो अपने गालो पर भुर्रियाँ डालते हुए मुस्कराता है और मेरी श्रीमती को उस समय प्रसन्न करने की तरकीब जानता है जिस समय वे कुछ विक्षिप्त-सी हो जाती है, इनमे से किसी ने आकर पहले से ही हमारे इरादे खोल दिये है। उनके खुल जाने से सभी स्त्रियो ने आपस मे अपना रूप परिवर्तन कर लिया और हम अपनी पुरानी पहचान के अनुसार ही अपनी प्रेयसी समझकर दूसरी से अपना प्रेम दिखाने लगे। अब इस प्रतिज्ञा-भग का और भी अधिक दु ख हमारे हृदय पर आ गया है क्योकि कुछ इरादतन और कुछ इस भूल में फिर हमारी दूसरी शपथ भी भंग हो गई है। इसी कारण ये सब कुछ हुआ है। अगर आप हमारी चाल को पहले से ही नही जान पाते तो हम फिर उतने झूठे सिद्ध नही होते। क्या आप एक फुटे से मेरी श्रीमती के पैर की लम्बाई नही नाप लेते ? और क्या आप इस तरह मुझसे खुलकर मजाक नही कर रहे है ? और क्या आप श्रीमान् ! एक लकड़ी की तश्तरी पकड़कर उनकी पीठ और आग के बीच खडे होकर मजाक नही बना रहे है ? आपने हमारे अनुचर लड़के को हटाकर भगा दिया। जाइए, आपको तो इस बेवकूफी की छूट है। जब जी मे आये

मर जाना, आपके ऊपर कफन तो धुँएँ का होगा। क्या आप मेरी ओर इस तरह उपहास भरी मुद्रा से देख रहे है ? आँख की मार एक भौटी तलवार की मार के बराबर होती है।

बौयेट : यह सारी घुडदौड़ बहुत अच्छी तरह से खत्म हो गई।

बैरोने : अरे देखिए, वह तो सीधा अपनी सरपट चाल मे बढा चला आ रहा है। ठहरो, मेरा काम तो पूरा हो गया।

[विदूषक का प्रवेश]

विशुद्ध वाक्चातुर्यपूर्ण प्राणी ! स्वागत है ! तुमने आकर यह झगड़ा खत्म कर दिया है।

विदूषक : श्रीमान् ! वे यह जानना चाहते है कि तीन रत्नो को अन्दर आने की आज्ञा है या नही।

बैरोने · क्या वे केवल तीन ही है ?

विदूषक : जी नही श्रीमान् ! यह तो बहुत अच्छा है। हरएक तीन-तीन भेंट रखता है।

बैरोने तो तीन का तिगुना तो नौ हो गया।

विदूषक नही श्रीमान् ! गलती सुधारिए। नही, मेरे ख्याल से ऐसा नही है। आप हमको बेवकूफ नही ठहरा सकते श्रीमान्। क्योकि मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ हम जानते है, उसे हम जानते है। मेरा खयाल है श्रीमान्, कि तीन के तिगुने—

बैरोने : नौ नही होते ?

विदूषक : गलती ठीक करिए श्रीमान् ! हम जानते है कि कहाँ तक यह सख्या पहुँचती है।

बैरोने : भगवान् की सौगन्ध ! मै तो हमेशा से तीन का तिगुना नौ ही जानता हूँ।

विदूषक · श्रीमान् ! यह तो बडे खेद की बात है कि आप इस तरह गिनकर अपनी जीविका अर्जित करते है।

बैरोने कितना होता है यह ?

विदूषक · श्रीमान् वे पार्टी और वे अभिनेता स्वय बता देंगे कि कहाँ तक इसकी ठीक संख्या होती है। मेरा काम तो श्रीमान्, उनके कहने के अनुसार एक गरीब आदमी को पूर्ण बना देने का है। मै तो श्रीमान् ! पोम्पियन[1] महान् बनूंगा।

बैरोने क्या तुम भी उन योग्य रत्नो में से एक हो ?

विदूषक उन्होने मुझे तो महान् पोम्पे के योग्य समझा है। वैसे मै यह तो जानता नही कि कौन योग्य रत्न समझा जाता है लेकिन मुझे उसका अभिनय करना है।

बैरोने जाओ, उन्हे तैयार होने के लिए कह दो।

विदूषक श्रीमान् ! हम बहुत अच्छी तरह से इसको करेंगे, सावधानी के साथ काम किया जायगा।

[प्रस्थान]

सम्राट् बैरोने ! वे तो हमे लज्जित करेंगे इसलिए उनको यहाँ आने ही न दो।

बैरोने मेरे स्वामी ! हम लज्जा के लिए तो इतने कठोर है कि यह कही से भी हमारे भीतर घुस ही नही सकती। सम्राट् और उनके साथियो से एक बुरा खेल रचना भी एक चाल है।

सम्राट् · मै कहता हूँ, वे नही आयेगे।

राजकुमारी मेरे अच्छे लॉर्ड ! अब मै आपके ऊपर आवश्यकता से अधिक शासन रखूंगी। जो अभिनेता कुछ भी अभिनय करना

---

१ Pompion : विदूषक Pompey की जगह Pompion कह जाता है जिसका अर्थ है कद्दू या लौकी।

नही जानते है उनका खेल सबसे अधिक दिलचस्प होता है। वहाँ तो उन अभिनेताओं के जोश से ही लोग खुश हो जाते है और विषयवस्तु तो पूरी तरह उस जोश के नीचे दब जाती है। बिना अभ्यास के जो वे खराब-सा और बेकार चक्कर मे डाल देने वाला अभिनय करते है उसी से लोग सबसे अधिक आनन्द प्राप्त करते है जबकि जिन चीजों को बड़ा अभ्यास और परिश्रम करके तैयार किया जाता है वे शुरू मे ही खत्म हो जाती है।

बैरोने : श्रीमान् ! हमारे खेल के विषय में यह बात ठीक कही गई है।

[आर्मेडो का प्रवेश]

आर्मेडो : सुगन्धिमयी ! मै आपकी मधुर श्वासो के बीच से निकलते कुछ शब्दों के लिए इच्छुक हूँ।

[आर्मेडो सम्राट् से अलग से कहता है और उसे एक पत्र देता है।]

राजकुमारी : क्या यह आदमी भी इस दुनिया मे रहता है ?

बैरोने क्यो ! ऐसा क्यो पूछती है आप ?

राजकुमारी : यह बोलता तो बिलकुल अलग तरह से है। इस पृथ्वी पर मैंने किसी को भी ऐसे बोलते नही सुना।

आर्मेडो . मेरी सुन्दर, मधुर और प्रिय स्वामिनी ! यह तो सब एक ही बात है क्योंकि मै कहता हूँ कि स्कूलमास्टर बहुत ही अजीब आदमी है। बहुत-बहुत ही दम्भी, बहुत-बहुत ही दम्भी लेकिन मै इसको जैसे वे कहते है वैसे ही कहता हूँ—

मै अत्यन्त सम्मान के साथ आपको अभिवादन करता हूँ और आपके मस्तिष्क की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना करता हूँ।

[प्रस्थान]

सम्राट् : यहाँ तो बड़े-बड़े रत्न इकट्ठे होने वाले है। वह तो ट्रॉय के

हैक्टर का अभिनय करेगा, वह विदूपक महान् पोम्पे बनेगा, नैथेनियल एलैक्जेंडर, आर्मेडो का अनुचर वह लडका हरक्यूलीज, होलोफर्नीज जूडाज मेकैबियस बनेगे। अगर ये चार रत्न अपने पहले ही दृश्य मे सफल हो जाते है तो फिर ये चारो अपने रूप बदलकर दूसरे पाँचो का खेल सामने पेश कर देंगे।

बैरोने पहले ही दृश्य मे पाँच अभिनेता है।

सम्राट् आपको मालूम नही है। ऐसी बात नही है।

बैरोने ढोगी ज्ञानी, दम्भी, वह अपढ पादरी, विदूषक और लड़का—पासे के खेल 'नोवम'[1] मे नौ पासे फैकने के अलावा सारी दुनिया मे फिर आपको ऐसे पाँच कही नही मिल सकेंगे। हर एक को उसके पागलपन के साथ ही घेरो।

सम्राट् . जहाज चल पड़ा है। वह तेजी से इधर आ रहा है।

[विदूषक पोम्पे बनकर आता है]

विदूषक · मै पौम्पे हूँ।

बैरोने झूठ बोलते हो तुम, तुम वह नही हो।

विदूषक मै पौम्पे हूँ।

बौयेट तेंदुए का सिर अपने ऊपर रखकर।

बैरोने . अरे वाह ! पुराने मजाकिया दोस्त ! खूब कहा। आओ हम लोग आपस मे दोस्त हो जायें।

विदूषक : 'मै पोम्पे हूँ, वह पौम्पे जिसके नाम के साथ वडा जुड़ा रहता है।'

ड्यूमेन महान्।

१· Novum : एक तरह का पासे का खेल (dice) होता है जिसमें नौ और पांच पासे फैंके जाते है।

विदूषक : 'हाँ महान् । पौम्पे जिसके आगे महान् जुड़ा रहता है, वह पोम्पे महान् जिसने प्राय: रण-क्षेत्र मे तलवार और ढाल लेकर शत्रु के छक्के छुड़ा दिये । इस किनारे-किनारे चलता हुआ मै अकस्मात् यहाँ आ पहुँचा हूँ और अब फ्रांस की इस सुन्दरी के चरणों मे अपने इन शस्त्रों को रखता हूँ । अगर श्रीमती यह कह दे कि पोम्पे इसके लिए धन्यवाद, तो मेरा काम पूरा हो चुका ।

राजकुमारी : महान् पोम्पे ! बहुत धन्यवाद।

विदूषक · इसके योग्य मेरा काम नही है लेकिन मेरे खयाल से मैंने पूरी तरह अपना पार्ट अदा किया है। बस 'महान्' कहने में थोड़ी गलती कर गया था ।

बैरोने : सच कहता हूँ पोम्पे ने अपने आपको सबसे अच्छा रत्न सिद्ध कर दिया है।

[नैथेनियल ऐलैक्जेंडर का रूप बनाकर आता है।]

नैथेनियल : ' जब इस ससार मे मै जीवित था तब इस सारे संसार का शासक था । पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण चारों तरफ मैंने अपनी विजय-पताका लहरा दी थी। मेरी यह ढाल स्पष्ट रूप से यह घोषणा कर रही है कि मै ऐलैक्जेंडर हूँ।'

बौयेट : तुम्हारी नाक ही बता रही है कि तुम वह नही हो क्योंकि यह बहुत सीधी उठी हुई है।

बैरोने : तुम्हारी नाक मे तो सुगन्धि भी नहीं आती।

राजकुमारी : विजेता हार गया है। अच्छा आगे बढो, अच्छे ऐलैक्जेंडर ।

नैथेनियल : जब इस संसार मे मै जीवित था तो मै इस सारे संसार का शासक था ।

बौयेट : बिलकुल ठीक। ठीक कहते हो तुम। तुम इस तरह ऐलिजैंडर थे।

बैरोने : पोम्पे महान्।

विदूषक . आपका सेवक और कौस्टर्ड।

बैरोने इस विजेता को ले जाओ। ले जाओ इस ऐलिजैंडर को।

विदूषक : (नैथेनियल से) श्रीमान्! आपने तो विजेता ऐलिजैंडर को ही पराजित कर दिया। इसके लिए ऐलिजैंडर! तुमसे वह रंगीन कपडा[1] उतरवा लिया जायगा और तुम्हारा वह शेर जो एक कुल्हाडी लेकर चौकी पर बैठा है, रोजैक्स को दे दिया जायगा। वह नवाँ रत्न होगा। अरे, एक विजेता होते हुए भी बोलते हुए डर रहे हो? शरम करके भाग जाओ यहाँ से ऐलिजैंडर! यह ठीक रहेगा तुम्हारे लिए। तुम तो एक मूर्ख, सीधे और ईमानदार आदमी लगते हो और जल्दी से लडखडा जाते हो। सच, वह बहुत ही अच्छा पडौसी है और अच्छा खिलाड़ी है लेकिन ऐलिजैंडर के लिए, हाय, आपने देखा, कि किस तरह वह ठीक तरह से अपना पार्ट नही कर पाया लेकिन अभी तो और रत्न आ रहे है। वे भी आकर किसी तरह अपनी-अपनी बात कहेगे।

राजकुमारी : अच्छे पोम्पे! हटकर खडे हो जाओ।

[विदूषक का प्रस्थान]

[होलोफ़र्नीज जूडाज और लड़का हरक्यूलीज बनकर आते है।]

होलोफ़र्नीज : यह छोटा-सा चूहा वह महान् हरक्यूलीज बनने आया है जिसके दण्ड ने उस तीन सिर वाले कुत्ते सर्बेरस को मारा था

---

१. Painted Cloth : ऐलेक्जेंडर का कोट रंगीन था जिस पर एक शेर की तस्वीर थी। वह शेर एक गद्दी पर कुल्हाड़ी लिये हुए बैठा हुआ उसमें चित्रित था।

और जब वह बच्चा था तो हाथ मे लेकर साँपों का गला दबा दिया करता था। चूँकि यह अभी बहुत छोटा-सा लड़का है इसलिए मैं इसके लिए क्षमा-प्रार्थना करता हूँ। लड़के! जब जाओ तो कुछ अपने आपको ठीक रखना। बस अब भाग जाओ।

[लड़के का प्रस्थान]

'मै जूडाज हूँ।'

ड्यूमेन : जूडाज ?

होलोफ़र्नीज़ : इस्केरियट नही श्रीमान्! मै तो जूडाज मैकेबियस कहलाता हूँ।

ड्यूमेन : जूडाज मैकेबियस कहलाने वाला बिलकुल जूडाज ही है।

बैरोने : एक प्यार करने वाला विश्वासघाती। तुम जूडाज कैसे सिद्ध हो गए।

होलोफ़र्नीज़ : मै जूडाज हूँ।

ड्यूमेन : और भी अधिक धिक्कार है तुम्हे जूडाज।

होलोफ़र्नीज़ : क्या तात्पर्य है आपका श्रीमान्।

बौयेट . यही कि जूडाज स्वयं को फाँसी लगा ले।

होलोफ़र्नीज़ : शुरू करिए श्रीमान्! आप मुझसे बड़े होने के नाते इस काम को अधिक जानते है।

बैरोने : बहुत ठीक। जूडाज भी एक अपने से बड़े के ऊपर फाँसी पर लटकाया गया था।

होलोफ़र्नीज़ . मेरी शक्ल इन बातो से नही उतर सकती।

बैरोने : क्योकि तुम्हारी शक्ल है ही नही।

होलोफ़र्नीज़ · यह क्या है ?

बौयेट . यह तो 'सिटर्न' बाजे का सिर है।

ड्यूमेन : एक बड़ी सुई का सिर है।

बैरोने : एक फन्दे में मुर्दे की खोपड़ी है।
लोंगेविले : एक उस पुराने रोमन सिक्के का चेहरा, जो मुश्किल से कहीं मिलता है।
बोयेट : सीजर की तलवार का मोटा गोल सा सिरा।
ड्यूमेन : एक बोतल पर खुदा हुआ एक चेहरा।
बैरोने : एक पिन में लगा हुआ एस० जार्ज का आधा...
ड्यूमेन : हाँ, और वह भी सीसे की पिन में।
बैरोने : वह पिन जो एक दांत खींचने वाले की टोपी है। अब बोलो आगे, हमने तुम्हें यह शक्ल दी है।
होलोफ़र्नीज़ : तुमने तो मेरी शक्ल को उलटे नीचे गिरा दिया
बैरोने : झूठ बोलते हो, हमने तुम्हें कई शक्लें दी हैं।
होलोफ़र्नीज़ : लेकिन उन सभी को तुमने नीचे झुका दिया है।
बैरोने : अगर तुम शेर होते तो हम ऐसा करते।
बोयेट : लेकिन चूंकि यह एक गधा (Ass) ही है इसलिए इसको दो। अच्छा विदा, प्रिय जूड ! अब तुम क्यों ठहरे हुए हो
ड्यूमेन : अपने नाम के आखिरी शब्दों के कारण।
बैरोने : जूड के साथ आस' (गधा) लगाकर उसे दे दो। भाग जाओ यहाँ से।
होलोफ़र्नीज़ : यह सौजन्य और सहृदयता का व्यवहार नहीं है।
बोयेट : जूडाज के लिए रोशनी लाओ। अन्धेरा है, कहीं ठोकर नहीं पड़े।

[होलोफ़र्नीज़ का प्रस्थान]

राजकुमारी : हाय बेचारा मैकेबियस, किस तरह से परेशान किया

[कास्तेर्डो हैक्टर बनकर आता है।]

बैरोने : एकिलीज ! अपना सिर छिपा लो। हैक्टर आता

से सुसज्जित होकर आ रहा है।

ड्यूमेन : यद्यपि मेरे मजाक मेरी ओर ही लौटकर आते है लेकिन अब मै प्रसन्न रहूँगा।

सम्राट् . हैक्टर तो सिर्फ एक ट्रॉय-निवासी था इस सम्बन्ध मे।

बौयेट लेकिन क्या यह हैक्टर है ?

सम्राट् : मेरे खयाल से हैक्टर तो ऐसे साफ डीलडौल का नही था।

लौंगेविले : हैक्टर के लिए इसका पैर तो बहुत ही बड़ा है।

ड्यूमेन : अधिक तो निश्चित रूप से एक बछडा ही लगता है।

बौयेट नही, छोटे पैमाने पर सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे हैं इसने।

बैरोने . यह हैक्टर नही हो सकता।

ड्यूमेन यह या तो परमात्मा है या कोई चित्रकार है क्योकि यह तो शक्ले बनाता है।

आर्मेडो : शक्तिशाली युद्ध-देवता ने, जो शस्त्रो का स्वामी है, हैक्टर को एक उपहार दिया था।

ड्यूमेन : मुलम्मा चढे हुए धातु का जायफल।

बैरोने . नीबू।

लौंगेविले : फूल की अर्ध-विकसित कली के साथ लगा हुआ।

ड्यूमेन . कटी[१] हुई नही।

आर्मेडो : शक्तिशाली युद्ध-देवता ने, जो शस्त्रो का स्वामी है, इलियन के उत्तराधिकारी हैक्टर को एक उपहार दिया था। ऐसा बहादुर था वह हैक्टर कि अपने खेमे से निकलकर सुबह से रात तक बराबर युद्ध किया करता था। मै वही हैक्टर हूँ।

---

१. Clove, Cloven · इन शब्दों पर 'पन' का प्रयोग हुआ है। लौंगेविले कली (Clove) के विषय में कहता है परन्तु ड्यूमेन Cloven शब्द के द्वारा कटी हुई की बात कहता है। हमने कली और कटी का तार जोड़ा है।

ड्यूमेन : वह टकसाल ।

लौंगेविले : वह आवारा औरत ।

आर्मेडो लॉर्ड लौगेविले । अपनी जबान को लगाम लगाकर रखिए ।

लौंगेविले : इसके बजाय तो मुझे लगाम ढीली छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि यह जबान तो हैक्टर की तरफ ही भाग रही है ।

ड्यूमेन और हैक्टर एक कुत्ता है ।

आर्मेडो : वह अच्छा योद्धा मरकर पूरी तरह सड़ चुका है । अब मरे की हड्डी तो मत पीटो प्रिय मूर्खो ! लेकिन मैं तो अपना काम करूँ ।

जब वह जीवित था तो वह एक आदमी था । श्रीमती ! कृपा करके मेरी बात सुनिए ।

राजकुमारी : बोलो वीर हैक्टर ! हमे इससे बडी प्रसन्नता प्राप्त हुई है ।

आर्मेडो · मैं श्रीमती के स्लिपर की हृदय मे पूजा करता हूँ ।

बौयेट : अरे, यह तो उनके पैर की पूजा करके उनसे प्रेम करता है ।

ड्यूमेन कही अपने गज से नही प्रेम करने लगे यह ।

आर्मेडो : इस हैक्टर ने हैनीबाल को पराजित किया था । अरे, सभी चले गये ।

विदूषक दोस्त हैक्टर ! वह तो चली गई । दो महीने हो गये उसको रास्ते मे ।

आर्मेडो · क्या मतलब ?

विदूषक · जब तक तुम एक सच्चे ट्रॉय-निवासी नही हो तो विश्वास करो, वह बेचारी स्त्री यहाँ से चली गई है । गर्भवती है वह । उसके पेट मे बच्चा है । वह तुम्हारा ही है ।

आर्मेडो : क्या तुम इन उच्च घराने के लोगो के सामने मुझे बदनाम

करना चाहते हो। तुम इस धरती पर नहीं रहोगे।

विदूषक : तो फिर जैक्वेनिटा के लिए जिसको हैक्टर ने गर्भवती बना दिया है, हैक्टर की पिटाई होगी और उस पोम्पे के लिए जिसको उसने मार डाला है, उसको फाँसी पर लटका दिया जायगा।

ड्यूमेन : अद्वितोप पोम्पे।

बौयेट : प्रसिद्ध पोम्पे।

बैरोने : महान् से भी महान्, महान्, महान्, महान् पौम्पे, विराट् पोम्पे।

ड्यूमेन : हैक्टर काँप रहा है।

बैरोने : पोम्पे के दिल पर असर हो गया है। छल और धूर्तता की देवियो! और उनको उत्तेजित करो। और उकसाओ उन्हें।

ड्यूमेन · हैक्टर उसको चुनौती देगा।

बैरोने : अगर उसके शरीर मे एक पिस्सू के पेट भरने के अलावा और अधिक आदमी का खून न हो तो—

आर्मेडो : उत्तरी ध्रुव की और हाथ करके कहता हूँ मैं तुम्हे चुनौती देता हूँ।

विदूषक : मैं एक उत्तरी आदमी की तरह एक धुर[1] लेकर नही लड़ूंगा। मैं तो तलवार से टुकड़े-टुकडे कर डालूँगा। मै प्रार्थना करता हूँ आपसे, मुझे अपने हथियार ले लेने दीजिए।

ड्यूमेन : आवेश से भरे इन रत्नों को जगह दे दो।

---

१. North pole : इस शब्द पर चातुर्य दिखाया गया है। आर्मेडो उत्तरी ध्रुव (North pole) कहता है लेकिन विदूषक उस शब्द को दो टुकड़ों में बांट-कर आर्मेडो का मजाक बना देता है। ध्रुव के लिए आगे के संवाद में हमने धुर शब्द का प्रयोग कर दिया है। धुर वह लकड़ी या लोहे का डंडा होती है, जिस पर गाड़ी के पहिये घूमते हैं। डंडे के अर्थ में ही हमने धुर का प्रयोग किया है।

विदूषक : अपनी कमीज मे दूंगा मै तो जगह।
ड्यूमेन . पूर्ण दृढता रखने वाले पोम्पे।
लड़का स्वामी। आइए, मै आपके नीचे का बटन खोल देता हूँ। क्या आप नही देखते कि पोम्पे लड़ते वक्त अपनी कमीज उतार रहा है। क्या मतलब है आपका ? आप अपनी ख्याति खो वैठेगे।
आर्मेडो : सैनिको और अन्य सज्जनो ! मुझे क्षमा करिए। मै अपनी कमीज पहने हुए नही लडूंगा।
ड्यूमेन . तुम इससे पीछे नही हट सकते क्योकि पोम्पे ने चुनौती दे रखी है।
आर्मेडो . श्रीमान् ! मै पीछे हट भी सकता हूँ और हटूंगा भी, दोनो ही बाते है।
बैरोने . क्या कारण है इसका ?
आर्मेडो . इसका सबसे बडा कारण तो यह है कि मेरे पास कोई कमीज नही है। मै तो मन मे प्रायश्चित करता हुआ अपने शरीर को ऊन से ढकता हूँ।
बौयेट ठीक है, रोम मे लिनन की कमी के कारण उसको यही आज्ञा मिली थी। तब से मै सच कहता हूँ यह जैक्वेनिटा के उस तश्तरी ढकने के कपड़े को छोडकर कुछ भी नही पहनता था। इसके आगे प्रेम की भीख मांगने के लिए उसका दिल है।

[एक सन्देशवाहक जिसका नाम मार्केडे है, आता है]

मार्केडे . भगवान् आपकी रक्षा करे श्रीमती !
राजकुमारी : स्वागत है मार्केडे ! लेकिन तुमने तो आकर हमारे मनोरजन मे बाधा पहुँचा दी।
मार्केडे मुझे इसका दु ख है श्रीमती! लेकिन जो समाचार मै लाया हूँ वह इतना बोझिल है कि जबान उसको अधिक देर तक नही

थामे रख सकती। आपके पिता सम्राट्—

राजकुमारी · क्या स्वर्गवास हो गया उनका ?

मार्कंडे : बस यही बात है !

बैरोने : अभिनेताओ ! बस समाप्त करो। अब इस दृश्य के सामने अन्धकार छाता हुआ दिखाई दे रहा है।

आर्मेडो : जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मुझे कोई चिन्ता नही है क्योंकि मैने अपनी थोडी सी दूर की समझ से आपत्ति और अन्याय के दिन को देख लिया है और मै एक सैनिक की तरह अपने आपको ठीक करूँगा।

[सभी रत्न चले जाते है।]

सम्राट् श्रीमती कैसी है ?

राजकुमारी . बौयेट ! पूरी तैयारी कर लीजिए। आज रात को ही मै यहाँ से जाना चाहती हूँ।

सम्राट् नही श्रीमती ! ऐसा मत करिए। मेरी प्रार्थना मानकर ठहर जाइए।

राजकुमारी . मै कहती हूँ तैयारी कर लीजिए। सहृदय सरदारो ! आपकी प्रार्थना और सुन्दर कार्यों के लिए मै आपको धन्यवाद देती हूँ। अगर आपकी इस बुद्धिमता के कारण, जिससे आपने हमारे प्रति अपनी उपेक्षा को छिपाने का प्रयत्न किया था, हमारे हृदय को दुःख पहुँचा है और इसी कारण बातचीत मे अगर हमने किसी प्रकार की कठोरता दिखाई है तो इसके लिए दोषी आप ही है। बस विदा। श्रेष्ठ सरदार ! दुःखी हृदय किसी प्रकार की चपल और आनन्द प्रकट करने वाली वाणी को सहन नही कर सकता। मेरी बात का जितनी आसानी से निर्णय हो

गया है उसके लिए धन्यवाद देने को मेरे पास शब्द नही है। क्षमा करिए।

सम्राट् : अत्यावश्यकता के समय प्रत्येक कार्य अति वेग से करना चाहिए और वह लम्बे अरसे के लिए कभी नही छोडा जाना चाहिए। इसलिए यद्यपि शोक के समय प्रेम की मधुर मुस्कान वर्जित है और धार्मिक न्याय भी इसी का ही पक्ष लेगा लेकिन फिर भी चूँकि पहले प्रेम-व्यापार प्रारम्भ हुआ था इसलिए अच्छा हो कि शोक के काले बादल आकर इसपर न मँडराये और इसको अपने उद्देश्य से विचलित न करे। जो साथी इस ससार से छूट गये है उनके लिए शोक करने से कही अधिक लाभदायक नये साथियो के मिलने पर आनन्द मनाना है।

राजकुमारी . मै आपकी बात नही समझती। मेरा दु ख तो दूना है।

बैरोने . अपने दुःख को हटाकर सम्राट् की बात समझने की चेष्टा करिए। आप सबके लिए तो हमने यहाँ इतना समय गँवाया है और अपनी प्रतिज्ञा भी तोड़ दी है। सुन्दरियो ! आपके सौन्दर्य ने हमको अपने उद्देश्य से विपरीत दिशा मे हटाकर पतित किया है और इसी कारण हमारी स्थिति बडी उपहासास्पद हो गई है, प्रेम एक बडी ही बेतुकी बातो का मिला-जुला गीत है। एक बच्चे की तरह यह व्यर्थ इधर-उधर मूर्खतावश उछलता-कूदता है। आँख से ही यह पैदा होता है इसलिए आँख जैसा ही होता है। जैसे विभिन्न वस्तुओ के ऊपर आँख घूम जाती है उसी प्रकार यह प्रेम भी अनेक तरह की अजीब बातों, शक्लो और आदतों से भरा होता है। तो फिर यदि आपकी उन दिव्य सुन्दर ज्योति से पूर्ण आँखो से जो प्रेम हमारे हृदय मे पैदा हुआ उसके वश मे होकर हमने अपनी प्रतिज्ञा भग कर दी तो फिर इसके

लिए उत्तरदायी तो वे ही आँखे है जो अब इसे एक दोष के रूप मे देखती है। इसलिए सुन्दरियो! हमारा प्रेम आपके प्रति है इसलिए जो भूल या अपराध प्रेम ने किया है, वह भी आपका ही है। हमने तो एक बार ही अपने प्रति विश्वासघात किया है, लेकिन किया है यह सदा उनका विश्वास जीतने के लिए, जो हमे ये दोनों बनाती है। आपके सिवाय सुन्दरियो! वे और कोई नही है इसलिए यद्यपि विश्वासघात स्वय एक पाप है लेकिन इस परिस्थिति में वह भी पवित्र हो गया है।

राजकुमारी : हमको आपके प्रेम से भरे हुए पत्र मिल गये है; वे पत्र जो आपके प्रेम का सदेश लेकर आये है। हमने उनको बैठकर पढा था तो सच, प्रेम और विवाह की बात तो बड़ा अच्छा मज़ाक रहा और जो विनम्रता उसमें दिखाई गई है, वह तो बड़ी ही आनन्ददायक बात है, लेकिन जितना भी सम्बन्ध हमने आपसे रखा है वह इससे अधिक कभी नही बढा इसीलिए हमने आपके इस प्रेम और इन प्रेम-पत्रों को एक अच्छे खासे मजाक के रूप मे ही लिया है।

ड्यूमेन श्रीमती! हमारे पत्रो मे तो मज़ाक से कही अधिक गम्भीरता थी।

लौंगेविले . इसी तरह हमारी दृष्टि मे गम्भीरता थी।

रोज़ालिन : हमने तो ऐसा नही देखा।

सम्राट् : अब आखिरी क्षण मे ही हमे अपने प्रेम का वरदान दीजिए।

राजकुमारी : इतना बड़ा सौदा करने के लिए जिसका कोई छोर ही न हो, यह समय तो बहुत कम रहेगा। नही, नही श्रीमान्! आपने प्रेम के कारण अपनी प्रतिज्ञा को भग करके अपराध किया है, इसलिए अगर आप कुछ करना ही चाहते है तो जो मै

कहती हूँ वह करिए---अगर आप मेरे प्रेम के लिए (जबकि ऐसी कोई बात नही है) कुछ काम करना चाहते हैं तो वेग के साथ किसी निर्जन और शूल कुटी की ओर जाइए और वहाँ ससार के सभी सुख-विलास से दूर रहिए। वही एक वर्ष तक रहिए। अगर इस तरह के कठोर और सयमपूर्ण जीवन-काल में भी आपके हृदय का प्रेम किसी प्रकार कम नही होता है, अगर उपवास, सर्दी, पाला, पतले कपडे और कठोर शय्या का उत्पीडन किसी प्रकार आपके प्रेम के उत्साह को ठंडा नही करता है तो फिर इस कठिन परीक्षा मे सफल होकर एक वर्ष के पश्चात् मेरे पास आना और इस कठोर जीवन की साक्षी देकर मुझे चुनौती देना, मे सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि फिर मै आपकी हो जाऊँगी। तब तक मुझे पिता की मृत्यु पर अपने आँसू बहा लेने दीजिए अगर इसको आप स्वीकार नही करते है तो फिर सदा के लिए हम एक-दूसरे को अपने-अपने हृदय से निकाल दे और विदा माँग ले।

सम्राट् अगर इसको या इससे भी बडी बात को मै अपने अहकार मे भरकर अस्वीकार करूँ तो मृत्यु आकर मुझे डस जाय।

बैरोने · मेरी प्रिया ! मेरे लिए क्या आज्ञा है ?

रोजालिन : अवश्य, आपका भी परिष्कार होना चाहिए। आप भी प्रतिज्ञा भग करने के अपराधी है, इसलिए अगर आप मेरा प्रेम प्राप्त करना चाहते है तो एक वर्ष तक आप बिना विश्राम किये रोगी मनुष्यो की सेवा करेगे।

ड्यूमेन मेरी प्रिया ! मेरे लिए क्या आज्ञा है ?

कैथराइन : आप भी पत्नी चाहते है ? तो फिर आपके लिए तो मेरी यही शुभकामना है कि भगवान् आपके चहरे पर दाढी उगा दे

और आपको स्वस्थ और ईमानदार बना दे। तिगुने प्यार के साथ, मै इन तीन चीजो के लिए शुभकामना करती हूँ।

ड्यूमेन : ओ, क्या मै यह कहूँ कि मेरी प्रिया पत्नी, मै आपको धन्यवाद देता हूँ ?

कैथराइन ' अभी नही श्रीमान् ! बारह महीने और एक दिन तक तो मै कोई प्रेमियो की-सी बात सुनूंगी ही नही। जब सम्राट् राजकुमारी के पास आये तभी आप आ जाना। तब अगर मेरे पास अधिक प्रेम हुआ तो उसमे से कुछ मै आपको दे दूंगी।

ड्यूमेन : तब तक मै पूरी सचाई और विश्वास के साथ आपकी सेवा करूँगा।

कैथराइन लेकिन इसके लिए शपथ मत लीजिए, जिससे कि आपको फिर शपथ तोडने के अपराध मे अपराधी न बनना पड़े।

लौंगेविले : मेरिया क्या कहती है ?

मेरिया : बारह महीने के बाद मे एक सच्चे साथी के लिए अपने काले गाउन को बदलूंगी।

लौंगेविले : मै धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करूँगा, लेकिन समय बहुत लम्बा रखा।

मेरिया ' आपके ही बराबर है। कुछ ही इससे अधिक लम्बाई वाले लोग इतने कम उम्र के होते है।

बैरोने : क्या मेरी प्रिया कुछ पढ रही है ? मेरी ओर देखिए। मेरे हृदय के द्वारस्वरूप इन आँखो की ओर देखिए कि किस तरह विनीत होकर कोई आपके कुछ शब्दो के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। मुझे भी कोई सेवा बताइए मेरी प्राणप्रिया !

रोजालिन : लॉर्ड बैरोने ! आपको देखने से पहले प्राय मै आपके बारे मे सुना करती थी और आपके बारे मे सभी लोग यही कहते थे कि आप बड़े ही खुशदिल और मजाकिया आदमी है और बड़े-

बडे तीखे मजाक करते है। सुना था कि अपना सारा बुद्धि-कौशल आप उसमे दिखा देते है, लेकिन अगर आप मुझे प्राप्त करना चाहते है तो अपने अच्छे दिमाग से इस बीमारी को हटाना पड़ेगा। इसके बिना आप मेरा प्रेम नही प्राप्त कर पायेगे। इसलिए इन बारह महीने के भीतर दिन-प्रतिदिन आप उन रोगियो के पास जायँगे जो बिलकुल मूक है, लेकिन फिर भी उन दुःख से व्याकुल प्राणियो से आप बाते करेगे और अपने बुद्धि-कौशल से उन दुखी और निराश प्राणियो को मुस्कराने के लिए प्रेरित करेगे, यही आपका काम होगा।

बैरोने : क्या मृत्यु की छाया मे लेटे प्राणियो को हँसने के लिए प्रेरित करूँ ? यह नही हो सकता, यह तो असम्भव है। दुखी प्राणी को किसी तरह से भी सुख की ओर प्रेरित नही किया जा सकता, चाहे कितना भी हास-विनोद उसके सामने किया जाय।

रोजालिन : एक बढ-बढकर बाते बनाने वाले उस मजाकिया आदमी का गला घोटने का यही तो एक रास्ता है जिसकी धाक कुछ थोथा मज़ाक पसन्द करनेवाले बेवकूफो के बीच जम जाती है। मजाक की अच्छाई तो वह आदमी परख सकता है जो उसे सुनता है न कि उसको कहने वाला, इसलिए अगर अपने-अपने दुख मे व्याकुल और कराहते हुए वे प्राणी आपके इन मजाको को सुन ले तो फिर अपनी इस आदत को जारी रखना। मै इस दोष के साथ ही आपको अपना प्रेम समर्पित कर दूंगी। लेकिन अगर वे दुखी रोगी इन मज़ाको को पसन्द न करे तो अपनी इस आदत को छोड देना और तब मुझे बडी प्रसन्नता होगी कि आपने एक बहुत बडे दोष को अपने से अलग करके अपने आपको सुधार लिया और तब मै आपकी होऊँगी।

बैरोने : बारह महीने ? ठीक है। हो जो भी होना है, मै एक अस्पताल मे रहकर बारह महीने तक मजाक करूँगा।

राजकुमारी . अच्छा मेरे प्रिय श्रीमन्त ! अब मै आपसे विदा लेती हूँ।

सम्राट् : नही श्रीमती ! हम आपको आपके रास्ते पर ले चलेंगे।

बैरोने : हमारा प्रेम एक पुराने नाटक की तरह समाप्त नही होता है। जैक को अभी जिल नही मिली ?। अगर ये सुन्दरियाँ कृपा कर देती तो हमारा यह प्रेम-व्यापार एक सुखान्त नाटक के रूप मे समाप्त हो जाता।

सम्राट् : आइए श्रीमान्, इसमे अभी बारह महीने और एक दिन की देर है और तब यह इसी तरह समाप्त हो जायगा।

बैरोने : एक नाटक के लिए यह तो बड़ा लम्बा अरसा है।

[**आर्मेडो का प्रवेश**]

आर्मेडो : श्रीमती मेरी बात सुनिए।

राजकुमारी : क्या यही हैक्टर नही था ?

ड्यूमेन : ट्रॉय का वीर योद्धा।

आर्मेडो : मै आपका हाथ चूमकर यहाँ से चला जाऊँगा। मैने तो जैक्वेनिटा के प्रेम के लिए तीन साल तक हल जोतने की शपथ ले ली है लेकिन परम सम्माननीय श्रीमती ! क्या उल्लू और कोयल के बीच जो संवाद दो विद्वानों ने बनाया है आप उसको सुनेंगी ? हमारे नाटक के अन्त मे आना चाहिए था यह।

सम्राट् : हाँ, हाँ, बुला लाओ उनको शीघ्र। हम अवश्य सुनेंगे उसे।

आर्मेडो : अरे, आ जाओ।

[**सभी का प्रवेश**]

इस तरफ तो हीम्स, शीत है। इस तरफ वेर वसत है। एक तो उल्लू का संवाद पढ़ेगा और दूसरा कोयल का।

हां, वेर ! शुरू करो।

[गीत]

वसंत

जब बेंगनी फूल खिलते है,
पीली कलियां भूला करती,
रजतवर्ण के शुभ्र कुसुम की
भीड हरे रंगो पर हिलती,
तब कोकिल तरु-तरु पर उडता
अपने मीठे स्वर से गाता
छिपकर प्रेमी से मिलती स्त्री
के पति पर रह-रह मुस्काता,
उसको मीठे राग किसी के कानो मे रह-रह चुभते है,
यह वसंत की ऋतु है, इसमे वेग वासना के हँसते है।

चरवाहे अपनी वंशी पर
स्वप्निल राग गुंजा देते है,
भोर विहग के कलरव से ही
वे किसान प्रात: जगते है,
पक्षी उडते, गिद्ध हुमकते,
काक देखते है चंचल बन
कुमारियाँ रँगती अपने पट
बडे चाव से हो पुलकित मन,
तब कोकिल तरु तरु पर उडता अपने मीठे स्वर से गाता
छिपकर प्रेमी से मिलती स्त्री के पति पर रह-रह मुस्काता
उसके मीठे राग किसी के कानो मे रह-रह चुभते है
यह वसंत की ऋतु है, इसमे वेग वासना के हँसते है।

शीत

जब भीतों पर तुहिन-कणों की सघन छाय शोभित होती है,
जब चरवाहा कुटी सँवारा करता है अपनी हो आतुर,
जब ईंधन की आवश्यकता बोझा कंधे पर ढोती है,
और दूध जम-जम जाता है जैसे बारम्बार सिहर कर,
जब जम जाता रुधिर, पंथ है बीहड़ होता,
तब उल्लू गाता है निशि मे कर्कश होता—
गीत हर्ष का, और स्नान से हीन नवेली
बर्त्तन को ठडा करती है बैठ अकेली।
जब कि पवन चलता गुजित है कोलाहल करता दिगत में
और पादरी का श्रम खाँसी मे डूबा करता है झुकता,
हिम पर बैठ विहग करते है चिंतन यो विश्रात मनस मे
नाक लाल सी हो जाती है सारा लहू वही पर जमता
जब कि केकड़े पकते हैं हिस-हिस स्वर होता
तब उल्लू गाता है निशि मे कर्कश होता—
गीत हर्ष का, और स्नान से हीन नवेली,
बर्त्तन को ठडा करती है बैठ अकेली।[1]

आर्मेडो . संगीत और काव्य देवता के गीतों के बाद बुध के शब्द तो कर्कश लगते है। अब आप उधर जाइए और हम इधर जाते है।

[सभी का प्रस्थान]

---

१. इस गीत को मेरा भावार्थ लेकर प्रस्तुत किया गया है।—अनुवादक।